ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म

१४ सितम्बर सन् १९४२, में उत्तर-प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में एक विशेष बालक का जन्म हुआ। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था। और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, श्वासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो उसकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन का प्रसारण होता। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में आता तो कुछ अन्तराल बाद इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीरधारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि पूज्य महानन्द के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण वहां सत्संग में दिये जाने वाला दिव्य प्रवचन इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन-मानस को भी सुनाई देते हैं। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, जो किसी भी मनुष्य को, समाज और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते हैं।
-शृङ्गी ऋषि वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१ साधना का उग्र रूप २१ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चल जा रहे थे यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है, वे परमपिता परमात्मा सर्वत्र है। मानो वह एक-एक परमाणु में निहित रहने वाला है, वह परमाणुवाद में मानो देखो, व्याप्त रहता है, इसी प्रकार यह सर्वत्र जगत एक अनुपम उस परमपिता परमात्मा की महती में पिरोया हुआ है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा एक सूत्र है, और एक महानता की ज्योति में रत्त होने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके गुणों का वर्णन करते रहते हैं, क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसकी महानता का प्रायः वह वर्णन करता रहता है।

वेद मन्त्र की प्रेरणा

तो आज का वेदमन्त्र कुछ हमें प्रेरणा दे रहा था, और हमें यह प्रेरित कर रहा है, कि मानव अपने में मानवीयता में सदैव रत्त रहे क्योंकि जितना भी प्राणी मात्र है, उस प्राणी मात्र की जो प्रतिभा में एक दूसरे को पिरोई हुई रहती है। क्योंकि वास्तव में एक परमाणु एक दूसरे में पिरोया हुआ सा हमें दृष्टिपात आता है, जिस प्रकार माता के गर्भस्थल में एक शिशु होता है, और वह शिशु मानो उस मम ब्रह्वे व्रतं ब्रह्मा वह प्राणों से पिरोया हुआ है, और वह प्राण मानो देखो, वायु में पिरोया हुआ है और वायु अपने में गतिवान बन रही है और वह गतिवान बन करके ही वह अपने में पिरोई हुई सी दृष्टिपात आती है, यह मेरे प्यारे प्रभु का कैसा अनन्तमयी ब्रह्माण्ड हैं, यह अनन्तमयी कैसी अनुपम ज्योति है। जो एक दूसरे में पिरोई हुई है, जिस प्रकार यज्ञशाला में एक दूसरा एक दूसरे में पिरोया हुआ है, जैसे यज्ञमान और यज्ञमान में होता पिरोएं रहते हैं, और वह होतागण है, वह साकल्य में पिरोएं रहते हैं, और वह साकल्य मानो देखो, एक आभा में पिरोए हुए हैं, जिस हम औषध विज्ञान कहते हैं, और वही औषध विज्ञान मानो देखो, उस महान सूर्य आनन्दमयी ज्योति में पिरोएं हुए हैं, और वह जो औषध विज्ञान ब्रह्मणं ब्रहे वह एक आभा में मानो देखो, पृथ्वी और अन्तरिक्ष में पिरोएं हुए होने से मानो वह तेजोमयी अग्नि में पिरोएं हुए रहते हैं। यह कैसा अनुपम बेटा! एक जगत है एक मानो ब्रह्माण्ड हैं, उस ब्रह्माण्ड में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभा से ये प्राणी मात्र पिरोया हुआ है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना में न ले जाता हुआ, केवल यह क्या, यह मानव देखो, एक दूसरे मे ऐसे पिरोया हुआ है, जैसे कृतं ब्रह्मा परमाणं ब्रह्मे वृताः वह परमाणुवाद है और वह परमाणुवाद मानो देखो, साकल्य में वृत रहता है जिससे मानव अपने में मानो अपनेपन का ही भान करता रहता है। तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, विशेष चर्चा न देता हुआ विचार केवल यह है क्या यह ब्रह्माण्ड एक दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। इसीलिए हे मानव! तू अपने में एक दूसरे में पिरोया हुआ है परमात्मा की सृष्टि में एक दूसरी आभा में निहित रहने वाला है, इसीलिए एक दूसरे में अभ्योदय होता हुआ, मानो उस वेद की प्रतिभा, में निहित हो जाता है।

आओ, मेरे पुत्रों! देखो, आज मैं विशेषता न देता हुआ, वेद का मन्त्र कह रहा है, वेद का मन्त्र कुछ हमें प्रेरणा दे रहा है, और वेद का मन्त्र कहता है, ब्रह्मणं ब्रहे वृतं देवाः आपो ब्रण मानो देखो, आपोमयी ज्योति में यह

ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार क्या कि वेद का मन्त्र कहता है, क्या हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते चले जाएं, वेद का आश्रय तो हमें बहत ऊर्ध्वा में अपनी उड़ाने उड़ रहा है, अपनी उड़ाने उड़ता हुआ मानो सब अपने में मानवीयता की प्रतिभा में सदैव निहित रहता है। प्रतिभा में एक दूसरे में कृत और नृत्त होने वाला यह जगत मानवीय दर्शन का एक भान कर रहा है, तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में पुनः से ले जाना चाहता हूँ। जहाँ हमारा एक विषय चलता है, वहाँ एक मानो देखो, वेद का मन्त्र मानव दर्शन की चर्चा कर रहा है, एक दूसरे में पिरोएं होने से मानव ब्रह्माण्ड की आभा का दर्शन हो रहा है। परन्तु देखो, जहाँ यह वाक् आता रहता है, वहाँ मैं बेटा! देखो, राष्ट्रीयवाद और राष्ट्रीयता की भी चर्चाएं हो रही थीं।

आज का वेदमन्त्र हमें यह कहता है, क्या राष्ट्रवाद किसे कहते हैं, हमारे यहाँ राष्ट्र की बड़ी विचित्र विवेचना होती रही है हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! एक की प्रतिभा में एक मानव अपने में कटिबद्ध रहता है, वास्तव में जब यह विचार किया जाता है, क्या मानव अपने में अपनेपन का भान करता हुआ मानो एक दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आने वाला जगत, मेरे पुत्रों! देखो, एक मानो मानवीय दर्शनों से गुथा रहता है इसीलिए मानवता की आवश्यकता रहती है। मानवतव किसे कहते हैं? राष्ट्रवाद किसे कहते हैं? यह चर्चाएं आती रहती हैं। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र इस आभा में निहित हो रहा है, और इससे विवेचना दे रहा है, वेद का मन्त्र कहता है, कि राष्ट्रवाद कहते है। अनुशासन को मानो देखो, अनुशासन का नाम ही राष्ट्रवाद माना गया है। परन्तु जब यह अनुशासन विहिनता में परिणत होता है, तो राष्ट्रीय प्रणाली राष्ट्रीय पद्धति मुनिवरों! देखो, समाप्त हो जाती है, राष्ट्रीय पद्धति का अभिप्रायः केवल यह क्या एक दूसरे में विराजमान हो करके समय-समय पर अपना विचार-विनिमय करते रहें। हमारे यहाँ बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार के याग होते रहे हैं, मुझे बहुत-सा काल प्रायः स्मरण आता रहता है। समय-समय पर मानो देखो, याग होना ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन होना ब्रह्मवेत्ताओं की और देखो, चर्चा हो करके राष्ट्रवाद को ऊँचा बनाना यह प्रायः हमारे यहाँ एक नृत्त होता रहा है। यह परम्परागतों का एक वाक् रहता है, जहाँ मानव अपने में शान्ति और आनन्द का अनुभव करता रहता है। मेरे पुत्रों! जब तक मानव अपने कर्तव्यवाद की वेदी पर नही आ जाता तब तक मुनिवरों! देखो, यह संसार ऊँचा नही बना करता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें एक क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ बहुत पुरातन कालों से प्रायः चर्चा होती रही है, मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की चर्चाएं होती रही हैं, महाराजा अश्वपति अपने में बड़े विचित्र मानो देखो, राजा कहलाते थे। मेरे प्यारे! देखो, अयोध्या में राजा हुए हैं। उनमें अश्वपति नाम के राजा भी रहें हैं जो राजा अश्वपति उसे कहते हैं, जैसे अश्व नाम बेटा! देखो, यहाँ राजा को अश्व ही तो कहते हैं। तो अश्वपति को अपनी प्रजा को आनन्द और कर्तव्यवाद में संलग्न कराने वाला हो, उसका नाम अश्वपति नाम का राजा कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, अश्व नाम राजा का है, और मुनिवरों! देखो, अश्वं ब्रह्मणां व्रातं ब्रह्मे और असुतम और मुनिवरों! देखो, प्रजा को मेघ कह करके वह भी उच्चारण करके मानो अपने में उद्घोष करता रहा है। तो मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में तुम्हें ले जाना चाहता हूं आओ मेरे प्यारे! अश्वपति के राष्ट्र में, अश्वपति की उस महान सभा में जहाँ मानवीयता का एक चित्रण होता रहा है, मानवता की एक मानवीय आभा उस मानव के समीप आती रही है।

तो मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति एक स्थली पर विद्यमान हैं, और नाना ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन ब्रह्म ऋषियों का ब्रह्मचारी अपने में मानो देखो, नाना प्रकार की विवेचना करने वाले मेरे प्यारे! देखो, जब यह सभा हुई, उसी सभा में महाराजा अश्वपति महाराज अश्वमेध याग कर रहे हैं, मेध कहते हैं, विचारों कों यहाँ विचारों का देखो, जब याग होता है। तो अपने-अपने विचार ही मानव को पवित्र बना देते हैं, एक दूसरे में विचार अपने में विचार

प्रमाणां ब्रह्म लोकां वही विचार मुनिवरों! देखो, ऊर्ध्वा में ऊर्ध्वा गति करा देते हैं।

आचार संहिता

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल यह कि महाराजा अश्वपति के यहाँ बेटा! देखो, नाना ऋषिवर, अपने में एक विचार-विनिमय दे रहे थे, कि हम अपने राष्ट्र को, या समाज को कैसे लाभान्वित कर सकते हैं, कैसे लाभप्रद कर सकते हैं? तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें भिन्न-भिन्न आचार्यों के विचार प्रारम्भ होने लगे, उन्होंने सबसे प्रथम मुनिवरों! देखो, यहीं कहा था कि आचार संहिता होनी चाहिए। आचार संहिता किसे कहते हैं? जैसे आचार्य अपने विद्यालय में एक आचार संहिता का निर्माण करता है और आचार संहिता का निर्माण करता हुआ, राजा अपने में एक आचार देता है एक अपना एक मनोनीत अपने हृदय की भावना देता है और वह कहता है ब्रह्मचारां ब्रहे हे ब्रह्मचारी! अपने में मानो उत्तम बन करके तुम राष्ट्र को ऊँचा बनाओ और महानता की आभा में ज्योतिवान बना करके ज्योतिमयी मानो देखो, अहिंसा रूपों में रमण करता रहे, प्रत्येक मानव, मेरे पुत्रों! देखो, अपने में अहिंसक बनना चाहता है, और यह भावना रहती है क्या मैं अहिंसक बनूं? अहिंसावादी कौन होते हैं? देखो, हिंसक कौन होता है? मेरे प्यारे! देखो, अहिंसा उसे कहते हैं, जो मानो मन, कर्म और वचन से सदैव ऊर्ध्वा में गमन करने वाला हो और ऊर्ध्वा में गमन करता हुआ मानो अपने जीवन में एक आचार संहिता का निर्माण कर सकता है मेरे प्यारे! देखो, राजा आचार्य से प्रार्थना करता है हे ब्रह्मणां! आप मेरे राष्ट्र की आचार संहिता का निर्माण करो, जिससे मानो मेरे राष्ट्र में प्रजा और प्रत्येक मानव अपने में मानो देखो, आचार में आचारं ब्रह्मे व्रतं दोनों में मानो देखो, पवित्रतव को प्राप्त करता रहे तो मुनिवरों! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ ऋषि-मुनियों का विचार-विनिमय प्रारम्भ होने लगा। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि मुग्दल ऋषि महाराज ने अपना एक विचार व्यक्त करते हुए कहा था, महर्षि मुग्दल ने कहा क्या यदि हम राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाना चाहते हैं राष्ट्र और समाज में एक मानो देखो, हम एकता के सूत्र में लाना चाहते हैं, तो राजा को अपने जीवन चर्या को ऊँचा बनाना होगा। राजा मानो देखो, प्रातःकालीन अपने मानो देखो, परिश्रम करता हुआ, उदगम करता हुआ, और वह मानो देखो, अहिंसा में रमण करता हुआ, अहिंसावादी बन करके अपने में, मानो देखो, प्रातःकालीन अपने में क्रियाओं से निवृत्त हो करके देव याग में और मुनिवरों! देखो, अतिथि इत्यादि यागों में, जो राजा अपने को ले जाता है, मानो देखो, अश्वमेध करने का उस राजा को अधिकार होता है, और वह अश्वमेध याग में जब मानो देखो, तत्पर होता है, तो आचार्य, अश्वमेध याग इसीलिए कराते हैं क्योंकि उसी राजा के राष्ट्र में प्रायः राजा और प्रजा दोनो एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके, अपने उत्थान का कोई विचार कर सकें। और उन विचारों में रत्त हो जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, राजा अपने में महानतम बनता रहता है। महर्षि मुग्दल जी, महाराज ने, अपना व्यक्तव्य देते हुए कहा, क्या राजा के राष्ट्र में मानो देखो, जब राजा स्वतः कृषि उद्गम करता है, और अपना स्वतः अन्न उत्पन्न करता है उस अन्न को ग्रहण करता हुआ जब राष्ट्र का, राष्ट्र को ऊँचा बनाने की घोषणा करता है, तो राजा अपने में कर्तव्यवादी बन जाता है और वह आचार संहिता का निर्माण करने वाला होता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार यह कि महर्षि मुग्दल ऋषि महाराज ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा, उन्होंने कहा है कि ब्रह्म वायु सम्भवं लोकाम् हे राजन! तू अपनी आचार संहिता को ऊँचा बना, आचार संहिता तेरे विद्यालय में, शिक्षालय में, गृह में, और तेरे राष्ट्र में मानो देखो, इसका निर्माणतव होना चाहिए। जब तेरे राष्ट्र में मानो इस प्रकार का निर्माण हो जाता है, वही निर्माणशाला मानो तेरे राष्ट्र को ऊँचा बनाती है। तेरे राष्ट्र में क्रान्ति नही आती। तेरे राष्ट्र में सान्त्वना की स्थापना हो जाती है, विज्ञानवेत्ता अपने में विज्ञानमयी क्रान्तिकारी बन करके और वह मानो देखो, अपने में उग्रता के रूप को धारण करते हैं, राजा के राष्ट्र में यदि कोई उग्रवादी है, या तो राजा है या मानो देखो,

आत्मा प्राण और योग

राष्ट्र में विज्ञानवेत्ता उग्रवादी कहलाते हैं मानो देखो, राजा किसलिए उग्रवादी है राजा इसीलिए उग्रवादी है कि अपनी अन्तरात्मा की भावना को मन्थन करता हुआ, वह राष्ट्र के साथ में मानो उसका समन्वय कर देता है, और जब राष्ट्र का समन्वय कर देता है। तो राजा अपने में महानता की ज्योति को लाने में सफल हो जाता है, और विज्ञानवेत्ता इसीलिए मानो वे उग्रवादी कहलाते हैं, क्योंकि राष्ट्रवेत्ता ही उग्र रूप धारण करके मानो कहीं पृथ्वी के आँगन में गमन करते हैं। विज्ञान में देखो, जब वह रत्त होते हैं, तो अग्नि का भान करते हैं, अग्नि को प्रदीप्त करते हैं, और उस अग्नि में जो महतत्व मानो देखो, जो महत्वदायक रूप जो दृष्टिपात आता है। वही कृतं ब्रह्मा वही मेरे प्यारे! देखो, मानव को ऊर्ध्वा गति में ले जाता है।

कर्तव्य हीनता से पतन

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना या चर्चा देने नही आया हूँ विचार यह उच्चारणं ब्रह्मा क्या मुनिवरों! देखो, वह विज्ञान एक-एक परमाणु से संघर्ष करता है, अणु से, परमाणु से संघर्ष करता हुआ मानो देखो, उसका एक दूसरे में समावेश करता है, और उस समावेश से ही नाना प्रकार के स्थूल रूप में यन्त्र दृष्टिपात आते हैं। अरे, उस मानव के हृदय में कैसे विचारों का उग्र रूप धारण कर गया है, वही उग्र रूप मानो देखो, चन्द्रमा की यात्रा कराता है, अरे, उग्र रूप उसे नही कहते हैं, जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी कहा करते हैं, क्या एक दूसरा मानव रक्त का पिपासी बन रहा है। मानो देखो, मानव एक दूसरे का रक्त का पिपासी कदापि नही बना करता है, वे मानो देखो, उस काल में एक दूसरे का पिपासी बनता है, जबकि वह अपने कर्तव्य से विहिन हो जाता है, और कर्तव्यवाद की वेदी से वह मानो देखो, दूरी चला जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या मानो देखो, वह ब्रह्मणं ब्रह्मे वह उग्रता उसे नही कहते हैं, उग्र रूप तो उसे कहते हैं, जो अपने में महानता का दर्शन करता है, जैसे योगी है, योगी जब प्रभु से मिलन करना चाहता है, साधना करना चाहता है, तो अपने में उग्र बन जाता है और उग्रता को धारण करता हुआ मानो देखो, मानव अपने मन और प्राण को मनन करता है कि एक सूत्र में ला करके मानो देखो, वह उग्रता को अपने में धारण करने लगता है। परन्तु देखो, यहाँ एक दूसरा मानव रक्त का पिपासी क्या समन्वय आता है, अथवा विचार आता है, तो मुनिवरों! विचारां ब्रह्मे वायु सम्भव लोकां वाचन्नमं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आता रहता है, यह विचार हमें बारम्बार हमें बाध्य करता रहता है, क्या हम मुनिवरों! अपने में उग्रवादी बन करके परमात्मा से अपना मिलन करते चले जाएं। जब मुनिवरों! देखो, योगारूढ़ हो करके योगेश्वर मुनिवरों! देखो, अपने प्रभु से मिलन करना चाहता है, जैसे परमपिता परमात्मा उग्र रूप ही मुनिवरों! देखो, सृष्टि की रचना है, सृष्टि की प्रतिभा है, वही तो मुनिवरों! देखो, उग्रता कहलाती है। परमात्मा का तो एक तपं ब्रह्मा उसे दूसरे रूप में तप कहते हैं, और तपं ब्रह्मं ब्रहे व्रतं मेरे पुत्रों! देखो, वही तप मानो को मानव को परमात्मा से मिलान कराता है, तो मुनिवरों! देखो, ऐसे ही जैसे विज्ञानवेत्ता विचार-विनिमय करता हुआ देखो, मस्तिष्क देखो, लघु मस्तिष्क रेणा केतु मस्तिष्क का अध्ययन करता है, और अध्ययन करता हुआ मस्तिष्कों के दूसरे को अपने में क्रियात्मक बनाता है। जैसे मानो देखो, मन, बुद्धि और चित्त और अहंकार चित्त के मण्डल में जा करके जब समोवश हो जाता है, तो सर्वत्र संस्कारों का समावेश होने का नाम ही मुनिवरों! देखो, उग्रता कहलाती हैं, उसी को तप कहते हैं, उसी को व्रीत वृत्ति कहते हैं, तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना वर्णन किया, ऋषि ने अपनी आभा में रत्त होते हुए, और वह देखो, उपलब्ध ब्रहे अपने विचार देते हुए राजा से कहा हे राजन! तेरे राष्ट्र में देखो, एक योगियों का समाज होना चाहिए। साधकों का समाज होना चाहिए, और तेरे राष्ट्र में मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारवेत्ता हों जिससे मानो देखो, वह योगारूढ़ कराते हुए और तेरे राष्ट्र को ऊँचा बनाते चले जाएं। तेरे राष्ट्र में एक ऐसा विभाग होना चाहिए जिससे

मानो देखो, वह अपने में ही नही, मानो देखो, वृत्तियों को मानो देखो, इस राष्ट्रीय विज्ञान में परिणत करते जाएं, राष्ट्र में भिन्न-भिन्न प्रकार का विज्ञान होता है, एक विज्ञान वह कहलाता है, जो मानो देखो, वह खनिज के ऊपर अध्ययन करता है, एक विज्ञान वह होता है जो खाद्यान्न के ऊपर अध्ययन करता है, और अध्ययन करता हुआ उसी को मानो देखो, क्रिया में लाने का प्रयास करता है, और जब वह क्रिया में लाता है क्रियावान बन करके मेरे पुत्रों! देखो, वही तो राजा के राष्ट्र की प्रतिभा को ऊँचा बनाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल यह वाक् प्रगट कर रहा हूँ, यह वाक् उद्गीत रूप में आ रहा है क्या देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ, महर्षि मुग्दल जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए, कहा क्या हम अपने में मानो देखो, अपने में अपनेपन का भान विचित्रता में परिणत करते चले जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि मुग्दल, इन विचारों को ले करके मौन हो गये, महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज से यह प्रार्थना की क्या हे भगवन! हे वैशम्पायन! तुम्हारा जो जीवन है वह बड़ा सार्थक रहा है और महान, तपस्वियों में रहा है, आप भी अपने विचारों को व्यक्त कीजिए कि राजा का राष्ट्र कैसे ऊँचा बने? समाज और देखो, राजा और प्रजा, यह दोनों एक दूसरे में पिरोएं हुए है, मानो इसके सम्बन्ध में कोई विचार दिया जाएं। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि अपने में उपस्थित होते हुए, महर्षि ने अपना वर्णन करते हुए, वैशम्पायन बोले कि हे विद्वत समाज! हे आचार्य जनों! हे ब्रह्मवेत्ताओं! मेरा तो सदैव इस राष्ट्र के सम्बन्ध में एक ही विचार रहता है, कि जब तक राजा अपने में क्रियात्मक और अपने को ऊर्ध्वा को प्राप्त नही होता। तब तक मानो देखो, राष्ट्र में प्रजा कदापि ऊँची नही हुआ करती। जब राजा स्वयं अपने को प्रभु के प्रति प्रीति में रत्त हो जाता है, और अपनी आभा में रत्त होता हुआ, अपने में निहित होता हुआ, क्रियात्मक देता हुआ, मानो देखो, वह अपने में महान बनता रहेगा, राजा अश्वपति ने कहा-प्रभु! मेरे यहाँ आपका निरीक्षण होना चाहिए। प्रायः देखो, मेरा जो क्रियाकलाप है, वह प्रायः ऊर्ध्वा में है, अथवा नही तो मेरे पुत्रां देखो, इसमें महर्षि वैशम्पायन के, कथन से, वह राजा के राष्ट्र में देखो, उन्होंने भ्रमण किया, और राजा के राष्ट्र में सुसज्जित रूपों से प्रत्येक प्राणी अपने में क्रियाशील हो रहा है राजा भी स्वयं अपने में क्रियाशील है।

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि अप्रतं देखो, वह ब्रह्मणां ब्रहा महर्षि वैशम्पायन देखो, अपने में मग्न हो करके वह मानो देखो, तुम्हारा राष्ट्र मानो देखो, अश्व से घिरा हुआ है। अश्व कहते हैं, मानो राजा को और राज्यता से प्रत्येक राष्ट्र अपने में पिरोया हुआ, दृष्टिपात हुआ तो विचार क्या? मुनिवरों! देखो, कर्तव्यवाद की एक वेदी को अपनाना ही यह राष्ट्र का सबसे प्रथम मानो देखो, मुख्यतव एक कर्तव्य होता है। जैसे मानो देखो, यज्ञशाला में यज्ञमान का मानो क्रियात्मक और मानवीयता से उसका जीवन घिरा हुआ होना चाहिए, मन कर्म वचन से घिरा हुआ होना चाहिए, जैसे मानो देखो, पृथ्वी देखो, संसार की नाभि के रूप में कही जाती है। देखो, यह पृथ्वी नाभि के रूप में इस प्रकार है जैसे मानव के, जैसे माता के शरीर में एक नाभि है, और नाभि से मानो देखो, प्रत्येक नाभि का समन्वय होता है। उसी नाभि का समन्वय माता जब बलवती होती है। तो युवा काल को प्राप्त होती है। तो हम जैसे शिशु उसमें विद्यमान होते हैं। तो वह नस नाड़ियों के द्वारा ही मानो देखो, वह माता ब्रह्मणां देखो, वह नाभि माध्यम बन करके वह इस मानव शरीर की नाभि के रूप में मानी गई है। माता बालक को जन्म देती है, परन्तु वह अपने में अमृत को प्रदान करती हुई, वह अप्रतं ब्रह्मा वह शिशु को ऊर्ध्वा में गति बनाने में लगी रहती है। तो इसीलिए देखो, वह नाभि है वह नाभ्यां ब्रह्मणां ब्रह्मा वाचन्नं ब्रह्मे लोकां मेरे पुत्रों! देखो, वह नाभि है, यह पृथ्वी संसार की नाभि है, मानो देखो, विज्ञानवेत्ता, चाहे वह विज्ञानवेत्ता इस पृथ्वी का हो, चाहे विज्ञानवेत्ता मंगल का हो, चाहे किसी भी लोक-लोकान्तरों का विज्ञानवेत्ता क्यों न हो? परन्तु विज्ञान के वांगमय में यह गति मानो वह अनुसन्धान प्रारम्भ किया, तो पृथ्वी के गुरूतव को ले करके अनुसन्धान किया है, इस गुरूतव को जान करके माता वसुन्धरा के गर्भ

में मानव ने जाने का प्रयास किया है, और जब उसके गर्भ में जाने के लिए तत्पर हुआ है, तो विज्ञान में रत्त हो गया है। अपने में आभा में रत्त हो गया है तो मेरे पुत्रों! देखो, विज्ञानां ब्रह्मः लोकां वाचं ब्रह्मा वायु सम्भवं ब्रहे कृता। तो मेरे पुत्रों! देखो, वेद का वाक् कहता है वेद का ऋषि कहता है वेदां ब्रह्मणां वेदाः, वेदां ब्रह्मणां ब्रहे गुरूतव ब्रह्मणां ब्रह्मे व्रतति व्रताः वेद का वाक् कहता है, कि विज्ञानवेत्ता गुरूतव परमाणु के ऊपर अनुसन्धान करता हुआ, इस माता वसुन्धरा की गोद में, वह सदैव परिणत होता रहा है उसी परमाणु का मिलान वह तरलतव परमाणुओं से करता है और तरलतव परमाणुओ का निर्माण, तेजोमयी परमाणुओं से करता हुआ वह मानव देखो, अपने में अनुसन्धान करता रहता है और अन्वेषण करता हुआ मानो देखो, वही मानव ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ना प्रारम्भ करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान अपने में सार्थक बन जाता है, और वह सार्थक बन करके राजा के राष्ट्र में जो विज्ञान है, अपनी चरम सीमा पर चला जाता है।

तो विचार आता रहता है यह पृथ्वी मानो देखो, वसुन्धरा के रूप में कहलाती है, परन्तु देखो, वह इसके ऊपर गुरूतव, अपने में अनुसन्धान, विचारक अनुसन्धान करता उग्र रूप बनाता है, अपने में विराट रूप बनाता है तो मुनिवरों! देखो, एक-एक परमाणु से मानव नृत्त करने लगता है और नृत्त कैसे होता है मुनिवरों! देखो, जैसे प्रातःकाल सूर्य उदय होता है, और रात्रि उन किरणों अपने में नृत्त करती है मानो समाप्त हो जाती है, इसी प्रकार मेरे पुत्रों! विज्ञान अपने में कितना अनूठा नृत्त करता रहा है वह अपने में उग्र रूप धारण करता हुआ यन्त्रों का निर्माण करता है। यहाँ का वैज्ञानिक हो इसीलिए मानो देखो, यह पृथ्वी गुरूतव कहलाती है। इस पृथ्वी को ले करके ही मानव अनुसन्धान करता रहता है और विचारता रहता है बेटा! लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान भी, मानव के द्वारा एक सार्थक रूप में होना चाहिए जिस वे परमपिता परमात्मा की प्रतिभा हो जान करके और इस संसार रूपी सागर से पार हो जाएं, क्योंकि सागर से ही तो पार होना है। जिसमें मान और अपमान से मानव घिरा हुआ है, मानो इसी से तो पार होना है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज ने, अपना विचार व्यक्त करते हुए यह कहा कि राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, तो मानो देखो, अपने को उग्र रूप को धारण करना है अपनी प्रत्येक इन्द्रियों पर नृत्त करना है जैसे विज्ञानवेत्ता मानो देखो, अपने में लघु मस्तिष्क और पार्थिव तत्त्ववेत्ता बन करके जैसे विज्ञान में रत्त हो जाता है, इसी प्रकार हे यज्ञमान! तू अपने में ब्रह्मणां ब्रह्मा कृतं देवं जैसे यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके देवताओं को पुकार करके एक-एक वेदमन्त्र में जो मानो स्वाहा कहता है उसमें जो परमाणु विद्या है उसमें जो भी नृत्त कहलाता है। वह द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है तो विचार क्या राजा के राष्ट्र में एक ऐसा समाज होना चाहिए, जिससे उस समाज में मानो देखो, नम्रता और मानवीय दर्शनों का बखान होता रहे। और मानवीय दर्शन मानो देखो, जब देखो, मानव के समीप आता है और वह राजा स्वयं अपने में मानव दर्शन को चिन्तन में लाने वाला हो और क्रियात्मक उसका जीवन हो, जिससे राष्ट्र में ब्रह्मवेत्ता बन करके और ब्रह्मनिष्ठ बन करके देखो, ब्रह्मवेत्ताओं के समाज का निर्माण करता हुआ, राजा मानो देखो, अपने में मानो देखो, महानता का दर्शन करता चला जाता है।

मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, महाराजा अश्वपति के राष्ट्र की चर्चाएं, बेटा! हमने कई कालों में वर्णन की हैं, और वह वर्णन शैली देखो, इस सम्बन्ध में, क्या आचार संहिता होनी चाहिए, और देखो, आचार संहिता के सम्बन्ध में देखो, विद्यालयों के ऊपर दायित्व रहता है और विद्यालयों का दायित्व आचार्यों के समीप मानो आचार्य जन विद्यालय को ऊँचा बनाते हैं, महान ऊँचा बनाते हैं, ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मवर्चोसं ब्रह्मे वृकति बन करके मानो देखो, विद्यालयों को ऊँचा बनाते हैं। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! मैं

विशेष चर्चा न देता हुआ, कि हमारी आचार संहिता होनी चाहिए महर्षि वैशम्पायन मुनि महाराज ने, अपने बड़े सुन्दर विचित्रमयी विचार देते हुए कहा, क्या हे राजन! तेरे राष्ट्र में एक समाज यौगिक होना चाहिए। तेरे राष्ट्र में एक समाज मानो बुद्धिजीवी ऐसा होना चाहिए, जिससे तेरे राष्ट्र में कुरीतियां न हो, तेरे राष्ट्र के एक दूसरे में पिरोया हुआ, एक दूसरे में एक दूसरे को स्वीकार करता चला जाएं तो मेरे पुत्रों! देखो, वेद के ऋषि ने, जब इस प्रकार अपनी विवेचनामयी प्रगट करते हुए कहा, हे राजन! तेरे राष्ट्र में देखो, यदि रक्त भरी क्रान्ति का संचार होता है, तो मानो देखो, तू कोई राज सभा को कोई तुझे अधिकार नही हैं क्योंकि राज्यं ब्रह्मे सृष्टं ब्रीहि वेद का वाक् कहता है कि वह कर्तव्यवाद में निहित होता है। कर्तव्यवाद में जो लिप्त हो जाता है, अरे, वही तो मानवता की मानवीयता में रत्त हो जाता है।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल यह कि अपना-अपना विचार मानो देखो, अपनेपन में ही मानो देखो, बाह्य जगता को भी सजातीय बनाता है, बाह्य जगत हमारा इतना सजातीय होना चाहिए जिससे अन्तरात्मा प्रसन्न हो करके और हमारा जो अन्तर्जगत है वह सदैव प्रसन्न रहे, सदैव इतना अनुशासित तरङ्गें प्रेरित ओत-प्रोत होती रहें।

तो आओ, मेरे पुत्रों! तुम्हें मैं विचार देता हुआ, दूरी न चला जाऊं, विचार केवल यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें, तो राजा के राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार का समाज भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रतिभावादी प्राणी होने चाहिएं, धर्मज्ञं ब्रह्मे लोकां धर्म को जानने वालें, मेरे प्यारे! देखो, वह धर्म की चर्चा तो वह कई कालो में वर्णन की हैं, आज भी मैं देखो, बेटा! धर्म के ऊपर अपनी चर्चा कल करेंगें। आज का विचार केवल यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम विज्ञानवेत्ता धर्मवेत्ता मानो देखो, धर्मज्ञ बन करके परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में सदैव रत्त हो जाएं, वे परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है जो मानो देखो, सर्वत्रता में ओत-प्रोत रहता है उस देव की महिमा में हम सदैव तत्पर रहें। यह है आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है, क्या राजा के राष्ट्र में आचार संहिता हो, राजा में उग्रवादता की प्रतिभा होनी चाहिए। उग्रवाद उसे कहते हैं, जो मानव अपनी प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को संयम में ला करके उन्हें मानो उग्र रूप और साधना का रूप देता है, वह उग्र रूप कहलाता है। मानो देखो, उसे उग्र रूप नही कहते क्या आत्मा हमें कुछ कह रहा है, आन्तरिक जगत कुछ कह रहा है, बाह्य जगत हमें कहीं और ले जा रहा है। तो उसे मानो उग्रवाद नही कहते उग्रवाद कहते हैं, जो अपनी अन्तरात्मा के अनुसार अपनी क्रियात्मक अपने जीवन को परमात्मा को समर्पित करता है, या अपने जीवन को अपनी मानवीयता को समर्पित कर देता है, तो वह महान कहलाता है। तो आओ, मेरे पुत्रों! में विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न करता हुआ केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, हम अपने मानवीयतव को ऊँचा बनाते चले जाएं। मानव दर्शन में मानव दर्शन में हम मानो सदैव निहित रहें। तो यह है बेटा! आज का वाक्, कल मुझे समय मिलेगा, कल मेरे प्यारे! देखो, इस सभा में ऋषि-मुनियों के विचार उनकी उक्तियां पुनः से मानो देखो, विचार देते चले जाएंगें आज का विचार समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

२ आध्यात्मिकवाद की भूमिका २२ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और यह जो अनुपम हमें जगत दृष्टिपात आ रहा है, उस परमपिता परमात्मा की अनुपमता से यह घिरा हुआ है। अथवा उसमें ओत-प्रोत है। तो आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गा रहा है। क्योंकि वे महिमावादी है, और अनन्त भी और अनुपम हैं, मानो जिसकी आभा में प्रत्येक मानव प्रायः आभायित रहता है और अपने में यह विचारता रहता है, कि मैं परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाऊं, प्रत्येक मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके, वर्तमान के काल तक, मानो ये अनुसन्धान करता चला आ रहा है, कि मैं उस परमपिता परमात्मा की महती को अथवा उसकी अनुपमता को मैं जानता रहूँ। परन्तु वे यह सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके एक अनुसन्धान पर और एक विचार विश्व ब्रह्मा मानो एक विचार का विषय बना ही रहा है। क्योंकि जिस मानव ने, उस परमपिता परमात्मा की प्रतिभा अथवा उसका ज्ञान और विज्ञानमयी जगत को जब जान लिया गया, तो मानव का, वाणी का विषय समाप्त हो गया, और जब वाणी का विषय समाप्त हो गया, तो परमपिता परमात्मा की महती और अनुपमता का जो विषय है, वह पुनः मानो एक गोपनीय बन गया है। तो इसीलिए सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ही मानव अपने में विचार-विनिमय करता रहा है और चिन्तन और मनन करता हुआ, अपनी ऊर्ध्वा गति बनाता रहा है और उस ऊर्ध्वा गति जब मानव की, पूर्ण रूपेण हो जाती है, तो मानव पुनः मौन हो गया। तो इसीलिए हम यह विचारते रहते हैं, कि इसी वाक् को उच्चारण करके हमें मौन नही रह जाना चाहिए। परन्तु परमात्मा का जो रहस्यमयी सृष्टि जगत है, वह रहस्यमयी बना हुआ है, बनता रहेगा क्योंकि वे परमपिता परमात्मा चैतन्य है और अनुपम है प्रत्येक वेदमन्त्र को जब भी तुम अनुसन्धान क्षेत्र में ले जाओगे, तो प्रत्येक वेद का मन्त्र मानो उसकी विवेचना कर रहा है, और उसके गुणों का गुणवादन कर रहा है प्रत्येक तरंगें उसका एक मानो देखो, गुणों का वर्णन कर रहा है लोक-लोकान्तरों में प्रवेश हो जाओ तो मुनिवरों! एक लोक को जानता है दूसरा उपस्थित हो जाता है तो यह ब्रह्माण्ड एक अनन्तता में जगतमयी रहस्य बना हुआ है।

लोक लोकान्तरों की माला का परमात्मा से समन्वय

मेरे प्यारे! आज का हमारा वेदमन्त्र विवेचना तो कर रहा है, परन्तु उसके पश्चात भी रहस्यमयी बना हुआ है। तो आओ, जैसे एक मानव विज्ञानवेत्ता बनता है, और विज्ञानवेत्ता एक पंक्ति को जानने लगता है। तो दूसरी पंक्ति उसके समक्ष उपस्थित हो जाती है, जैसे हम लोक-लोकान्तरों की ही गणना करने लगते हैं, या उसको माला या सूत्र में दृष्टिपात करने लगते हैं। तो मानो एक माला उपस्थित होती है। तो द्वितीय माला का जन्म हो जाता है, तृतीय माला को जानते हैं, तो चतुर्थ माला उपस्थित हो जाती है, तो बेटा! इन मालाओं का भी परमपिता परमात्मा से ज्ञान और विज्ञान से उसका समन्वय है। तो वैज्ञानिकों के मध्य में जब विचार-विनिमय प्रारम्भ करते हैं, तो यह रहस्यमयी जगत बना हुआ है। तो मेरे पुत्रों! यह कैसा अनुपम जगत है, आज मैं इस जगत में तो प्रवेश करना नही चाहता हूँ, परन्तु विचार केवल यह कि वेद का मन्त्र यह उद्गीत गा रहा है, मानो प्रत्येक जगत अपने में एक अनूठा है, और उसमें व्यापकवाद में ही मानो देखो, रत्त रहता है। तो मेरे पुत्रों! मानव आओ, आज हम तुम्हें ऋषि-मुनियों के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता हैं जहाँ मानो देखो, विज्ञान में रत्त होता है और एक पंक्ति को जानता है

और द्वितीय पंक्ति क्या मानो इन पंक्तियों की गणना करना भी असम्भव हो जाता है तो मुनिवरों! देखो, जब हम आध्यात्मिकवाद की प्रायः माला में जाते हैं तो आध्यात्मिकवाद एक ऐसा अनुपम दृष्टिपात आने लगता है जिसमें मानव अपनी अन्तरात्मा में अपने को जान करके ही दूसरे की आवश्यकता जानने की नही हुआ करती और जब वह जानने के लिए नही हुआ करती है। तो मुनिवरों! देखो, वह एक अनुपम महानता और वह भी आध्यात्मिकवाद में एक रहस्यमयी बनता रहता है। तो मेरे प्यारे! मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है आज मैं उस काल में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा ऋषि-मुनियों के द्वारा विराजमान हो करके बेटा! आध्यात्मिक विवेचना करते रहें है आध्यात्मिकवाद में माता के समक्ष ही आध्यात्मिकवाद मानो रहस्यमयी बना रहता है।

परमात्मा वाणी का विषय नही

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, एक समय जब ऋषि-मुनियों की सभा में महर्षि मुग्दल जी ने यह कहा, जब आध्यात्मिक वेत्ताओं ने महर्षि मुग्दल ऋषि महाराज से यह कहा कि महाराज! आप आध्यात्मिकवाद में कितने पारायण है? तो महर्षि मुग्दल ने यह कहा कि मैं मानो देखो, उस परमपिता परमात्मा को अपने में ध्यानावस्थित हो करके उसके दर्शन करता हूँ, परन्तु वह उच्चारण जब वाणी का विषय नही रह जाता है, इसीलिए मैं इस उद्गीत को गाता नही रहता हूँ, मैं अपनी माता के समीप उनके चरणों की वन्दना करता हुआ, प्रायः माता से यह प्रश्न करता रहता हूँ क्या हे माता! जब मैं इस मानो जगत को और ब्रह्माण्ड को जानने लगता हूँ परमपिता परमात्मा को जानने लगता हूँ, तो वाणी का विषया समाप्त हो जाता है तो मानो देखो, मैं जानना चाहता हूँ कि मातेश्वरी का विषय क्यों समाप्त हो गया है? तो मेरे पुत्रों! देखो, उस समय माता रुश्वरी ने कहा था कि हे बाल्य! हे ब्रह्मचारी! मानो तू ब्रह्म है, तू ब्रह्मचरिष्यामि बना हुआ है, विचारने से प्रतीत होता है क्या मानो देखो, जब यह इन्द्रियों का विषय यह जो प्रकृतिवाद है, जहाँ तक मानो देखो, जड़वत की चेनता का प्रसंग आता है, और जहाँ वे चेतना जड़वत के सम्पर्क से जब वह ध्रुवा गति में चली जाती है और जब यह जीवात्मा का यह जो विषय है ये जब प्रकृति और मन के व्यापार को त्याग करके यह प्राणों को अपने व्यापार को त्याग करके, केवल आत्मा परमात्मा के मध्य का एक विषय रह जाता है। मानो उस विषय पर जा करके मानव अन्त में मौन हो जाता है इसीलिए मौनता आ जाती है क्योंकि प्रकृतिवाद समाप्त हुआ और जहाँ केवल आत्मा और केवल्य मानव प्रभु की प्रतिभा में पंहुचा, तो वाणी का विषय नही, वह केवल आत्मा का विषय रह जाता है।

शरीर का निर्माणवेत्ता

तो मेरे प्यारे! देखो, माता ने मुझे यह निणर्य दिया, मैने माता से प्रश्न किया कि हे माता! क्या तेरे गर्भस्थल में बाल्य और शिशु का रहस्यमयी क्यों बना रहा है अब तक? तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय माता ने यह कहा क्या हे बाल्य! जब माता अपने गर्भस्थल से शिशु को अपनी अन्तरात्मा से दृष्टिपात करती है, क्योंकि जब वह दृष्टिपात करती है, उसका निर्माण वह स्वतः न होता हुआ क्योंकि माता निर्माणवेत्ता नही है। निर्माणवेत्ता तो चैतन्य है, वह प्रभु है जब वह निर्माणवेत्ता रहता है निर्माणं ब्रह्मे व्रतं ब्रहे जब वह निर्माण करता है तो मानो देखो, माता न निर्माण करती है, न पितर निर्माण करता है, निर्माणवेत्ता का निर्माण का जो रहस्यमयी जो यह जगत यह शरीर भी बना हुआ हैं, क्योंकि माता इसमें रहता है। इसमें वास करता है और ज्ञान कर्म में रत्त रहता है। क्रियाकलापों में मानो नाना रूपों में रत्त रहने वाला है विज्ञानवेत्ता बन जाता है अणु और परमाणुओं का समन्वय करना प्रारम्भ करता है, मानो देखो, पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश कर जाता है, परन्तु यह नही जानता कि आत्मा इस शरीर में किस प्रकार रहती है, और आत्मा कैसे मानो देखो, गतिवान कराती है, शरीर को ज्ञानवान बना देती है। क्योंकि वह

माध्यम ब्रह्मे क्योंकि माता यह निर्णय नही दे सकती है, क्या मेरे गर्भस्थल में जो निर्माण है, वह निर्माण प्रभु ने किया है, और उस निर्माणवेत्ता के सम्बन्ध में, जब चिन्तन मनन प्रारम्भ हो जाता है तो बेटा! वह वाणी पुनः मौन हो गई। तो विचारने से यह प्रतीत होता है कि एक वैज्ञानिक है, वह विज्ञानवेत्ता बन करके नाना प्रकार के अणु परमाणुओं को अपने में सुगठित कर रहा है, परन्तु जब यह जान लिया जाता है ब्रह्मणे हे वैज्ञानिक! क्या तू इस आत्मा को जानता है, जो तेरे शरीर में वास कर रही है। मेरे पुत्रों! देखो, आओ, आज मैं तुम्हें भौतिक विज्ञानवेत्ताओं का और आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ताओं के स्वरूप मानो देखो, ऋषि-मुनियों के मध्य में जाना चाहता हूँ।

आओ, मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आ रहा है वह सभा जो बेटा! एक सभा मुनिवरों! देखो, त्रेता के काल में हुई और त्रेता के काल में बेटा! वह सभा अयोध्या में हुई मेरे पुत्रों! देखो, जिसकी अध्यक्षता महाराज भरत ने की थी। मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ यह उसमें महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि मुग्दल, महर्षि रोहिणी कृतिका और वैशम्पायन और श्वेतकेतु मेरे पुत्रों! देखो, नाना ऋषि और ब्रह्मचारी उस सभा में विद्यमान थे, और उस सभा की अध्यक्षता महाराज भरत ने की महाराजा भरत को यह निमन्त्रित किया गया कि आओ, महाराज इस सभा की अध्यक्षता करो। तो मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा भरत ने यह कहा कि मैं इस सभा की अध्यक्षता नही करूंगा, क्यों नही करोगे? क्योंकि मैं इस सुयोग्य नही हूँ, क्योंकि मैं इस सभा की अध्यक्षता करूं।

आत्मा से विज्ञान का समन्वय

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंनें कहा कि नही आप राजकुमार होने से आप इसकी अध्यक्षता कीजिए क्योंकि इसमें विज्ञानवेत्ता हैं और आध्यात्मिकवादी हैं मेरे प्यारे! देखो, महात्मा भरत ने यह कहा क्या मैं इसकी अध्यक्षता नही करूंगा। जब तक मेरे पूज्यपाद मानो गुरुदेव महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, महर्षि विश्वामित्र और भी नाना देखो, आचार्य विद्यमान हैं, मुझे इसका सम्बोधित करने का भी अधिकार नही हैं। मेरे पुत्रों! देखो, वह सभा ब्रह्मणे मैं इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ, क्या वह अध्यक्षता महाराजा भरत ने की मैं इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ। सबको क्योंकि उसको सम्बोधित किया गया, उसमें वह वाक् स्वीकार नही किया, और वह क्योंकि ऋषि-मुनियों ने अध्यक्षता उसकी चुनौती प्रदान की। परन्तु देखो, उन्होंने स्वीकार नही किया तो उस समय उन्होंने कहा-प्रभु! मैं अपने दायित्व को महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराजा को अर्पित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने जब समर्पित कर दिया, तो ऋषियो ने यह विचारा कि महाराजा! आप सभा के अध्यक्ष और सम्बोधित करने वाले बनिये, तो मुनिवरों! देखो, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है बेटा! देखो, उस सभा का निर्वाचन करने वाले महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज बने, और देखो, वहाँ वैज्ञानिक और आध्यात्मिकवेत्ता दोनों विद्यमान हो गये, तो उन्होंने कहा विज्ञानवेत्ताओं से आध्यात्मिक वादियों ने बेटा! बारी-बारी उपस्थित हुए मेरे पुत्रों! देखो, उसमें महर्षि सुदेन केतु महाराज जो मानो देखो, विज्ञानवेत्ता थे। उन्होंने देखो, आध्यात्मिकवादियों ने उनसे यह प्रश्न किया महर्षि विश्वामित्र ने क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान को दोनों को जानते थे। ऐसे ही सुधन्वाकेतु महाराज मानो देखो, आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों को जानते थे। दोनों से कहा कि तुम्हारा विचार-विनिमय होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उस समय विचार-विनिमय जब करने लगे, तो महर्षि विश्वामित्र ने यह कहा क्या तुम तो विज्ञान में रत्त हो रहे हो, तुम्हारी आत्मा से विज्ञान का क्या समन्वय है? और आत्मा विज्ञान आत्म तत्त्व के लिए विज्ञान क्या तुम्हारा निर्णय देता है? मेरे प्यारे! देखो, वह उन्होंने कहा हे-प्रभु! सुधनकेतु ने कहा कि-प्रभु! मेरे विचार में यह मैंने जो अब तक जाना है, मानो कुछ अनुसन्धान सा किया है, मैं मानो देखो, अणु और परमाणुओं के सम्मिलन का नाम तो यह मानवीय शरीर कहलाता है और मानवीय इसमें निहित रहता है मानो रहा यह कि आत्मा का इसमें यह परमाणुवाद, एक सुगठिता में रत्त रहते हैं, इनको गठिन करने वाली, एक कृतिका कहलाती है जैसे मानो देखो, मधुमक्खी होती है और

मधुमक्खी अपने एक मानो देखो, विशेष राजलक्ष्मी बन करके रहती है और सदैव प्रजा उसके अन्तर्गत मानो देखो, उसका निर्माण करते रहते है मधु का, और वह जब वहाँ से गमन करती है तो प्रजा भी गमन कर जाती है, इसी प्रकार हमारे इस शरीर में मानो देखो, एक मधु मक्खी की भांति एक मानो देखो, राजलक्ष्मी हैं और परमाणु उसके अन्तर्गत मानो देखो, सुगठित हो जाते हैं।

रानी मधुमक्खी तुल्य आत्मा

तो मेरे प्यारे! सुदेनकेतु ने जब यह निर्णय दिया, निर्णय देने के पश्चात उन्होनें कहा कि और आपका क्या विचार दे सकते हैं इसमें? तो उन्होंने का कि मेरे विचार में ऐसा है कि मधु मानो देखो, निर्माण हो रहा है, मधु का निर्माण करने वाली वह राजलक्ष्मी ही मुख्य है, इसी प्रकार हमारे इस मानो शरीर में एक मानो एक परमाणु विशेष है, और परमाणु उसके अन्तर्गत रहते हैं उन्होंने देखो, प्रमाण देते हुए कहा, जैसे एक मानव का शरीर जब इसमें से देखो, मानव का दाह कर देते हैं तो मानो देखो, वह जो स्वाहा वृत्तियों में उच्चारण करने लगता है, जैसे उच्चारण करता है वह दाह तो देखो, वही शब्द और शब्द के रूप में आकार बना रहता है परन्तु देखो, वह शब्द है, जिसमें एक आकार है, एक विशेष मानो देखो, राजलक्ष्मी परमाणु है उसी परमाणु से मानो देखो, सब परमाणु मानो देखो, चित्र के रूप में चित्रित होते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, जब सुदेनकेतु ने, यह उत्तर दिया, तो उन्होंने कहा कि मैं जानना चाहता हूँ मेरा प्रसंग मानो दूरी चला गया है मैं यह जानना चाहता हूँ कि इसमें आत्मा का क्या रहस्यतम है?

मन का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, सुदेनकेतु ने कहा-प्रभु! मैं तो यह जान पाया हूँ क्या आत्मा मानो देखो, उसमें राजलक्ष्मी को कहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि तुम्हारा अन्तरात्मा इसको स्वीकार करता है, जब तुम एक दूसरे की मिलान प्रणाली में परिणत होते हो, तो मानो ये तुम्हारे विचार में आता है, अथवा नही। तो मेरे पुत्रों! देखो, अपने में रूद्राः सम्भवा लोकां रथं ब्रह्मे, एक वेद की आख्यिका वर्णन करते हुए यह कहा कि-प्रभु! मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ, इस सम्बन्ध में, उन्होंने कहा कि और आगे नही जानते? मेरे पुत्रों! महर्षि विश्वामित्र ने देखो, पुनः सुधन्वाकेतु से यह कहा कि-प्रभु! आपका तो बड़ा रहस्यतम जीवन रहा है, मैं बहुत समय से आपकी विज्ञानशाला में जाता रहा हूँ, और देखो, दृष्टिपात करने का मेरा यह स्वभाव है क्या तुम अन्तरात्मा जो तुम्हारे शरीर में आत्म तत्त्व विद्यमान है, क्या इसका रहस्य नही जानते? उन्होंने कहा-प्रभु! केवल विज्ञान तो इतना ही स्वीकार करता है क्या परमाणुओं का संघात हैं, परमाणु एक विशेष होता है वही परमाणु मानो देखो, उसमें वृत बना रहता है तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा जैसे पंच महाभूत अपने रूपों में अपने अपने में गमन करते हैं मानो सुगठिता को प्राप्त हो जाते हैं मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा जैसे मनस्तं ब्रह्मा उन्होंने कहा मन किसे स्वीकार करते हो? तो सुदेनकेतु ने कहा कि महाराज! देखो, मैं मन को ऐसा स्वीकार करता हूँ क्या मन ही मानो मन ही इस संसार की एक पूंजी कहलाती है, जो प्रत्येक प्राणी मात्र के साथ रहती है कोई भी मानव हो वह मानव कहलाता है। क्योंकि मन के कारण ही वह मानव कहलाता है परन्तु विज्ञान के वांगमय में ऐसा स्वीकार करते हैं कि यह मन ही इस संसार में कर्त्ता धर्ता इस शरीर का होता है जैसे मानो देखो, मन से ही उग्रता का जन्म होता है और मन में जब उग्रता आती है वही उग्र रूप बन करके देखो, वह ऋषि भी बन जाता है वैज्ञानिक बन करके वह लोक-लोकान्तरों की यात्रा में लग जाता है और ब्रह्माण्ड को अपने को धारण करने वाला मानो यह मनस्तव कहलाता है। मेरे प्यारे! कहा कि यह मन क्या है? उन्होंने कहा कि मन मानो देखो, प्रकृति एक अनुपम गति है यह ब्रह्माण्ड को

मापने वाला है ब्रह्माण्ड इसी से मापा जाता है? उन्होंने कहा क्या ब्रह्माण्ड इसको माप करके ब्रह्माण्ड के पश्चात इस संसार को कैसे जाना जाता है उन्होंने कहा कि यह संसार ही तो ब्रह्माण्ड कहलाता है भगवन! आप कैसी वार्त्ता उच्चारण कर रहे हैं। जब सुदेनकेतु ने यह कहा कि यह ब्रह्माण्ड ही मानो देखो, एक मनस्तव कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, यह ब्रह्माण्डं ब्रह्मे उन्होंने कहा कि यह ब्रह्माण्ड की सीमा कहाँ तक है चिन्तन करने की उन्होंने कहा कि हम लोक-लोकान्तरों में भ्रमण करते रहते हैं गुरूतव परमाणु को जानते रहते हैं और तेजोमयी में प्रवेश करा देते हैं लोक-लोकान्तरों की यात्रा भी करते रहते हैं, सुदेनकेतु ने कहा मैं अपने आचार्य विद्यालयों में प्रवेश हो करके, मैं अपने विज्ञानशाला से उड़ान उड़ता रहता हूँ। मैंने एक सौ बहतर लोकों का अब तक भ्रमण कर लिया है। मानो देखो, मन की एक कल्पना है मन का रहस्यमयी जीवन बना हुआ है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने यह कहा कि उन्होंने कहा कि भौतिक विज्ञान लोक-लोकान्तरों का विज्ञान कहाँ शान्त हो जाता है। कहाँ तक तुमने जाना है? तो मेरे पुत्रों! देखो, सुदेनकेतु ने वशिष्ठ मुनि महाराज को सम्बोधित करते हुए और विश्वामित्र के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा क्या यह मानो देखो, मैं इतना जान पाया हूँ क्या आकाश गंगा, निहारिका, अवन्तिका के रूप में इसको जान पाया हूँ। उन्होंने कहा अवन्तिका के आगे तुमने कोई अनुसन्धान किया।

तप का अभिप्राय

तो मुनिवरों! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है सुनेदनकेतु ने यह उत्तर दिया कि महाराज! इसके आगे मैं नही जान पाया। उन्होंने कहा तो आगे यह रहस्य बना रहा है तुम्हारी दृष्टि में, उन्होंने कहा प्रभु! वास्तव में यह रहस्य बना रहा है। विज्ञान के रूप में भी यह विज्ञान अपने में रहस्यमयी बना हुआ है यह मुनिवरों! देखो, यह सुदेनकेतु ने मुनिवरों! देखो, इतना उच्चारण करके वह मौन हो गएं और सुदेनकेतु ने यह कहा कि-प्रभु! आप आत्मा का निर्णय दीजिए क्योंकि मैंने जितना जाना है मैं तो देखो, मैंने तो एक मधु मक्ख राजलक्ष्मी का उत्तर दिया है, ऐसे ही मैं आत्मा को स्वीकार करता रहता हूँ। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूं यह तो विज्ञान कहता है आपका आध्यात्मिक विज्ञान क्या कहता है तो मेरे प्यारे! महर्षि विश्वामित्र ने कहा क्या तुम मानो तुमने तपस्या की है? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं तप को ही जानना चाहता हूँ, तपस्या क्या मानो क्या तुम्हारा व्रत है? और यह क्या शब्द है? जिसमें तुम तपस्या का प्रश्न कर रहे हो। उन्होंने कहा तप कहते हैं, तपस्या उसे कहते हैं, जो सीमा में अपने जीवन को मानो देखो, सीमा में परिणत कर देता है, और अपने जीवन को बिखरने नही देता है। वह मानो तपस्वी कहलाता है। जैसे मानो एक मानव को एक शब्द उच्चारण करना है, शब्द के ऊपर मानो देखो, वह मौन हो जाता है। एक मानव ने यह प्रश्न किया क्या यह जो तुम्हारा शब्द तुम्हारी मानो देखो, रसना के माध्यम से आ रहा है। यह मानो कितना उद्गीत रूप में गाना चाहिए? तो मानो देखो, वेद का वाक् कहता है, अश्वाम् ब्रह्मे सर्वस्कृतम् ब्रह्मे लोकाम् मानो देखो, वह मानो देखो, जिस प्रसंग में वह शब्द है उतना उसी सीमा से उसका उत्तर दे देना चाहिए, जैसे एक अभी-अभी हमने प्रसंगवश एक वाक् कहा है क्या योगां ब्रह्मे लोकां व्रतं मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड क्या है? तो उत्तर दे दिया, एक सीमावादी ने, क्या यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमपिता परमात्मा की एक अनुपम रचना है, या रचना ही कह करके मौन नही रह जाना चाहिए, सीमाबद्ध यह कहता है, अनुशासनवेत्ता का यह ब्रह्माण्ड है, जो परमात्मा की रचाई हुई जो कृति है, उसे जानने का नाम ब्रह्माण्ड कहते हैं। मानो देखो, वे परमपिता परमात्मा को यहाँ आ करके ही शान्त नही कर देना चाहिए, यह कि ब्रह्माण्ड यह देखो, मन का विषय है, और जहाँ तक मन चला जाता है। वहाँ तक ब्रह्माण्ड की सीमा बनती चली जाती है, मानो देखो, यहाँ तक यह मन प्राण के साथ में गति करता-करता दूरी चला जाता है, और जानता हुआ मानो देखो, उसको अपने में धारण करता हुआ, वह प्रकृति के स्वरूप में इस ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है, और वह दर्शन मानो देखो, रूप में रत्त हो जाता है। तो मानो देखो,

आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता यह अपने में प्रसंग ले करके गमन करता है, और विचारता रहता है, सम्भव ब्रह्मा कृतं ब्रह्माण्डं ब्रहे लोकां वाचाम ब्रह्मे कृतं लोकां मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने कहा क्या यह मानो देखो, मन का विषय प्रकृति का विषय जड़वत का विषय मौन हो जाता है, और मानव चेतना में प्रवेश करता है। चेतना में प्रवश करता हुआ मानो देखो, जड़वत को त्याग करके और चेतना में जब प्रवेश करता है, तो चेतना में ब्रह्माण्ड को और ब्रह्माण्ड को चेतना में मानो देखो, वह इतना ही शब्द उच्चारण करता हुआ, वह शब्द एक सीमित रह करके और जब इसके ऊपर एक विषय को ले लेता है। उस विषय में जब तक वह पूर्ण रूपेण नही हो जाता, मानो देखो, उस पूर्ण रूपेण का नाम ही तप कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, तपं ब्रह्मं ब्रहे लोकां मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता है, क्या तप किसे कहते हैं? पुनः वह देखो, लोकं ब्रह्मे देखो, उन्होंने यह प्रश्न किया विज्ञानवेत्ता ने क्या महाराज यह तप क्या है? उन्होंने कहा तप उसे कहते हैं, जो मानो देखो, अपने में सीमित रहता है, और गागर में जो सागर की कल्पना कर लेता है जैसे मानो देखो, यह उच्चारण करता है कि सागर क्या है? एक समय ऋषि-मुनियों ने यह प्रसंग उत्पन्न हुआ कि सागर क्या है? और गागर क्या है? मेरे प्यारे! देखो, एक घट में देखो, जल को ले करके अमृत बना करके उन्होंने कहा यही तो सागर है, और यह मानो देखो, सागर में गागर जैसे यह घट में विद्यमान हैं, ऐसे ही यह जो पृथ्वी हमे दृष्टिपात हो रही है, यह एक मानो देखो, घट है, और घट में ही सर्वत्र समुद्र है, मानो देखो, घट में सागर है और वही सागर मुनिवरों! देखो, घट में दृष्टिपात आ रहा है।

तो विचारता रहता है मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्माण्ड अपने में देखो, दृष्टिपात आता रहता है तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेषता में तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह है कि उन्होंने पुनः यह प्रश्न किया घटोत जी ने प्रश्न किया कि महाराज! यह तप क्या है? जिस तप के सम्बन्ध में तुम प्रमाण दे रहे हो यह तपं ब्रह्मे कि तुम तप को नही जानते तप उसे कहते है। तपं प्रह्मे लोकां वाचन्न ब्रह्मे उन्होंने कहा जैसे यह सूर्य तपता रहता है, और सूर्य से अपनी इन्द्रियों से यह तपायमान करता है, जैसे सूर्य ऊर्ज्वा देता है ऐसे ही प्रत्येक इन्द्रियों को ऊर्ज्वा को जो एक दूसरें में समाहित कर देता है, वह तप कहलाता है। देखो, जैसे मानव के नेत्र हैं नेत्रों से देखो, सुपान कर रहा है, सुदृष्टिपान करता हुआ देखो, वह सु को देखो, वह विचार में लाता है, हृदय में प्रवेश कर देता है, वही मानो देखो, घ्राण के द्वारा सुगन्धि ले रहा है, और वह घ्राण के ही इतना गम्भीरता में ले जाता है, क्या वह यहाँ तक अपने में अनुसन्धान करता है, तपस्वी क्या वह मानो देखो, वायु में जो गमन करने वाली तरंगें है, उन तरंगों को वह शुद्ध और अशुद्ध तरंगों का दोनों का निर्णय दे देता है, दोनों का निर्णय कैसे देता है? बेटा! देखो, मानो देखो, कृतिका एक प्राणायाम होता है, एक कृतिका मानो संकल्प को कृतिका में रत्त कर देते हैं उस फूंक देते हैं और उसमें जब एक दूसरे में प्राण, वह परमाणुओं का समूह है मानो देखो, परमाणुओं को ले करके जब वह प्राण की प्रतिभा घ्राण के द्वारा घ्राण में एक यन्त्र लगा हुआ है उस यन्त्र को बेटा! देखो, यन्त्र भी वह रहस्यमय में बना हुआ हैं, परन्तु देखो, वह जो यन्त्र है उसे प्राण के द्वारा इतना विशाल इतना सूक्ष्म बना लेते हैं क्या वह गन्ध को यह विचार लेता है।

मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि स्वाति मुनि महाराज अपने में मुनिवरों! देखो, एक मचान पर वह अपने में तपस्या करते थे, और वह प्राणायाम करते थे प्राण कृतिका अक्षरों में विचारते रहते थे। तो मानो देखो, उन्हें इतना अभ्यास हो गया था, बारह वर्ष के तप करने के पश्चात क्या वह देखो, जल की गन्ध को अपने में धारण कर लेते थे और जल में यह निर्णय करा देते थे जल में इस प्रकार का गन्ध है, इस प्रकार का सुगन्ध हैं और सुगन्ध मानो देखो, गन्ध में वृत होता हुआ, मेरे पुत्रों! देखो, अपने में उसे धारण करते हुए मुनिवरों! देखो,

वह उसी गन्ध को वह श्रोत्रों के द्वारा उसको गमन ब्रीहि मानो उसमें रमण कराते रहते थे। तो प्रत्येक इन्द्रियों का बेटा! ज्ञानेन्द्रियों का एक तारतम्य बन गया और तारतम्य बन करके मुनिवरों! देखो, वह जब एक दूसरे में ओत-प्रोत हो गये, हृदय में उसकी समावेशता हो गई हृदय में मानो देखो, हृदयग्राही बन गये, हृदयग्राही बनने से मेरे पुत्रों! देखो, जब एक सूत्र में पिरो करके, आत्म तत्त्व क्या, यह मनस्तव और प्राणतव एकाग्र हृदय में प्रवेश हो करके बेटा! एक साकल्य बना लेते हैं और वह साकल्य बना करके, मेरे पुत्रों! देखो, आध्यात्मिक यज्ञवेत्ता हैं, वह मुनिवरों! देखो, आत्मज्ञान में, ज्ञान के द्वारा मुनिवरों! देखो, उस अग्नि को प्रदीप्त करके, उसमें प्रवेश कर देते हैं और उसमें प्रवेश करके मुनिवरों! देखो, एक महानता का जन्म हो जाता है तो मानो उस विषय विचलित नही होता उसका नाम तप कहलाता है। तो मेरे पुत्रों! तप की बड़ी विस्तृत विवेचना है विचार करते हुए बेटा! महर्षि विश्वामित्र ने आगे जब यह ब्रह्मणां ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, घड़ोच ने पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज! आप ने मानो देखो, यह उत्तर तो हमें दिया है यह आध्यात्मिकवाद से भी ओत-प्रोत है और भौतिक विज्ञान से भी ओत-प्रोत है, परन्तु यह जो आध्यात्मिकवाद का जो रहस्य बना हुआ है, वह हमारे में बना ही हुआ रहा है इसको अब तक हम नही जान पाए हैं प्रभु! मैं यह जानना और चाहता हूँ पुनः मेरा यह प्रसंग है कि तप किसे कहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि उत्तर देता है, क्या तप उसे कहते हैं जहाँ मानव देखो, अपने हृदय की तरंगें और बाह्य जगत की तरंगों का जो समावेश करता रहता है, जो अपने में जानता रहता है अपने में प्रवेश करता हुआ बाह्य जगत में प्रवेश करा देता है। तो मुनिवरों! देखो, उसका नाम तप कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा चलो, विचार तो आया परन्तु सन्तुष्ट अब तक नही हुए मेरे पुत्रों! दैखो जब विचार-विनिमय करने वाला विचार करता है, तो महर्षि विश्वामित्र अन्त में यह कहा क्या आध्यात्मिकवाद का विषय रह गया है। इसका तुम प्रश्न नही करे हो, मेरे प्यारे! उन्होंने उत्तर देते हुए कहा क्या यह जो तप है, यह परमाणुवाद है, इसको कौन धारण कर रहा है? मेरे प्यारे! परमाणुओं को धारण करने वाली वह मधु वह मानो देखो, राजलक्ष्मी, वह मानो एक आत्मा है और वह ब्रह्मणे देखो, जिस आत्मा का जितना तपो में जीवन रहता है विज्ञान में बन जाता है उतना ही मानो देखो, उसके अंगा संग रहने वाला परमाणुवाद वह उसी से सहायता को प्राप्त करता हुआ अपने में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह तो देखो, एक अणु के रूप में विराजमान हो करके जैसे मधु प्रमाणां वृत्ति लोकां इसी प्रकार तपो में देखो, जितना विज्ञान और आत्मा अपने स्वरूप में प्रवेश होता रहता है, परमात्मा से मिलन करता रहता है मानो देखो, यह मधु राजलक्ष्मी का विषय भी देखो, यह वाणी का विषय है, यह भी मौन हो जाता है और मौन रह करके केवल आध्यात्मिकवाद मेरे पुत्रों! देखो, अपने में रहस्यमय बना हुआ है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं आज तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ क्या प्रत्येक रूप अपने में आध्यात्मिकवाद कहलाता है प्रत्येक स्वरूप। आध्यात्मिकवाद क्या है? मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद कहता है तपो में जीवन हो जिसका तपों में तपं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, योगी उतना जान ले, तप सूर्य की किरणें उसे आच्छादित नही कर सकती। मेरे प्यारे! देखो, शीतलता उसे आच्छादित नही कर सकती। मेरे पुत्रों! अपने में ऐसा उपराम हो जाता है, यह पंच महाभूत उसके अधिपथ्य में रहते हैं, परन्तु देखो, वह उसके अधिपथ्य में नही रह पाता तो मेरे प्यारे! देखो, इसका नाम हमारे यहाँ एक देखो, ज्ञान और विज्ञान अपने में बड़ा रहस्यमयी विचार-विनिमय करने वाले, अन्त में बेटा! मौन हो जाते हैं।

परमाणु धारक आत्मा

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं यह विचार दे रहा था मेरे प्यारे! देखो, यहाँ सुकेनकेतु और देखो, विश्वामित्र का जो यह संवाद है यह बड़ा विचित्र है आत्मा का प्रसंग उन्होंने अपने में निर्णय दिया क्या आत्मा देखो, इस सर्वत्रता

को धारण किए रहता है और यह प्रकृति से उपरामता को प्राप्त जब हो जाता है तो परमात्मा के चेतनता का इसे समन्वय करता हुआ मानो अपने में रहस्यमी वृत बना हुआ है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, यह विवेचना तो, मैं कल प्रगट करूंगा, आज मैंने अपने विचारों की यह भूमिका बनाई है, यह भूमिका के रूप में, यह विचार-विनिमय हुआ है यही विचार बेटा! देखो, मैं कल प्रगट करूंगा, कल हमारा देखो, इससे पूर्व काल में यह विषय चल रहा था क्या महाराजा देखो, महाराज अश्वपति के राष्ट्र में, नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके, अपनी मानो देखो, राष्ट्रीय पद्धति, राष्ट्रीय धारयामि में, अपने में नाना विभागों की चर्चा होती रहती थी और मानो देखो, इसी प्रकार आध्यात्मिक वाद में भी अपने में और देखो, विज्ञानवाद में भी एक दूसरे में सम्पर्क की प्रणाली चला करती है। यह विचार बेटा! देखो, मैं कल उद्गीत रूप में गा सकूंगा। आज का विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता को जानते हुए, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा को जानते हुए, हम इस सागर से पार हों जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक्, उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जायें। गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाएं यह है, बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा बेटा! देखो, हमारे यहाँ विचार आते रहते हैं, वेद का वाक् क्या कहता है? वेद के मन्त्र क्या कहते हैं? उसी आधार पर हम अपने विचारों को व्यक्त करते रहते हैं। आज का विचार आध्यात्मिकवाद की एक भूमिका हमनें बनाई हैं यह भूमिका कल शेष चर्चा करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन। महानन्द जी अच्छा भगवन्!

३ ब्रह्मचर्य से प्रभु दर्शन २३ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में परमपिता परमात्मा, की महती का वर्णन हो रहा है। जिसके ऊपर मानव, परम्परागतों से ही, बेटा! अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहा है क्या वह जड़वत और चैतन्यवत क्या है?

चेतना का अभिप्रायः

तो इसके सन्दर्भ में, मानव ने अपनी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी है, जैसे हमारे यहाँ जड़वत और चैतन्यवत दोनों का एक प्रसंग बना हुआ है और मानव उसके ऊपर उड़ाने उड़ता रहता है। जैसे मानव जड़ और एक चैतन्य दोनों वस्तु, इस संसार की प्रतिभा बन करके रहता है, जैसे मुनिवरों! देखो, आज हम देखो, जड़वत की विवेचना करते हैं, तो जितना भी जड़वत है, जो ज्ञान से शून्य है, प्रयत्न से शून्य है मानो वही जड़वत मानी गई और जहाँ मुनिवरों! देखो, आत्मीयता का प्रसंग, चेतना का प्रसंग आता है। प्रत्येक मानव बेटा! चेतना की वार्त्ता प्रगट करता रहा है और चेतना के लिए मानव भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहा है, जैसे मुनिवरों! देखो, मानव ब्रह्मणां ब्रहे व्रत्यं आत्मां कृत्यं आत्मा प्रह्वा व्रीहि सम्भवा, वेद का यह वाक् यह कहता है कि परम्परागतों से ही, मानवीयतव अपने में चेतना में रत्त होता रहा है, और चेतना ही मानो देखो, एक मानव को पथिक बनाती है, उज्ज्वल बनाती है और उज्ज्वलता में उसे ले जाती है जैसे मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ चेतना का अभिप्रायः है। चेतना कहते हैं जिसमें ज्ञान हो और प्रयत्न हो और उसके साथ उमसें गति हो परन्तु कहीं-कहीं ऐसा दृष्टिपात किया गया है, क्या चेतना मानो देखो, हमें कहीं गति दृष्टिपात आ रही है तो प्रायः उसको चेतना दृष्टिपात कर लेता है परन्तु चेतना का अभिप्रायः यह है कि जहाँ गति है, ज्ञान और प्रयत्न है उसका नामोकरण हमारे यहाँ चेतना में स्वीकार किया गया है मानो देखो, जड़वत में गति भी है, और उसमें नृत्त भी होता रहता है, परन्तु यदि वह ज्ञान और प्रयत्न से शून्य है, तो मानो कि उसमें जड़वत मानी गई है। वह जड़वत सृष्टि कहलाती है। तो मुनिवरों! देखो, उसके सम्बन्ध में, बहुत-सा विचार-विनिमय होता रहा है, बहुत-सी विचार धाराएं समीप आती रहती है, परन्तु देखो, हम परम्परागतों चेतना के सम्बन्ध में, इसे अपने में लाना चाहता है मानव के हृदय में मानो देखो, अभ्योदय होता रहता है। और ज्ञान और प्रयत्न यह मानवीय धर्म कहलाता है बेटा! यह मनन करने योग्य धर्म है, जिसके ऊपर ज्ञान और प्रयत्न है। वह आत्मा का मानो देखो, गुणाधानम चेतना वृत रहता है, वही मानो देखो, उसका धर्म है मानवीयता कहलाती है, उसके गर्भ में बेटा! मानवीयता निहित रहती है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष तुम्हें विवेचना देने नही आया हूँ मैं तो कोई व्याख्याता नही हूँ केवल परिचय देने के लिए आते हैं आज का हमारा वेदमन्त्र, जहाँ यह उच्चारण कर रहा है क्या जहाँ जड़ और चेतना की वार्त्ता चेतना को भी जानना है जड़वत को भी जानना है, जब तक मानव जड़वत को नही जानेगा, तो चेतना का उसे भान नही हो सकता। मानो जड़वत को हमें जानना. जिससे पदार्थों में हमारे में नाना प्रकार की देखो, कृतियों में देखो, रत्त होती रहती है, और उसमें वह रत्त रहता है, मानो उसी के आश्रित हो जाता है तो वह जड़वत होते हुए परन्तु चेतना उसमें रत्त हो जाता है। उसके मूल में यह कि वह जड़वत को नही जानता। अपने को चेतना को

स्वीकार करता रहता है परन्तु जड़ को स्वीकार नही कर रहा है, क्या तू जड़ में मानो तू आश्रित हो गया है, जड़ के आश्रित हो गया है उस जड़वत को भी तो जानने का प्रयास कर, जिसमें तू आश्रित हो गया है। मेरे प्यारे! देखो, नाना प्रकार के जो मानो छिद्र हैं, रसना के मानो देखो, वृत है तू उसके आँगन में मानो परिणत रहता है नाना प्रकार के मानो देखो, तमोगुणी पदार्थों को पान करने वाला, मेरे पुत्रों! देखो, वह पदार्थ जड़ हैं, परन्तु चेतना ऐसी गति ब्रह्मे उस चेतना में रत्त हो करके वे जड़वत मानो चेतना के स्वरूप को, हमारे यहाँ भी मुनिवरों! देखो, वृत कराता रहता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार क्या, मैं तुम्हें एक वाक् को, यह उच्चारण कर रहा हूँ क्या प्रत्येक मानव धर्म और मानवीयता की चर्चा, प्रायः हमारे यहाँ होती रहती है। तो चेतना के भान एक मानवीय चेतना यह कहती है जिसको वह जानता रहता है, परन्तु जड़ को जानना ही, चेतना के स्वरूप में हमें परिणत होना है। जब तक मानो देखो, हम जड़वत को नही जानेंगे, तो आओ, मुनिवरों! मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जान चाहता हूँ जहा मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वामित्र और देखो, वह सुदेनकेतु का जहाँ विचार-विनिमय हो रहा था। जहाँ विज्ञानवेत्ता और मुनिवरों! आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता अपने में रत्त रहे हैं। तो विज्ञानवेत्ता अपने स्वरूप में रत्त है और मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जो आत्मीयतव में रत्त रहने वाला है, वह उसकी चर्चा कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होता हुआ, मानव अपने में मानवीयता की चर्चा कर रहा है। तो वह कहता है कि जड़वत के परमाणुओं को जानने वाला, उनसे सुगठित और वह एक मानो देखो, एक पिण्डाकार बन करके वह एक स्थूल के रूप में दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह केवल वह जड़वत है और जड़वत स्थूल के रूप में दृष्टिपात आ रहा है, परन्तु जब पिण्ड से चेतना का मानो देखो, आत्मीयता का उसमें वृत होता है, तो मुनिवरों! देखो, उसमें वह रत्त हो जाता है। तो विचार आता रहता है क्या हम ब्रह्मचरी सम्भवा लोकाम् प्रत्येक मानव देखो, बेटा! देखो, ब्रह्मचर्य की वृत्तियों में आभा प्रगट करता रहता है। तो सुदेनकेतु ने कहा कि-प्रभु! यह ब्रह्मचर्य क्या है? हम ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में बहुत-सा प्रसंग हमारे समीप आता रहता है, हम ब्रह्मचर्य को जान करके ही, हम ब्रह्मवर्चोसि बन सकते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय ऋषि ने यह वाक्, जब श्रवण कर लिए, श्रवण करने के पश्चात भवितां ब्रह्मा भवितां ब्रह्मचरिष्यामि, मेरे प्यारे! देखो, ऋषि वर्णन करता है, कि ब्रह्मचारी वह है, जो ब्रह्म उस परमपिता परमात्मा की महती को जान लेता है, और महती को जानने वाला ही, ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, महती क्या है? महती उसे कहते हैं, जिसको जान करके मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मवर्चोसि का पालन करता है।

प्रवृति में नम्रता

मेरे प्यारे! विचारता है वह जो महती है अनुपमता है वह प्रभु की रूप में दृष्टिपात आती है। मेरे प्यारे! वह जान लेता है कि मैं ब्रह्मचारी हूँ। ब्रह्मचारी किसे कहते हैं? एक मेरी प्यारी माता कहती है कि ब्रह्मचरिष्यामि है मानो एक कहता है कि मैं वीरांगना के रूप में रत्त हूँ एक मेरी पुत्री जो ब्रह्मवर्चोसि का पालन कर रही है वह कहती है कि मैं भी ब्रह्मवर्चोसि हूँ तो मेरे प्यारे! देखो, यह ब्रह्मवर्चोसि है क्या? इसके ऊपर हमारे यहाँ एक बड़ा अनुपम वृत और विचार-विनिमय होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने एक महर्षि विश्वामित्र ने अपने में वर्णन करते हुए कहा, क्या जब मैं मानो मेरे हृदय में यह पिपासा जागरूक हुई कि मुझे ब्रह्मवेत्ता बनना है, तो ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए मानो देखो, मैंने बहुत-सा प्रयास किया, मानो देखो, तपस्या की हैं नाना प्रकार के मैंने यागों का वृत किया है, और भी नाना प्रकार का अनुसन्धान किया, परन्तु जब तक मानव देखो, मैं वशिष्ठ मुनि महाराज की मुझे मानो देखो, एक वृत्तियों में निर्वाचितता न हो तो मैं उससे वंचित रहता। परन्तु देखो, जब निर्वाचन हुआ और

निर्वाचन में भी राष्ट्रीयता हो परन्तु देखो, तप है, याग हो रहा है देखो, वह प्राण और मन का मिलन हो रहा है, सम्बोधित किया जा रहा है परन्तु जब तक प्रवृत्ति में देखो, प्रवृत्ति में देखो, जब तक नम्र जब तक मानो देखो, परमात्मा के इस ब्रह्म के गणुं को हम अपने में धारण नही कर सकते, जब तक मुनिवरों! देखो, वह ब्रह्मचारी और ब्रह्मवेत्ता नही बन सकता। मानो देखो, एक ही सूत्र के दो मनके रहे हैं, वही ब्रह्मचारी है, वही ब्रह्मवेत्ता है।

ब्रह्मचारी की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि अपने में बहुत-सी उड़ाने उड़ रहा है विचार दे रहा है कि ब्रह्म का दे रहा है सम्भूति दे रहा है तो मेरे पुत्रों! ऋषि जब इस प्रकार की विवेचना कर रहा है, तो ऋषि ने कहा हे, ऋषिम्ब्रहे हे वाचन्नम ब्रीहि मानो देखो, मेरे विचार में तो यह आ रहा है क्या वह जो ब्रह्मवर्चोसि है ब्रह्मचारी कौन है? यह प्रसंग तुम्हारा बना रहा है। ब्रह्मचारी वह कहलाता है जो मानो देखो, प्रत्येक परमाणु के स्वरूप को जानता है, प्रत्येक परमाणु के स्वरूप को कैसे जाना है, जैसे हमारे यहाँ प्राण की गति है, और प्राण मानो देखो, वह अशुद्ध परमाणु शुद्ध परमाणुओं को दोनों का गति दे रहा है, और वह ब्रह्मचारी है, जो ज्ञान के द्वारा वेद का मन्त्र उसके समीप है, और वेद के मन्त्र को ले करके वह अन्वेषण कर रहा है, अन्वेषण करता हुआ उन परमाणुओं के ऊपर अनुसन्धान कर रहा है। जिन परमाणुओं से मानव अशोभनीय हो जाता है, और शोभनीय भी बन जाता है। उन परमाणुओं को एकत्रित करता हुआ मानो देखो, ब्रह्म की आभा में रत्त हो जाता है, और देखो, नम्रता जब तक नही आती तो क्योंकि वे परमपिता परमात्मा नम्र है। वह ज्ञानी है। वह मानो देखो, वह विवेक युक्त है, तो इसीलिए जब तक हमारे वह गुण न आ जाएं तब तक देखो, हम परमपिता परमात्मा की सृष्टि में ब्रह्मवेत्ता नही कहलाते। तो ब्रह्मवेत्ता का अभिप्रायः क्या है ब्रह्मवेत्ता कहते उसे हैं, जो प्रभु की सृष्टि को जानने वाला हो, अंगों और उपांगों से जान करके और अंग देखो, उसमें शुद्ध और अशुद्ध दोनों की प्रतिभा को बना करके, वह मानो देखो, अशुद्ध को दूरी करता है, शुद्ध चिन्तन को चिन्तनता में लाता है, वह मानो देखो, प्रकाश में रत्त हो जाता है, तो वह मानो देखो, ब्रह्मचारी कहलाता है, एक तो ब्रह्मचारी की यह विवेचना।

ब्रह्मवेत्ता का द्वितीय प्रकार

द्वितीय ब्रह्मचारी की विवेचना यह है क्या जो अपने में मानो देखो, बल युक्त रहता है और बलयुक्त रह करके उसमें नाना प्रकार के ध्यान, धारणा समाधि में रत्त रहता है मानो ध्यानावस्थित भी होता है, धारणा भी बना लेता है, धारमं ब्रह्मे मानो देखो, धारणा ध्यान समाधि ध्याना सुस्तं ब्रह्मे वह समाधिष्ट हो जाता है। समाधिष्ट हो करके ही मानो देखो, वह संसार के स्वरूप में रत्त नही होता। तो वह मानो देखो, जब समाधिष्ट हो जाता है तो उसका जो प्रत्येक क्षण है, प्रत्येक जो क्षण है वह वायुमण्डल में मानो देखो, ब्रहा वह उसमें ओत-प्रोत हो करके, ब्रह्म में निष्ठ हो जाता है। वह समाधिष्ट होता हुआ, धारणा ध्यान समाधियां में रत्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मचर्य की विवेचना यह है।

ब्रह्मचारी का तृतीय प्रकार

तीसरे ब्रह्मचर्य की जो विवेचना है। वह यह है कि जितना भी यह जगत हमें दृष्टिपात आता है, चाहे वह परोक्ष रूप में हैं, चाहे मानो देखो, प्रत्यक्ष रूप में हैं अहा, उसकी आभा में जब वह रत्त हो जाता है और वह मानो देखो, प्राण और मन दोनों को जानना चाहता है यह मन क्या है? यह प्राण क्या है? तो वेद का आचार्य यह कहता है ये दोनों ही जड़वत हैं, यह किसी के सन्निधान मात्र से अपने स्वरूप में मानो द्वितीय स्वरूप को ले करके अपने में ही अपनेपन की आभा में यह रत्त हमें दृष्टिपात होते हैं मानो दृष्टि प्रहा वह आभा में रत्त हो रहे है तो विचार

आता है, इस सन्दर्भ में, क्या मानो देखो, वह ब्रह्मचारी अप्रतं मेरे प्यारे! देखो, जो परमाणुओं की रक्षा करता हुआ, बलयुक्त बलिष्ठ बन करके और वह अपने बल का सदुपयोग करता हुआ मानो देखो, वह अपने में महान बन जाता है, सदुपयोग कैसे होता है, उसी ब्रह्मचर्य को चिन्तन में लाता है, प्राण के चिन्तन में चिन्तित होता है, मन के चिन्तन में चिन्तित होता है, यह जो मानो देखो, मन है यह प्रकृति का सूक्ष्मतम एक तन्तु कहा जाता है, परन्तु यह जो प्राण है, यह ब्रह्मचेतना मानो देखो, गति को ले करके और यह प्राणां ब्रह्मे यह आत्मा के सन्निधान मात्र से मानो देखो, इस आभा में रत्त होता है, उस परमाणुवाद को अपने में लाता है जिसको मानो देखो, गतिवान बन करके वह यदि केवल्य प्राण को लिया जाता है, तो वह भी ज्ञान से शून्य रह जाता है, ज्ञान से शून्य रहने से यह दोनों ही जड़वत कहे जाते हैं। परन्तु जब इनका सम्पर्क चेतना से होता है, आत्म चेतना से होता है, तो अपने-अपने स्वरूप में मानो रत्त हो करके देखो, यह विभाजन का, यह जगत दृष्टिपात आता है। परन्तु जब दोनों का सन्निधान होता है, जब दोनों का मिलन होता है उस मिलन में यौगिकता है मानो देखो, उस मिलन में ब्रह्मचर्यता दृष्टिपात आ रही है। तो मानो देखो, यह एक ब्रह्मचर्य का स्वरूप कहा जाता है तृतीय।

ब्रह्मचर्य का चतुर्थ स्वरुप

देखो, चतुर्थ जो स्वरूप है ब्रह्मचर्य का कि हम ब्रह्मचारी रह करके, ब्रह्मचारी कैसे रहा जाएं? क्या देखो, वह विद्यमान है एक साधक अपने में विद्यमान हैं, वह प्राण और मन को दोनों को एक सूत्र में लाना चाहता है, तो दोनों मनके एक ही सूत्र में जब पिरोएं जाते हैं तो दोनों मन और प्राण जब एक सूत्र में सूत्रित होते हैं, तो मानो देखो, मानव ऐसे आसन पर विद्यमान हो जाता है, वह साधक क्या मुनिवरों! देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी के लिए तत्पर हो जाता है और विचारता रहता है कि मैं अब निर्भय बन गया हूँ निर्भय बन करके ही मानो देखो, मैंने समष्टि और व्यष्टि को अपने में दृष्टि में पान कर रहा हूँ।

मेरे पुत्रों! यह तुम्हें बड़ा गम्भीर रहस्य साधक अपनी पंक्ति लगा करके विद्यमान होते थे, वह काल मुझे स्मरण आ रहा है, वह जिज्ञासा की जाती तो मानो देखो, यह विषय वह कहलाता है आज हमें गम्भीर रहस्यों में विशेषता नही, मानो देखो, केवल विचार इतना है कि ब्रह्मचारी कौन है? ब्रह्मचारी किसे कहते हैं? जो बेटा! देखो, प्रत्येक श्वास को ब्रह्म में पिरो देता है ब्रह्म में कैसे पिरोता है शान्त मुद्रा में मुद्रित है, श्वास की गति चल रही है, प्राण उसमें सम्मिलन कर रहा है, परन्तु देखो, जब दोनों का भान हो करके और ब्रह्म उसका लक्ष्य बना हुआ है। वह अपने लक्ष्य पर जाने के लिए मुनिवरों! देखो, वह प्रत्येक श्वास को वह ब्रह्म सूत्र में पिरो रहा है, ब्रह्मसूत्र में जो पिरोने वाला है, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। बेटा! देखो, ब्रह्मचारी कौन है? मुझे एक वाक् बड़ा स्मरण आता रहता है, जब ब्रह्मचर्य की विवेचना होती है।

मेरे पुत्रों! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में यह वाक् प्रगट भी किया, आज भी मैं उस वाक् को पुनरूक्ति दे सकता हूँ। मानो देखो, जब माता अरूणधती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान रहते तो दोनों यह विचारते रहते कि हमारा जो मानो देखो, हमारा ब्रह्मसूत्र में पिरोना विचार हमारा बड़ा अनिवार्य है। हमारा जो सत्यव्रत है वह मानो देखो, ब्रह्म में पिरोया होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, पति पत्नी जब एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके और अपने ब्रह्मचर्य व्रत को, ब्रह्म सूत्र में पिरोते हैं तो मानो दोनो के मध्य में, ब्रह्म ही दृष्टिपात आता है, जब इस प्रकार के विचार होते हैं, ये मेरा मन्तव्य नही है, इस संसार में ब्रह्मवर्चोसि किसे कहते हैं? जो परमाणुओं की ऊर्ध्वा गति बना करके और ब्रह्म सूत्र में जो पिरोता है, वही तो ब्रह्मचारी कहलाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल तुम्हें ये उच्चारण

कर रहा हूँ कि ब्रह्मचरी कौन है? मानो देखो, ब्रह्मचारी है जो अपनी प्रवृत्तियों को, ब्रह्म के विज्ञान में रत्त कर देता है, इस संसार की जो नाना प्रकार की जो देखो, ध्रुवा को ध्रुवा गति को न जाता हुआ, वह ऊर्ध्वामयी बना रहता है, ऊर्ध्वा किसे कहते हैं? ऊर्ध्वा कहते हैं, जो अपने विचारों को जहाँ भी वह विद्यमान होता है, वही ब्रह्म की चर्चा कर रहा है। मानो देखो, जब वह जागता रहता है, उसे अशुद्धियां नही व्यापती हैं, वह सर्वत्र मानो देखो, ज्ञान और विज्ञान में मुनिवरों! देखो, वह वृत्तियों में वह सबको ब्रह्म ही ब्रह्म दृष्टिपात आता है। ऐसा जो मानव है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। ब्रह्मचर्य की रक्षा में तत्पर हो जाता है। परन्तु देखो, जब भी वह निचले भाग में निचली वृत्तियों में रत्त होता है, वही उसे देखो, इस ब्रह्माण्ड क्या, एक ब्रह्माण्ड न दृष्टिपात आ करके एक नवीन ब्रह्माण्ड की रचना कर लेता है। तो मानो देखो, इस प्रकार, जब मानव अपने में रत्त रहता है, यही वाक् मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालयों में प्रायः ये चर्चा होती रही और यही चर्चा महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के विद्यालयों में, क्या अयोध्या में यह चर्चा होती रही रहती।

अस्तेय

तो विचार क्या मैंने तो बहुत वाक् बहुत समय वर्णन करते हुए कहा था, क्या मानो अपने में मानवतव रहता है तव सम्भवा प्रह्वा वह मानवीयतव को अपने में भान करता रहता है। तो जब यह इस प्रकार का विचार ब्रह्मचर्य का आया कि तो उन्होंने कहा कि अस्तेय किसे कहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, अस्तेय कहते हैं जो मन, कर्म, वचन मानो देखो, तीनों रूप में, हम किसी भी प्रकार की मानो देखो, किसी भी प्रकार का भोग न कर सकें, वह अस्तेय कहलाता है। अस्तेय का अभिप्रायः यह कि मन कर्म वचन ये तीन मात्रा कहलाती हैं, ये तीन प्रकार की वृत्तियाँ कहलाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, मन से विचित्र मानो मन, कर्म और विचार सम्भव ब्रहे मन कर्म और देखो, हम अपने में तनं ब्रह्मे कृतं उसी में रत्त होते चले जायें। मेरे प्यारे! किसी भी प्राणी से, किसी भी मानो देखो, यह हम विचारते रहे, हम जो भी कुछ क्रियाकलाप करते है। वह अशुद्ध करते हैं, तो प्रभु! उसे दृष्टिपात कर रहा है, शुद्ध कार्य कर रहे हैं उसे भी प्रभु दृष्टिपात कर रहा है वह सदैव मानो देखो, सत्य में बना हुआ है जो सत्य में रहता है वह स्वप्न में भी मानो देखो, मिथ्या नही उच्चारण कर रहा है मिथ्या का अभिप्रायः यह है कि तपं ब्रह्मा देखो, असत्यता मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था, महर्षि विश्वामित्र के मानो देखो, इनकी सन्वृत्तियों में प्रायः ऐसा माना गया है, उन्होंने अपना वर्णन करते हुए बेटा! सत्यं ब्रह्मा लोकं ब्रहे जब ब्रह्म को ही सत्य स्वीकार कर लेता है, और हमारी सत्यता मानो देखो, उसमें निहित रहती है, वही सत्य सत्य में रत्त हो करके मेरे प्यारे! देखो, वह सत्य में रत्त रहता है। तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, सत्य सत्यं ब्रह्वे यह जो प्रकृतिवाद, जो रचना है यह सदैव सत्य में रहती है। मेरे प्यारे! देखो, सतोगुण कहलाता है, सत्य में ही देखो, ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, वह सत्य में, जब निर्णय करता है, तो उसमें तीन गुणों का वर्णन आता रहता है, सबसे प्रथम सत्य का निर्णय कहलाता है, सत्य में विष्णु कहलाता है, जो कल्याणकारी है, जो पालन करने वाला है मानो देखो, सत्य में ही विष्णु हैं और देखो, रजोगुण की प्रवृत्तियां आती है वह इसमें स्वयं ब्रह्मा कहलाता है, और तमोगुण में ब्रह्म कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब इन विचारों को व्यक्त करने लगता हूँ, तो मुनिवरों! देखो, वही तो सत्य है, वही मुनिवरों! देखो, सतोगुणी वही रजोगुणी और वही मुनिवरों! देखो, तमोगुणी है। तमोगुण, सतोगुण, रजोगुण तीनों एक ही रूपों में एक ही सूत्र में पिरोएं जाते हैं, यह तीन मनके हैं वह मेरे प्यारे! देखो, वह उत्पति काल, पालनवाद और देखो, शासनवाद में भी सतोगुण विद्यमान रहता है मेरै प्यारे! देखो, सतोगुण में भी सत्य में पालना में भी, सतोगुण में भी रजोगुण है और रजोगुण में भी सतोगुण है और सतोगुण में भी तमोगुण विद्यमान है। मानो देखो, तमोगुण, सतोगुण और रजोगुण ये तीनों एक ही सूत्र में मानो पिरोएं हुए से दृष्टिपात आते हैं। मेरे प्यारे!

आत्मा प्राण और योग

जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में कहा था सत्यमयी मानो देखो, यह जगत है, रचना है और मुनिवरों! देखो, सत्य में ही पालन है, सत्य में ही पालन कहलाता है, पालना करने वाला कौन है? पालना कौन कर रहा है? पालन किसे कहते हैं? विचार आता है कि पालना में मेरे प्यारे! देखो, पालन कौन कर रहा है संसार में देखो, पालन कर रहा है? और न कोई पालन हो रहा है, परन्तु देखो, एक दूसरे में एक दूसरा गुथा हुआ है, एक दूसरे में एक दूसरा प्रतिभासित हो रहा है। तो वही मानो देखो, वही पालना है, वही रजोगुण है, जैसे मानो देखो, हमारे यहाँ, एक विचार आता है कि विष्णु नाम मानो देखो, पालना कर रहा है, विष्णु के पर्यायवाची शब्द बहुत हैं परन्तु इसी प्रकार रजोगुण में शासन हो रहा है, शासन में कटिबद्ध है, और शासन में आत्मा का विषय है, और सतोगुण भी आत्मा का विषय है, और तमोगुण भी मानो देखो, जिसमें सत्य पिरोया हुआ होता है, उसमें भी आत्म सत्य विद्यमान रहता है तो मेरे प्यारे! एक विचार तो तुम्हें गम्भीरता के सूत्र में नही धारण कराना चाहता हूँ। केवल यह है कि क्या मानो देखो, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण यह तीन गुण कहलाते हैं, मानो देखो, तीन गुण एक दूसरे के पूरक हैं, एक दूसरे के पूरक होने से, इसीलिए जो साधक हैं, वह भी है उग्र क्रियावादी है सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण सबको त्याग करके मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता है। मानो देखो, वह तीनों को त्याग देता है रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण इन सबको त्याग करके, वह उपरामता को प्राप्त हो करके शून्य बिन्दु पर अपने को ले जाता है प्रभु का दर्शन करता है, वह आनन्दमयी दर्शनां ब्रह्मे तो प्रभु दर्शन क्या है? प्रत्येक मानव दर्शनों का अभिलाषी रहता है, प्रत्येक मानव के हृदय में दर्शन की बड़ी पिपासी रहती है क्या मैं प्रभु का दर्शन कर रहा हूँ, मैं प्रभु के दर्शन करना चाहता हूँ।

तो मेरे प्यारे देखो, वेद का वाक् कहता है, दर्शनं ब्रह्मा दर्शनं देवत्वं विष्णु दर्शनं ममं ब्रह्मे लोकाम मानो देखो, दर्शन उसके कहते हैं, जो मेरे प्यारे! देखो, मानव समाधिष्ट हो जाता है, जिस प्रवृत्ति में मानव समाधिष्ट हो जाएं, और उसके उपरामता में परिणत हो जाएं, उसका नाम दर्शन कहा जाता है, और विवेचना हो सकती है, एक मानो दर्शनों की विवेचना है, क्या यह जो प्रभु का रचाया हुआ अनुपम जगत है मानो देखो, इस जगत में जब प्रभु एक चेतना का भान करता है, एक चेतना का अनुभव करता है, तो मुनिवरों! देखो, वह भी दर्शन कहलाता है मानो देखो, इसके ऊपर और भी विवेचना की जाती है, मानो जब मानव समाधिष्ट होता है, देखो, योग में परिणत होता हुआ, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण को त्याग करके, जब मानव देखो, एक ही रस हो करके वह मानो देखो, रहस्यमयी जीवन बना हुआ है वह भी बेटा! एक दर्शन कहलाता है। मैं भी दर्शन कर रहा हूँ, मेरे प्यारे! देखो, इसका और भी, इसकी विवेचना की जाती है, क्या मानो देखो, एक कण से ले करके और पर्वतों तक, हिमालय तक मानो देखो, जो भान कर रहा है इसमें मानो देखो, पिण्ड के रूप में भी प्रभु है, और जो गतिवान है, वह उसमें भी प्रभु है, तो मानो देखो, जिस प्रकार दोनों का समन्वय हो जाता है, प्रभु और यह ब्रह्माण्ड जब एक सूत्र में पिरोएं जाते हैं। तो देखो, वह भी हमारे यहाँ चैतन्यं ब्रह्मा कृतं लोकां मेरे प्यारे! देखो, एक उसकी विवेचना यह भी की जा सकती है, क्या मैं दर्शन कर रहा हूँ, मैं पिण्ड में भी दर्शन कर रहा हूँ, इस पिण्ड में देखो, मैं एक पिण्ड में मानो देखो, आपो का दर्शन कर रहा हूँ, यह अग्नि का दर्शन कर रहा हूँ, मैं गुरूतव का दर्शन कर रहा हूँ, और गुरूतव में मानो जो प्रतिक्रियओं को देने वाला है, वह परिमपिता परमात्मा है। तो मैं उसका दर्शन कर रहा हूँ।

तो बेटा! दर्शन की बड़ी विवेचनाएं हैं दर्शनों का बड़ा एक विचित्र स्वरूप माना गया है। प्रत्येक मानव यह कहता है, कि मैं अपने में ही अपनेपन का दर्शन कर रहा हूँ, मानो देखो, वह भी दर्शन है अपनेपन का दर्शन कैसे किया जाता है। बेटा! मानो देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान है वह एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके वह

अपने में दर्शन कर रहा है मानो देखो, कहीं सूचना केन्द्र बना हुआ है, कहीं आज्ञा चक्र बना हुआ है, मानो देखो, प्रत्येक इन्द्रियों में अपना-अपना स्वरूप दृष्टिपात आता रहता है, प्रत्येक इन्द्रियों का जो स्वरूप है, वह ज्ञानेन्द्रियों में प्रवेश हो करके, और ज्ञान रूपी जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है। जब उसको उसमें परिणत करता है तो ज्ञान रूपी जो अग्नि प्रदीप्त हो रही है उसमें जो प्रत्येक इन्द्रियों का विषय साकल्य बन करके देखो, हमें प्राप्त हो रहा है। तो वह भी मानो देखो, साकल्य के रूप में वह साकल्य जब आत्म चेतना में रत्त हो जाता है, तो मानो देखो, यह भी एक प्रकार की देखो, विवेचना मानी गई है। ये विवेचना क्या है? मैं दर्शन कर रहा हूँ, अपनेपन का, अपने में ही दर्शन हो रहा है अपनेपन का दर्शन ही ब्रह्माण्ड में हो रहा है, तो मानो देखो, बेटा! हम प्रभु की जहाँ विवेचना में जाते हैं प्रभु के जहाँ ब्रह्मण्ड में प्रवेश करते हैं, तो बड़ा एक विचित्र ये जगत हमें दृष्टिपात आने लगता है। बेटा! मैं आज बड़े गम्भीर समुद्र में चला गया हूँ, विचार केवल यही आ रहा है कि प्रत्येक वस्तु एक रहस्यमयी में बनी हुई है। बेटा! मैं यह उच्चारण करता रहता हूँ तुम किसी भी रूप में इसका दर्शन करो, परन्तु वह रहस्यमयी अर्थ में देखो, वह मौन हो जाता है, शान्त हो जाता है, उस शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके अपने में अपनेपन में मानो देखो, प्रभु का दर्शन अपनी आभा में आभा का दर्शन देखो, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण में भी अपना ही दर्शन कर रहा है।

तो बेटा! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में, एक वाक् मुझे स्मरण आ रहा है, मेरे प्यारे! सतोयुग का एक काल था, सतोयुग के काल में बेटा! एक ऋषि हुए हैं जिन ऋषि का नाम प्रातुक ऋषि कहलाते थे, वह प्रातुक ऋषि महाराज एक समय वेदों का अध्ययन कर रहे थें, तो प्रातुक ऋषि महाराज वेदों का अध्ययन करते-करते उसके मन में यह आया कि मैं क्या अपने में अपनेपन का दर्शन करूं, तो जब दर्शन करने की पिपासा जागरूक हुई, तो मानो देखो, उन्होंने यह विचारा कि मैं ऊर्ध्वा से दर्शन करूं या ध्रुवा से, दर्शन करूं, मानो देखो, ध्रुवा में तो माता-पिता अपने में दर्शन करते हैं, अपने में संकल्प करके देखो, वीरतव अपने में सूक्ष्म रूप में जब देखो, एक अपना ही दर्शन करते रहते हैं। वह अपना ही दर्शन होता रहता है परन्तु देखो, जब पुत्र पुत्रियों का जन्म होता है तो उसमें भी अपनेपन का ही दर्शन होता रहता है मेरे प्यारे! देखो, यह तो ध्रुवा हुआ, यह तो ध्रुवा में पिपासी चला गया है, पिपासी र्ध्रुवा में चला गया परन्तु जब प्रातुक महाराज ने अपने में अपनेपन के लिए मानो देखो, वेद का अध्ययन करता, वह अध्ययन करता हुआ उन्होंने विचारा कि सतोगुण में ही अपने में ही दर्शन हो रहा है, और रजोगुण भी अपने में ही दर्शन हो रहा है और तमोगुण का दर्शन भी अपने में हैं। मानो देखो, वह कैसे दर्शन हो रहा है? मेरे प्यारे! एक मानव सत्य उच्चारण कर रहा है, वह प्रसन्न हो रहा है परन्तु यदि उसमें इस संसार में, दूसरा प्राणी मानो उसमें अपवाद में लगा हुआ है, परन्तु वह जो उसे सत्य का भान हो रहा है, वह जो सतोगुणी भान हो रहा है, उससे वह प्रसन्न है, और अपने में अपनेपन का दर्शन कर रहा है, न्यायधीश है, मानो देखो, न्याय कर रहा है, अपने आत्म तत्त्व को ले करके न्याय कर रहा है, न्याय मानो देखो, रजोगुणी एक शब्द में देखो, न्याय विद्यमान रहता है, न्याय कर रहा है, न्याय में देखो, अपनी आत्मा के अनूकुल अपने मनों में न्याय कर रहा है। एक मानो देखो, किसी प्रकार अशोभनीय कर्म करता हुआ, उसका वह पश्चाताप कर रहा है, और वह अपने में जब पश्चाताप करता है तो वह कहता है प्रभु से मैं ऐसा क्रियाकलाप पुनः नही कर पाऊंगा। हे-प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए मानो देखो, वह प्रभु का दर्शन, और अपनी मानवीय जो चेतना है, जो पश्चाताप में लगी हुई है, दोंनो का जब समन्वय हो जाता है, तो मानो देखो, उसमें एक विचित्रता आ जाती है।

वह अपने में अपनेपन का दर्शन हो रहा है, तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने दर्शन किया दर्शन करके उसके पश्चात रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण अपना दर्शन किया, और उसके पश्चात उस संसार को त्याग करके दर्शन करता हुआ, अपने में मानो देखो, प्रभु का दर्शन, क्योंकि हमारे में इस मानव शरीर में ही, एक मानवीय दर्शनों में

एक वाक् आया है सम्भवा ब्रह्मणे लोकां वाचन्नं ब्रीहि व्रताः वेद का वाक् कहता है कि जब वह दर्शन करने के लिए आगे चला, उन्होंने गति की, तो मानो देखो, प्रभु एक-एक कण-कण में जो व्याप्त है, एक-एक शरीर के कण-कण में आत्म चेतना जो व्याप्त है दोनों के स्वरूप का मुनिवरों! देखो, जैसे हृदय और हृदय से अमृतं मेरे प्यारे! देखो, हृदय में हृदय का दर्शन होता रहता है, ऐसे ही प्रभु का जगत देखो, यह जगत बाह्य जगत प्रभु का हृदय है, और मानव का आन्तरिक जो हृदय है, जिसमें इन्द्रियाँ समावेश हो जाती है, जब दोनों हृदय एक सूत्र में सूत्रित हो जाते हैं, हृदय से हृदय में मिलान तो प्रभु! का दर्शन तो मानो देखो, स्वतः हो रहा है। आत्म तत्त्व में प्रभु का दर्शन हो रहा है। और वह प्रभु को अपने में दृष्टिपात कर रहा है। अपने में ही मानो देखो, अपनेपन का भान हो रहा है, क्योंकि-प्रभु! दिव्यता में रहने वाले हैं।

तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष विवेचना देखो, विचार देने नही आया हूँ, केवल देखो, संक्षिप्त परिचय देखो, यह परिचय है, संक्षिप्त परिचय है, विचार तो इसके ऊपर हम कल ही प्रगट करेंगें, आज का विचार तो केवल यह है, कि हमारा जो जीवन है, मानो देखो, उस प्रभु का जो दर्शन है, यह दर्शन होता रहता है जो मानो इस प्रकृतिवाद से ऊर्ध्वा में गति करता है, उसे मानो प्रभु का दर्शन होता है, परन्तु वह दर्शन को यह कहे कि दर्शन कैसा है, कितने आकार वाला है, वह सब रहस्य में बना हुआ है, वह सर्वत्र एक रहस्य में बना हुआ है, तो आज मैं बेटा! विशेष चर्चा न देता हुआ तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ, क्या प्रभु की महिमा को जानते हुए इए सागर से पार होने का प्रयास करो मानो देखो, प्रभु हमें अग्रणीय है। प्रभु एक महानता में लगा हुआ है, तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने अपने में अपनेपन का भान करते हुए और आभा में रत्त होते हुए बेटा! इस सागर से मानव प्रयास करता रहा है, और प्रयास करता हुआ अपनी प्रतिभा में रत्त होता है मुनिवरों! देखो, प्रभु अमृतं अमृतां वेदाः अमृतं ब्रहे मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः यह है, कि हम परमपिता परमात्मा की महती को अपने में धारण करते हुए अपने में लाते हुए मुनिवरों! देखो, यह आज का विचार यह समाप्त की हम प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं, मेरे प्यारे! देखो, प्रभु जड़वत में और चैतन्यवत में दोनो में ही मानो देखो, वह विद्यमान है, जो साधक बनना चाहता है, प्रभु के समीप या अपनेपन में जाना चाहता है, तो इस मानो जड़वत को और चेतनावत को दोनों को जानना होगा एक मानव यह कहे कि मैं चेतना को जानना चाहता हूँ। मानो जड़तव को मैं जानना चाहता हूँ। तो वह नेत्रों से हीन बन जाता है, ज्ञान के नेत्रों से हीन बन जाएगा। इसीलिए संसार में जिस वस्तु को जानों उसको क्रिया में लाने का प्रयास करो, और जो क्रिया में लाता है, मानो देखो, वही तो उसको जान करके अपनेपन की प्रतिभा में रत्त हो जाता है तो यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह क्या प्रत्येक मानव और प्रत्येक देवतव को प्रत्येक मानव देखो, अपनी आभा में रत्त होते हुए जड़ और चेतन को दोनों को जानना होगा, और यदि जड़ को नही जानोगे, चेतना को जानोगे, तो मानो देखो, तुम नेत्रों से हीन बन जाओगे। इसीलिए क्रियात्मक जीवन को बनाना और ब्रह्मचर्य को अपने में धारण करना ब्रह्मचर्य कहते हैं, जो मानो एक-एक श्वास को ब्रह्म में पिरोने वाला हो, वही ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वा गति बनाता है। वही ब्रह्म में मानो देखो, दर्शनों में रत्त हो जाता है, तो आज का विचार यह समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, और परमपिता परमात्मा के रचाए हुए ब्रह्माण्ड को अपने में ही दृष्टिपात करते हुए इस सागर से पार हो जायें।

४ प्राण प्रतिष्ठा २४ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिस पवित्र वेदवाणी का प्रसारण किया, आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन कर रहा था। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं, और यह जो ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये मानो उस परमपिता परमात्मा का एक नृत्त हो रहा है यह ब्रह्माण्ड उसका एक नृत्त है, और वह नृत कर रहा है, और यह अपने में गतिशील हो रहा है तो यह ब्रह्माण्ड हमें गतिशील दृष्टिपात आता है तो परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसका अनन्तमयी जो ब्रह्माण्ड हैं और ब्रह्माण्ड में जो यह अनन्तमयी जो विज्ञान है यह प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है क्योंकि समाधिष्ट महापुरूषों ने, जिन्होंने एकाग्र प्रवृत्ति को करने के पश्चात, उस परमपिता परमात्मा की महती को मापना प्रारम्भ किया। तो मानो वह मापन करता हुआ, बहुत दूरी चला जाता है। और ऐसी महान आभा में रत्त हो जाता है, कि जहाँ उसे परमानन्द की प्राप्ति होने लगती है। परन्तु जहाँ हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा है, वहाँ आज का वेदमन्त्र कह रहा था यज्ञनं ब्रह्मं ब्रहे कृतं ब्रहे वृताः मानो ये जो संसार हैं, यह एक प्रकार की यज्ञशाला है, और प्रत्येक मानव, इस यज्ञशाला में विज्ञानमयी विराजमान हो करके दोनों प्रकार की विज्ञानशालाओं में रत्त होता रहा है, क्योंकि यज्ञशाला के पश्चात विज्ञानशाला में रत्त होता है।

तो इसीलिए हमारा वेदमन्त्र कहता है कि हे मानव! तू याज्ञिक बन, और कैसा याज्ञिक बन जिस याग को करने के पश्चात तेरे आत्म तत्त्व का उत्थान हो। तू आत्मा को जानने वाला बन, क्योंकि ये जो याग है यह आत्मा का आभूषण है आत्मा का भोज्य है। जैसे मानो देखो, माता का आभूषण, उसकी सौन्दर्यता नही है मानो देखो, उसके हृदय की जो वेदना है हृदय से जो ज्ञान का सौन्दर्य है, जब वह उदगार उद्गीत गाने लगती है, तो माता का सौन्दर्य उसकी वाणी, ज्ञान और चरित्र में निहित होता है। तो मानो इसी प्रकार, हमें अपने में सौन्दर्यतव में रत्त होना है। तो यह उसका याग है, उस याग को करना हमारा कर्तव्य कहलाता है, क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से क्या सृष्टि के प्रारम्भ से याग में निहित रहा है, चाहे वह भौतिक याग है, चाहे वह आध्यात्मिक याग है, चाहे वह मानो देखो, अणु और परमाणुओं का मिलान मिलाता रहता हो, वह याज्ञिक है। तो सृष्टि के प्रारम्भ में मानव किसी न किसी याग में लगा हुआ है, परन्तु विचारता रहता है, कि वह उसका आत्म तत्त्व, आत्म याग कहलाता है। क्योंकि आत्मा से ही तरंगों का प्रादुर्भाव होता है। जो भाव के मानव के समीप आते रहते हैं, वह एक आत्म तत्त्व क्या, आत्मा के भाव है वह ज्ञान और प्रयत्न से निहित हैं, तो उनमें मानव को रत्त होना है।

तो आज मैं मुनिवरों! आज इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नही दुंगा केवल तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जिस क्षेत्र में मानव भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहता है, कहीं मानव यह उड़ान उड़ता है कि मृत्यु न होनी चाहिए, कही मानव यह विचारता है कि मृत्यु क्या है जो नही होनी चाहिए? तो भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों में, मानव गमन करता रहता है। परन्तु एक मानो यह विचार रहा है कि मानो मैं बहुत ऊर्ध्वा में, इस ब्रह्माण्ड को मापना चाहता हूँ। परन्तु वह मापता रहता है कहीं विचारों से मापता है, कहीं विज्ञान के माध्यम से मापता रहता है, तो मेरे प्यारे! यह विचार बड़ा विचित्रतव में परिणात होता रहता है, प्रत्येक मानव योग की चर्चा कर रहा है, हमारे यहाँ योग की प्रतिभा, योग की जो प्रतिभाषिता है वह यह क्या मानव परमात्मा के समीप जाना चाहता है, वह संसार में नाना प्रकार के क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है, रत्त होने के पश्चात वह संसार को क्रियाकलापों से वह मानो उपराम होता है। तो यह विचारता है कि तू योग में, परमात्मा से मिलन कर तो परमात्मा से मिलन होने की उसकी बलवती जब इच्छा जागरूक हो जाती है, तो वही मानव, योग में प्रवेश करने के लिए तत्पर हो जाता है।

परन्तु मैं कई समय से पुत्रों! यह वर्णन कर रहा हूँ, कि जब तक हम संसार को नही जानेंगें, और संसार का अन्तर्हृदय से समन्वय नही हो जाता तब तक हम योगी नही बन पाते। परमात्मा से मिलन नही हो पाता, परमात्मा से मिलन जब होता है जबकि संसार के नाना रूप से त्याग करके अपने को वह स्वीकार कर लेता है, तो वह मानव, इस परमपिता परमात्मा से अपना मिलन करता है, मानो ऐसे आत्मा की इच्छा क्यो उत्पन्न होती है? इस मिलन की इच्छा ही तो होती है, यह प्रसंग हमारे प्रायः ऋषि-मुनियों में प्रायः होता रहा है महर्षि विश्वामित्र के हृदय में, वशिष्ठ मुनि महाराज के हृदयों में प्रायः विचारधाराओं का ऊर्ध्वा में गमन होना और उदबुद्ध होना ही स्वाभाविकतव माना गया है। मानो परमात्मा से मिलन होने की इच्छा इसीलिए होती है, क्या यह जो मानव का शरीर है यह प्रकृतितव है यह प्रकृतितव है इसमें जो चेतना है वह पंच महाभूतों की एकता में न रह करके, जो मानो पंच महाभूतों में गति वन्दनं मानो चेतना की जो स्रोत आ रहा है, उस स्रोत को अपने में ध्यानां ब्रह्मे उस स्रोत के लिए प्रायः मानव की प्रबल इच्छा बनी रहती है। क्या मैं इस स्रोत को जानना चाहता हूँ, उसमें प्रवेश करना चाहता हूँ मुनिवरों! यह इच्छा क्योंकि कि मानव का शरीर पिण्ड रूप में हैं, और परमात्मा का यह जगत महापिण्ड रूप में हमें दृष्टिपात आ रहा है, तो महा पिण्ड भी मानव से देखो, अपने में मानो इच्छा बनी रहती है, महा ब्रह्माण्ड की जब इच्छा बनती है, तो इस मानो सूक्ष्म ब्रह्माण्ड में वह कल्पना करने लगता है, वह विचारने लगता है, मानो देखो, एक दूसरे से मिलन करने लगता है।

तो विचार आता है कि इस व्यापकवाद में अति ब्रह्माण्ड में अति मानवता की कल्पना करता हुआ, मानो देखो, उस ब्रह्माण्ड के स्वरूप में वह रत्त हो जाता है, परिणाम यह होता है, कि वह व्यापकवाद बन गया, व्यापकवाद से जब और भी गम्भीरता से मनन और चिन्तन करता है, तो उसे मानो तीव्र इच्छा हो जाती है, तीव्र गतियां प्रबल हो जाती हैं, जैसे मानो देखो, माता अपने पुत्र के लिए व्याकुल हो जाती है, परन्तु जब उसे तीव्रता में प्रवेश हो जाती है माता, तो मानो देखो, उसके पुत्रों सम्भवा वह माता देखो, पुत्रों! के लिए सदैव प्रबलता में प्रबल होती है, जब उसका उत्कट इच्छा इतनी बलवती हो जाती है, तो मानो उग्र क्रिया में प्रवेश करके ही मानो देखो, अपने में, अपने रूप का वह दर्शन करने के लिए तत्पर हो जाती है।

योग

तो इसी प्रकार परमपिता परमात्मा का वह दर्शन करना चाहता है, जो संसार के नाना अव्ययों से वह घिरा हुआ वह दृष्टिपात आता है, परन्तु देखो, मैं योग की चर्चा करने के लिए विशेष तुम्हें विवेचना तो नही दूंगा, परन्तु केवल यह कि योग क्या है? जो मानव योग में प्रवेश करना चाहता है, मानो देखो, योग कहते हैं, एक दूसरे मिलन को एक दूसरी प्रतिभा का मिलन होना ही मानो देखो, वह योगश्चः कहा जाता है। जहाँ प्रवृत्तियों का मानो अनुशासन होता है, जहाँ प्रवृत्तियों का मानो जहाँ अनुशासन हुआ तो मुनिवरों! देखो, प्रवृत्ति जब एक सूत्र में पिरोयी जाती है, तो माला बन जाती है, माला कैसे बनती है? पुत्रों! मैंने कई कालों में वर्णन भी कराया है, आज भी मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ बेटा! एक दूसरा मानव एक दूसरा प्राणी से मिलन करके मानो हर्ष ध्वनि कर रहा है, इसी प्रकार हमारे इस मानव शरीर में दस प्राण है, जब प्राण एक दूसरे से मिलन करता है, तो वह भी हर्ष ध्वनियां उत्पन्न हो जाती हैं, मानो देखो, वह मिलन कैसे होता है, यह देखो, बेटा! बड़ा विचार का विषय है और क्रियात्मकता का विषय कहलाता है। जब मानव क्रियात्मकता में रत्त हो जाता है देखो, जब हम अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा मानो उनके चरणो में ओत-प्रोत हो करके वह चिन्तन और मनन करते रहते थे, और यह प्रश्न करते कि-प्रभु! आप हमें मानो देखो, प्राणों से निरोध की चर्चा कीजिए। क्योंकि उसमें मानव दर्शन और वह दर्शन क्या कहता है? वेदमन्त्र क्या कहता है? तो पूज्यपाद गुरुदेव अपने चरणों में विद्यमान करते हुए हमें

यह विवेचना करते रहते थे, कि प्राण को अपान में, प्राण को अपान में मानो देखो, अपने में व्रत्यं जो प्राण मानो देखो, नाभि केन्द्र से ऊर्ध्वा में गतिवान हो करके बाह्य जगत में प्रवेश करता है और वह आन्तरिक जगत में ले आता है उस प्राण को अपान में मानो देखो, उसको प्रवेश करता है अपान में कैसे प्रवेश होगा? यह बड़ा विचित्र एक विषय है मानो देखो, जब प्राण अपान का दोनों का जब समन्वय हो जाता है, तो परमाणुवाद की ऊर्ध्वा गति हो जाती है जो प्राण में परमाणु गति कर रहा है वह गति ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाती है, और वह गतिवान बन करके जब ऊर्ध्वा में गमन करता है, तो मानो देखो, परमाणुओं का दोनों ध्रुवा में जाने वाले परमाणु ऊर्ध्वा में जाने वाले परमाणुओं का दोनों का समावेश होने लगता है। मानो देखो, वह जब समान का, व्यान का जब देखो, व्यान का देखो, समान का प्राण और अपान से मिलन होता है, तो तृतीयवाद बन गया त्रिवाद बन गया है। त्रि प्राणों का जब समावेश करता है, समावेश करने वाला, मुनिवरों! वह समान से प्रवेश करता हुआ व्यान का उसमें पुट लगा करके, और मानो देखो, उदान को इसके ऊपर अश्वत जैसे मानो अश्व पर मानव सवार हो जाता है और वह सर्वत्र अंगों को वृत्तों को अपने में धारण करता रहता है इसी प्रकार, वह प्राण और अपान को दोनों को रत्त करता हुआ प्राण को देखो, उदान में उदान को व्यान में उदान को समान में और समान को मानो देखो, प्राण प्राण और प्राण को देखो, उदान में जब वह सम्भवे लोकं प्रह्वा जब वह पांचों प्राणों का जक समन्वय हो जाता है मिलान हो जाता है तो वह प्राणेश्वर बन करके मानो देखो, प्राणतव एक दूसरे में मिलान करके जहाँ प्राण गति कर रहा है बाह्य जगत में आन्तरिक जगत का दोनों का समन्वय हो जाता है और दोनों का जब समन्वय हो गया तो मुनिवरों! देखो, बाह्य जगत एक मानो देखो, पिण्ड में दृष्टिपात आता रहता है और पिण्ड का जगत ब्रह्माण्ड में दृष्टिपात आने लगता है मानो देखो, वह इसमें दृष्टिपात आने वाला मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र जगत को अपने में सान्त्वना में देखो, प्रवेश करके पांचो प्राणों के साकल्य को मानो देखो, वह जो उनके प्राण बने हुए हैं उप जैसे नाग देवदत, धनंजय है यह प्राण भी एक-एक रूप में रत्त हो करके उसमें एक दूसरा एक दूसरे में ओत-प्रोत हो जाता है और ओत-प्रोत हो करके मुनिवरों! देखो, वह पिण्ड रूप में यागेश्वर आत्मवेत्ता आत्मा मानो देखो, शून्यतव में प्रवेश हो गया है। वह शून्यतव में प्रवेश हो करके ब्रह्माण्ड ज्ञान और प्रयत्न को और मानो देखो, मन के रूप में दृष्टिपात आने लगते हैं, ज्ञान और प्रयत्न भी देखो, ज्ञान मन के रूप में और देखो, प्रयत्न प्राण के रूप में गतिवान बन करके, और ज्ञान आत्मा का होता है, जो आत्मा स्वाभाविक गुण ज्ञान और प्रयत्न है, यह उन दोनों में रत्त हो करके मानो देखो, प्राणेश्वर बन करके जहाँ वह प्राण को वह ले जाना चाहता है, योगेश्वर वही वह प्राण चला जाता है, मन चला जाता है, तो जितनी मानसिक रचना है, या जितनी प्राण की गतियां हैं, वह चाहे ध्रुवा में हो चाहे ऊर्ध्वा में हो चाहे व्यान के चाहे प्राण के रूप में हो, चाहे अपान के रूप में हो, चाहे वह समान और व्यान के रूप में क्यों न हो, परन्तु उदान अपने में प्रतिभाषित हो रहा है, मानो एक दूसरे में प्राण जब मानो प्रवेश कर जाता है। तो मानो योगी का जो लघु मस्तिष्क है, उस मस्तिष्क का विराट रूप बन जाता है, और उस मानो देखो, उसका जब विराट रूप बना तो विराट रूप में वह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का दर्शन मानो देखो, उसे लघु मस्तिष्क में दृष्टिपात आता है जैसे मानव देखो, कृतिका का वर्णन हमने बेटा! बहुत पुरातन काल में किया था उस भौतिकता का वर्णन करते हुए अपने में मानो अपनेपन की आभा मानो देखो, वेद की प्रतिभा हमें दृष्टिपात आती रही है, तो प्रायः देखो, लघु मस्तिष्क में वह प्रायः जो उसका दर्शन करता रहा है, ब्रह्माण्ड को मापने लगता है, पृथ्वी के परमाणु को गुरूतव परमाणु को वह मापता रहता है, तरलतव परमाणु को मापता रहता है, और वह तेजोमयी परमाणुओं को अपने में माप करके इन तीनों का एकोकीकरण करते हुए वह वायु के आभा में जहाँ गतिवान होता है। वह गतियो में अपने में गतिवान दृष्टिपात होने लगता है।

आत्मा प्राण और योग

मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना नही दूंगा, विचार केवल संक्षिप्त परिचय देना है, और वह परिचय यह है पुत्रों! सम्भवं ब्रह्मा कृतो लोकां वाचाः मेरे प्यारे! देखो, ये लघु मस्तिष्क में सर्वत्रता का जब दर्शन करने लगता है, तो ब्रह्माण्ड को मापता हुआ यह तीन प्रकार के परमाणु का यह भान करता है मानो देखो, तीन प्रकार का परमाणु वायु गतिवान बनाता है, और अन्तरिक्ष में यह परमाणुवाद गति कर रहा है, यह लघु मस्तिष्क में जब इस प्रकार का दर्शन होता है, तो लघु मस्तिष्क में यह ब्रह्माण्ड को माप लेता है, और ब्रह्माण्ड को मापता हुआ अपने में ब्रह्मण्डतव बन जाता है।

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना नही केवल यह कि मानो देखो, वह ब्रह्माण्ड में जब और ही वृत्ति बन जाती है, तो ये लघु मस्तिष्क से स्वाति ब्रह्मणां ब्रह्वे व्रतं वह मानो देखो, यह वाच मस्तिष्क में प्रवेश करता है वाच मस्तिष्क उसे कहते हैं जहाँ ब्रह्मरन्ध्र अपने में गति करने लगता है ब्रह्मरन्ध्र किसे कहते हैं? देखो, जो शिखा के निचले स्थान में एक चक्र कहलाता है, उसको हमारे यहाँ लघु मस्तिष्क क्या लघु उग्र वाचा उसको ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं और वह ब्रह्मरन्ध्र में मानो देखो, सर्वत्र यह भान होने लगता है, उस ब्रह्मरन्ध्र में मानो देखो, ब्रह्माण्ड की दृष्टिपात करने की एक कुंजी कहलाती है, जिस कुंजी में वह रत्त हो करके वह मानो देखो, लघु मस्तिष्क की प्रतिभा को उसमें पंहुचा करके, और वह श्वेतकेतु मस्तिष्क का निर्माण उसे होने लगता है तो मानो देखो, वह ब्रह्माण्ड को अपने में अपने को ब्रह्माण्ड में वह दृष्टिपात करने लगता है। तो मेरे पुत्रों! विचार केवल यह है कि आज हम विचार ये देते जा रहे हैं, कि हमारा जीवन क्या है? हम परमात्मा कैसे मिलान करते हैं? तो मानो देखो, इसके ऊपर ऋषियों ने एक वाक् कहा, इसका हम अभ्यास कैसें करें? प्राण और अपान को मिलान कैसे करें? लघु मस्तिष्क में कैसे पंहुचे? यह बड़ा विचित्र एक प्रसंग हमारे समीप आता रहता है। तो मानो देखो, ये हमारे यहाँ देखो, प्राणायाम के द्वारा मैंने प्राणायाम की बहुत पुरातन काल से मैं विवेचना करता रहता हूँ प्रायः देखो, प्राणायाम किसे कहते हैं? एक प्राणायाम जिसे हम संकल्पोमयी प्राणायाम कहते हैं संकल्प कहते हैं जैसे सूर्य और चन्द्र दोनो स्वरों में देखो, चन्द्रमा में रस्सावादन है, और सूर्य की आभा में, सूर्य में देखो, वह तेजोमयी है, एक आभा है एक ऊर्ज्वा है मानो वह सत्ता तो बिखरी हुई परन्तु उसका दायित्व सूर्य पर कहलाता है। तो मानो देखो, वह ब्रह्मणां ब्रहे वह संकल्पोमयी प्राणायाम किया जाता है, जो समुद्रों के तटों पर जो मानो नदियों नालाम् (शुद्ध जलों से जो गतिमान हों) के तटों पर किया जाता है इसी प्रकार वह मानो वह गिरि के अंगों में विराजमान हो करके किया जाता है यहाँ प्राण को एक हम संकल्प के द्वारा, चन्द्रमा से सूर्य की ऊर्ध्वा गति बनाते हैं, और सूर्य की हम ध्रुवा गति बनाते हैं, और गति बनाते हुए वह प्रबल करते हुए यहाँ मानो देखो, बडी प्रबल गति जब इसकी गति जब कुम्भक मे उग्र रूपतं मानो देखो, उसमें प्रवेश कर जाती है तो जानो की उसकी ऊर्ध्वा गति प्रारम्भ हो गया है वह ऊर्ध्वा गति में रत्त हो गया है और ऊर्ध्वा गति में जब वह रत्त हो जाता है तो मानो देखो, वह प्राणायाम सिद्ध हो जाता है।

प्राणायाम के सिद्ध होने पर, उसके पश्चात एक प्राणायाम है जिसे बाह्य जगत में शनै-शनै बाह्य जगत में एक मानो फूंक देते हैं और उसे देखो, आन्तरिक जगत में उसे शनै-शनै सिंचन करते हैं और सिंचन करके मानो देखो, वह अपने में बहुत उसमें देखो, उग्र पिपासा उसमें उत्पन्न हो जाती है और उत्पन्न हो करके वह गमन करने लगता है वायु में गमन कर जाता है।

योग का प्रभाव

मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन किया तो मानो देखो, यह योग सिद्ध आत्माएं, परम्परागतों से मानवीय क्षेत्रों में भी आती रही हैं, मानो देखो, उसी आधार पर हमारे यहाँ देखो, हनुमान जी के जीवन में बहुत-सी कृतिकाएं

आती रहती हैं, हनुमान जीवन का जिन्होंने दृष्टिपात किया है, वह प्रायः इसको जानते हैं, वह लघुता कृतिका मानो देखो, इन सर्वत्र दोनों प्रतिक्रियाओं को जानते थे। वह प्राणायाम के द्वारा वायु में गमन भी करते थे, प्राणायाम के द्वारा वह जल को समुद्र के रसातल में भी गमन करते रहते थे, तो मानो देखो, इस प्रकार के कुम्भक, रेचक विस्वसाति नाना प्रकार के प्राणायाम करने वाला योगेश्वर बन जाता है। मैंने तुम्हें कई काल में कहा एक समय बड़ा विचित्र रहा है, संसार में मानो त्रेता के काल में भी रहा है, सतोयुग के काल में भी रहा है, क्या राजा स्वयं मानो देखो, प्राणायाम करने वाले रहे और वह अपनी प्रजा को भी प्राणायाम करने वालों की शिक्षा में अपने में रत्त कराते रहते थे मानो देखो, वह समाज इससे ऊँचा बनता है, जब प्राणायाम करने वाला राजा होता है तो प्रजा उसके अनुसार बरतती है मानो देखो, प्राणायाम करने वाला राजा कैसा हो? मैंने कई काल में तुम्हें देखो, आचार संहिता के सम्बन्ध में, विचार दिया था और वह विचार यही दिया था कि प्राणायाम करने वाला हो प्राणायाम कैसे किया जाता है, प्रातःकालीन रात्रि के प्रथम चरण में वह राजा अपने में विद्यमान हो करके और वह सुगन्ध करता हुआ, विचारों की सुगन्धि दे करके, और वह विचारों की सुगन्धि में रत्त हो करके यह बाह्य जगत की जो सुगन्धि है, और आन्तरिक जो सुगन्धि है इन दोनों का समन्वय करता रहा है। और समन्वय करता हुआ देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाना परन्तु यह प्रसंग होता है, क्या जब राजा स्वयं प्राणायाम करने वाला हो, तो उसे योगी क्यों नही बना जाना चाहिए वह राष्ट्र की प्रणाली में या अनुशासन पद्धति की उसे क्या आवश्यकता है? यह प्रसंग प्रत्येक मानव के हृदय में उत्पन्न होता रहता है। मानो देखो, मैं यह कहता रहता हूँ, क्या राष्ट्र अपने में राष्ट्र केवल देखो, वह होता है, जो योगेश्वर बुद्धिमानों का जगत है, और बुद्धिमानों के जगत में अनुशासन की आवश्यकता नही होती मानो देखो, जो राजा प्राणायाम करने वाला है, उसके यहाँ और स्वयं कला कौशल कर करके अन्न को ग्रहण करता है, और वह जो उसमें प्रवेश करता है। अपने मानो देखो, धारणा, ध्यान, समाधि में रत्त होता है, वह राजा मानो देखो, राष्ट्र को उन्नत कैसे बना सकता है।

तो यह विचार आता है, परन्तु इसके सम्दर्भ में यह कि राजा यदि योगी नही होगा, प्राणायाम करने वाला नही होगा, मन को एकाग्र करने वाला नही होगा, तो वह राष्ट्रीयता को भी ऊँचा नही बना सकता। वह राष्ट्रीयता को ऊँचा इसीलिए नही बना सकता क्योंकि राजा में जब प्राणायाम होगा तो उसमें ब्रह्म ज्ञान होगा, और जब ब्रह्म ज्ञान होता है, तो राष्ट्रीय अपनी प्रजा को वह ब्रह्म ज्ञान का उपदेश दे करके वह राष्ट्र को उन्नत बनाता है जब तक राजा को ब्रह्मज्ञानी नही होता ब्रह्मज्ञानी वह राजा होता जो मृत्यु और मानो देखो, मृत्युंजय कहलाता है जिसे मृत्यु का भय नही होता जो मृत्युंजय कहलाता है। वह राजा है मानो देखो, वह राजा जो प्रत्येक इन्द्रियों पर विजय करने वाला है जो प्रत्येक इन्द्रियों पर विजय करता है वह ज्ञानी है वह विवेकी है, वह योग सिद्ध कहलाता है, परन्तु देखो, जो इन्द्रियों पर जय है वही तो मानो देखो, ब्रह्म ज्ञानी है और वह ब्रह्म ज्ञानी ही देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, और वह ब्रह्म ज्ञानी ही मानो देखो, प्रजा में हिंसा नही हिंसा की प्रवृत्ति को जन्म नही देता वह अहिंसक बन करके वह राष्ट्र और समाज को और मानो देखो, उस ब्रह्म ज्ञान को अपने में धारण करता हुआ, मृत्युंजय बन जाता है।

प्राण प्रतिष्ठा

तो मैं आज विचार इसीलिए दे रहा हूँ पुत्रो! क्या मैं अपने में मानो देखो, इस आभा में जन्म नही दे रहा था विचार केवल यह कि प्राण को अपान मैं अपान को व्यान में, व्यान को समान में, और समान को उदान में, मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार यह प्राण की प्रतिष्ठा होती है प्राण प्रतिष्ठा का नाम ही योगी कहलाता है, जब तक इन प्राण प्रतिक्रियाओं को नही जान पाता, अपने संकल्पोंमयी प्राणायाम के द्वारा अपने मानो देखो, यह जो प्राण

है, यही मन को अपने में रत्त कर लेता है, क्योंकि यही गतिशील बनाता है, यही मनो वृत्तियों में रत्त रहता है यदि प्राण मनोवृत्तियों में नही रहेगा, तो यह प्राण देखो, ज्ञान और प्रयत्न भी मानो देखो, आत्मा का बिम्ब भी इनके समीप नही आयेगा यह स्वतः अपने में धारण नही कर पायेंगें, तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, ज्ञान और प्रयत्न यह आत्मा का जो मौलिक गुण है, यही तो मानो दूसरे रूप में मानवतव प्राणतव कहलाते हैं, और जब यह दोनों एकाग्र हो जाते हैं तो ज्ञान और प्रयत्न के मानो एक सूत्र में आने से मुनिवरों! आत्मा के जो शरीर हैं जैसे स्थूल है, सूक्ष्म है, मानो कारण शरीर है, इन तीनों शरीरों को जानने वाला मेरे प्यारे! देखो, प्रभु का जो मोक्ष का जो द्वार है, या मोक्ष की पगडण्डी है, उसे मानो मुनिवरों! देखो, उसे स्वतः प्राप्त होने लगती है, मेरे प्यारे! उसमें गतिवान बन जाता है, विचार आता रहता है, जब तक मानव अपने में मानवीयता का भान नही कर रहा है, अपनी अन्तरात्मा में देखो, अपने अन्तरात्मा में देखो, जब प्रवेश नही कर रहा है। तभी तक मुनिवरों! देखो, मानव का बाह्य जगत बना हुआ है, और बाह्य जगत अपने में मानो देखो, अपने रूप से मानो देखो, संसार को दृष्टिपात करता रहता है बेटा! मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, मैं मानो देखो, आज तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ, रहा यह कि योग का जो समन्वय है, मानो देखो, जहाँ प्राण को एक दूसरे से मिलान करना है बेटा! यह तो कोई काल था, जब मुझे वह काल स्मरण था, बेटा! देखो, माला नदी के तट पर देखो, कण्व ऋषि के आश्रम में मानो देखो, ऋषि-मुनियों की पंक्ति लगा करती थी, और वह सिद्धजन एक स्थली पर विद्यमान हो करके मानो देखो, रात्रि और दिवस देखो, योगी के लिए दोनों एक ही तुल्य होते हैं, जब उसके हृदय में देखो, प्राणों की प्रतिष्ठा हो जाती है, तो उस प्राण प्रतिष्ठा में उसे ज्ञान रूपी प्रकाश हो जाता है, और ज्ञान रूपी प्रकाश में बेटा! रात्रि और दिवस दोनों एक सूत्र में परिणत हो जाते हैं, वह रात्रि और दिवस मानो देखो, ज्ञान और अज्ञान के रूप में रात्रि दिवस होते हैं, मानो देखो, यह तो सूर्य की आभा में रात्रि आ गई है दिवस आ गया है सम्वतसर बन गएं हैं, मानो देखो, इसी से अहोरात्र बन गएं हैं, परन्तु जब इसी का दूसरा रूप लिया जाता है, क्या मानो देखो, अन्धकार रात्रि है, प्रकाश दिवस है, सूर्य का मिलन होना ही दिवस कहलाता है, परमाणुओं से दिवस वही है, सूर्य का मिलन होता है, मेरे प्यारे! रात्रि वही जहाँ मानो देखो, चन्द्रमा का दिवस ले करके और रात्रि को अपने में धारण करके वह प्रकाशमयी बन जाता है। तो मानो देखो, रात्रि भी प्रकाश है, और यह दिवस भी प्रकाश है, दोनो ही प्रकाश रूप में बेटा! योगी दोनों को एक ही सूत्र में पिरो देता है, मेरे प्यारे! देखो, जब योगेश्वर दोनों को एक रूप में पिरो देता है तो बेटा! वह मानो देखो, प्रभु के जगत में दृष्टिपात करता है, वह संसार के जगत में भी वह प्रकृति के जगत में नही गया है वह म के जगत को त्याग करके, ओ३म् के जगत में आ करके जहाँ प्रकाश है, जहाँ आनन्द है जहाँ मानवीय दर्शन है, जहाँ मानो देखो, रात्रि का क्षय हो जाता है दिवस का उदय हो जाता है।

चित्त का मण्डल

मेरे प्यारे! देखो, रात्रि दिवस के गर्भ में और दिवस मानो देखो, सूर्य के गर्भ में और सूर्य मानो द्यौ के गर्भ में और द्यौ मुनिवरों! देखो, इस मानो देखो, प्रकृतिवाद के ऊर्ध्वा में जो परमात्मा का जो गर्भ है उसमें द्यौ जब प्रवेश हो जाता है तो द्यौ से जब जीवात्मा या मानवतव उसमें जब प्रवेश कर जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, रात्रि अपने में रत्त हो करके और द्यौ को ऊर्ध्वा के परमात्मा के परमात्मा से मिलन करने की प्रवृत्तियों का जन्म हो जाता है मेरे प्यारे! देखो, एक तो यह स्वरूप माना गया है द्वितीय स्वरूप यह कि रात्रि और दिवस मानो देखो, जिसे हम मृत्यु और जीवन कहते हैं मेरे प्यारे! देखो, जीवन की मृत्यु नही हुआ करती है, जीवन की मृत्यु नही होती है क्योंकि जीवन तो सदैव पनपता रहता है मानो देखो, मृत्यु अन्धकार को कहते हैं जीवन प्रकाश को कहते हैं। और वह जीवन सदैव बना रहता है और रात्रि अपने में मानो देखो, अन्धकार में अज्ञान में समाप्त हो जाती है।

आत्मा प्राण और योग

मानो इसीलिए वेद का ऋषि कहता है, हे मानव! जब तुझे ज्ञान हो जाता है, तो मानो देखो, अज्ञान उसमें लुप्त हो जाता है, जैसे सूर्य के उदय होने पर मानो देखो, रात्रि उसके गर्भ में किरणों में रत्त हो है, इसी प्रकार मुनिवरों! जब ज्ञान हो जाता है, अज्ञान के पश्चात विवेक हो जाता है और विवेक के पश्चात जब योग सिद्ध हो जाता है। मेरे प्यारे! प्राण के माध्यम से क्योंकि यह प्राण रात्रि का भी निर्माण कर रहा है, और दिवस का भी निर्माण कर रहा है, यह मानो देखो, मृत्यु का भी निर्माण कर रहा है और जीवन का भी निर्माण कर रहा है, मानो देखो, यह कैसे कर रहा है, प्राण न रहने पर मेरे प्यारे! मृतक बन जाता है, मेरे प्यारे! देखो, ज्ञान और प्रयत्न न रहने पर वह दोनों अपने स्वरूप में आत्मा के स्वरूप में प्रवेश करके मेरे प्यारे! देखो, वह रात्रं ब्रह्मे कृतां सम्भवा दोनो देखो, जब एक दूसरे में रत्त हो जाते हैं, मानो देखो, ज्ञान और प्रयत्न, आत्मा के साथ चले गएं हैं, चित्त के मण्डल में मानो देखो, एकोकी प्राण रह गया है, तो इसको जब अग्नि में दाह कर देते हैं, तो मानो देखो, वह प्राण चला गया परमाणुवाद में रत्त हो गया देखो, प्राण ही मृत्यु है यदि शरीर से देखो, प्राण को निकाल लिया जाएं तो मृत्यु है मानो देखो, आत्म तत्त्व इसमें से सूक्ष्म शरीर वाला आत्मा भी चला गया, तो इसी प्रकार यह मृत्यु और जीवन भी मानो प्राण स्वरूप है, यह प्राण ज्ञान और प्रयत्न प्राण के साथ में आत्मा के साथ में मानो देखो, गमन करता है, तो उस समय चित्त के मण्डल में प्रवेश हो गया है, और चित्यं ब्रह्मणा देखो, चित्त के मण्डल में जो ज्ञान है, प्रतिभा है वही मेरे पुत्रों! देखो, जीवन कहा जाता है तो जीवन की मृत्यु मानो ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के साथ रहता है, वह उसका वास्तविक जीवन है, तो जीवन की मृत्यु नही हुआ करती है। मेरे प्यारे! जब आत्मा चला जाता है, तो ज्ञान और प्रयत्न मानो चित्त का मण्डल इसमें विद्यमान है, वह आत्मा के साथ रहता है आत्मा निकस गया है, शव रह गया है, यही मानो देखो, सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करता है जब इसके आत्मा कारण में चला जाता है, तो ज्ञान और प्रयत्न उसके साथ रहता है। आत्मा के जब यह मोक्ष की पगडण्डी में हृदय अगम्य हो जाता है, तो मानो देखो, यही आत्मा जीवन बन करके रहता है।

आत्मा

तो मेरे प्यारे! देखो, जीवन की मृत्यु नही होती, और देखो, जीवन की मृत्यु नही होती, और अज्ञान की मृत्यु हैं, इस रूप में देखो, हमें दृष्टिपात करना चाहिए। दूसरा स्वरूप इसका और हमारे समीप आता रहता है, मानो देखो, जीवन मृत्यु का दोनों का सम्बन्ध हैं, जीवन की मृत्यु नही है, और मृतं ब्रह्मे देखो, व्रहा सम्भवे मेरे प्यारे! देखो, दूसरा रूप उसका हमारे समीप आता रहता है, क्या मृत्यु मानो देखो, अन्धकार है, क्या जैसे मानो देखो, माता अपने पुत्र के वियोग में व्याकुल हो रही है, और व्याकुल होती हुई वह क्यों व्याकुल हो रही है, क्योंकि उसका जो संकल्प था, वह विनाश को प्राप्त हो गया, वह संकल्प अस्त व्यस्त हो गया है, तो इसीलिए माता व्याकुल हो रही है, मानो देखो, व्याकुल होती हुई कहती है कि मेरा पत्रु नही रहा मेरा पति नही रहा मानो पति कहता है, मेरी पत्नी नही रही और इसी प्रकार वह व्याकुल हो रही है, अपने देखो, रूदन में परिणात हो रहती है परन्तु जब यह विचार आता है, कि वह अज्ञान हैं, अज्ञान किसलिए क्योंकि आत्मा न तो किसी का पुत्र है, न पुत्री है, आत्मा मानो तो मानो एक चेतना है, वह चेतना ज्ञानयुक्त है देखो, प्रयत्न से युक्त रहने वाला आत्मा है, परन्तु देखो, आत्म ब्रह्मे लोकां माता देखो, व्याकुल क्यों हो रही है? केवल स्वार्थ है? पत्नी क्यों व्याकुल है? स्वार्थ है जब मानवीय दर्शन में मानव प्रवेश करता है तो मानो देखो, ज्ञान होने पर और वह ज्ञान हो जाता है किसी काल के पश्चात मानो देखो, मृत्यु को अपने से दूरी कर देता है क्योंकि जीवात्मा का एक मौलिक गुण है वह मृत्यु नही है वह जीवन है इसीलिए जीवन की आगे कल्पना करने लगता है कुछ समय मानो उसका भान होता है कुछ समय अज्ञान रहता है परन्तु देखो, वह आत्मा का जो मानो चेतनामयी जो आत्मा का जो जीवन का एक स्वरूप है वह

उससे तरंगें उत्पन्न हो करके, मानो उसका ज्ञान का करण है और ज्ञान की वृद्धि है, वह जो ज्ञान और अज्ञान का दोनों का जो संघर्ष हो रहा है, मेरे प्यारे! अज्ञान का नाम मृत्यु है, और ज्ञान का नाम प्रकाश है, और प्रकाश ही देखो, उसका जीवन है, मानो देखो, अज्ञान उसकी मृत्यु कहलाती है।

तो बेटा! यह जो बड़ा एक प्रसंग है मानव के समीप यह मैंने तुम्हें पुरातन काल में कहा है क्या संसार में प्रत्येक वस्तु एक रहस्यमय बनी हुई है, मृत्यु भी रहस्यमयी बनी हुई जीवन भी रहस्यमय बना हुआ है, परन्तु मृत्यु का अक्षय हो जाता है, और जीवन सदैव बना रहता है, इसीलिए क्योंकि परमपिता परमात्मा के गर्भ में ये संसार निहित हो रहा है, जैसे माता के गर्भस्थल में एक शिशु का निर्माण होता है, और वह निर्माण होता हुआ देखो, माता के गर्भ में सूक्ष्म सा ब्रह्माण्ड उसमें निहित रहता है, और वह ब्रह्माण्ड मानो देखो, यदि माता उसे ब्रह्माण्ड, उसे स्वीकार करती है ज्ञान और विवेक के द्वारा उसे उत्पन्न करती है तो माता अपने कार्य कलापों को मानो उसमें रत्त हो करके उसमें सफलता को प्राप्त हो जाती है।

प्राण से मन का निरोध

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तो देने नही आया हूँ बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, यह तो विचारों का एक वन है मैं इन वनों में ले जाने के लिए, जब चर्चा हो रही थी बेटा! काण्व ऋषि के यहाँ जब ऋषिवर विद्यमान होते तो बेटा! देखो, वहाँ चर्चाए होती रहती थी और योगेश्वर, प्राणेश्वर प्राण को मिलाने वालों की चर्चाएं, वह क्रिया का विषय है, यह मानो व्याख्यानों का विषय नहीं है यह केवल एक मौन हो करके इसको क्रियात्मकता में किया जाता है, बेटा! देखो, मानव जब इनको कर देता है तो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार के ही उसके समीप आ जाते हैं, जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार जो चित्त के मण्डल में मानो ज्ञान और प्रयत्न के साथ में जो रत्त रहते मानो वह भी साक्षात्कार हो जाते हैं, और उन जन्म-जन्मान्तरों में ये दृष्टिपात कर लेता है सम्भवं ब्रह्मे और ये जब तक समाप्त नही होते, जब तक हम मानो प्राणायाम न करें और मन को एकाग्र कैसे किया जाएं? प्राण के द्वारा, और प्राण ही संसार में एक ऐसा क्रिया वृत्त कहलाता है जिसके मन मानो देखो, वशीभूत हो जाता है, अभ्यस्त होना, प्राण के द्वारा ही मानो देखो, अन्तरिक्ष में गमन करते है जहाँ प्राण के द्वारा लघु मस्तिष्क में प्रवेश करके मुनिवरों! देखो, रेणकेतु मस्तिष्क में चले जाते हैं, रेणकेतु मस्तिष्क में, इस ब्रह्माण्ड का दर्शन करके, इससे उपराम हो करके जैसे मानव के हृदय में मानो देखो, रूप, रस और गन्ध शब्द और देखो, स्पर्श यह सर्वत्र हृदय में इसकी स्थिति रहती है इसी प्रकार मानव की सर्वत्र प्रवृत्तियों की जो आभा है, वह केवल देखो, परमात्मा के हृदय से इस हृदय का मिलन परमात्मा के हृदय से जब अगम्य हो जाता है तो वहाँ मानव का प्रश्न और उत्तर समाप्त हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, इसीलिए मानव को विचारना है मैंने तुम्हें कई काल में बहुत-सी चर्चाएं प्रगट की हैं, आज मैं विशेषता में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ यह तो बड़ा विशाल है मानो देखो, काण्व ऋषि के आश्रम में या देखो, आदि ऋषियों के प्रायः एक एक ब्रह्मचारी को ऊर्ध्वा में देखो, गमन कराते रहते हैं, यह ब्रह्मचरियों का विषय नही हैं देखो, किसी प्रकार से प्राण को दृष्टिपात करते रहें। मुझे स्मरण आता रहता है, जब हम देखो, एक समय अपने पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा तो उनके द्वारा जब गमन किया, तो उन्होंने मस्तिष्क का अध्ययन किया समाधिष्ट हो करके अन्तःकरण को दृष्टिपात किया, और अन्तःकरण में जब योगियों को ये सिद्ध हो जाता है क्या इसका प्राण तो मेरे प्राण के संग गमन कर रहा है तो उसी काल में उसे स्वीकार करके उसे योगाभ्यास, प्राण की प्रतिक्रियाएं, प्राण की प्रतिष्ठा में रत्त रहना। मुझे स्मरण आता रहता है बारह-बाहर वर्षों तक अन्न का ग्रहण नही कराते थे आचार्य जन। और (पुस्तक से) मानो खेचरी मुद्रा और शीतली प्राणायाम के द्वारा वायुमण्डल में जो परमात्मा का

अनूठा जगत है, या ये उच्चारण कर दिया जाएं जो द्यौ है इससे अपनी शक्ति का संचय करते हुए अपने में ग्रहण करते हुए बारह-बारह वर्षों के अनुष्ठान होते थे, मुझे स्मरण आता रहता है, कि महर्षि कागभुषुण्ड जी ने इस प्रकार बारह अनुष्ठान किए थे, वायु से वे अन्न को ग्रहण करते थे, खेचरी मुद्रा से और शीतली मुद्रा में मुद्रित हो करके योगाभ्यास में परिणत होते रहे, और चित्त के मण्डलों को निरोध तभी होता है, जबकि उनका आहार इतना सूक्ष्म बन जाएं कि वह प्राण के द्वारा अन्न को ग्रहण कर के और उस अन्न में तृप्त हो जाएं। वही तो बेटा! योगेश्वर कहलाता है।

बेटा! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, आज मैं ऋषि-मुनियों के क्षेत्रो में तुम्हे ले जाना नही चाहता हूँ, विचार और चिन्तन करना ये मानव का मौलिक गुण कहलाता है, बेटा इसी से प्राणतत्व अपने में रत्त हो करके परमात्मा के दिव्य ब्रह्माण्ड का दर्शन करता है, मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन करते हुए कहा कि आध्यात्मिक और प्राण को संचय करने वाला, प्राणायाम करने वाला योगेश्वर हो जाता है। वह एक ऐसा है, जो लघु मस्तिष्क और रेणकेतु मस्तिष्क में इस ब्रह्माण्ड को लोक-लोकान्तरों की माला को अपने में धारण कर लेता है, और धारण करके मानो उसमें प्रवेश हो जाता है, अन्ततः यह होता है, गणना करता हुआ उसमें रत्त हो करके परमात्मा के ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करके ब्रह्म के हृदय में हृदय का समावेश करता हुआ, माला बना करके अपने में धारण करता है, और प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है, तो योगी बन जाता है, प्राण को मेरी प्यारी माता जानने लगती है, तो महापुरूषों को जन्म देने लगती है, राजा इसे जान जाता है, तो ब्रह्मवेत्ता बन जाता है, राष्ट्र पवित्र बन जाता है, मानो प्रत्येक अपने में मानवीयता का दर्शन करता रहता है, यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि परमात्मा के जगत में हम आए हैं परमात्मा के जगत में आ करके अपनी प्राण प्रतिष्ठा करते चले जाएं प्रभु की जो अनन्तमयी सृष्टि है उसको प्राणायाम के द्वारा जानते चले जाएं वह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

५ वाणी की अग्नि २५ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के गुणों का वर्णन कर रहा है, अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा, मानव के अन्तःकरण को स्पर्श करती रहती है और प्रत्येक मानव के हृदय में, यह प्रायः प्रबल इच्छा बनी रहती है कि हम उस परमपिता परमात्मा जो अग्निमयी स्वरूप है मानो अग्नि उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है, और उसका आयतन माना गया है। तो वह अग्निमयी स्वरूप कहे गएं हैं तो हम उस परमपिता परमात्मा जो अग्निमयी स्वरूप हैं मानो वह विष्णु है, कल्याण करने वाला है, और इस प्रकृति के, एक-एक कण-कण में, जो व्याप्त है, एक-एक परमाणुवाद में जो व्याप्त है, उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसका अनुपम, ज्ञान और विज्ञान इतना नितान्त और इतना महान माना गया है जिसके ऊपर मानव अनुसन्धान करता रहा है और विचारता रहता है, कि मैं परमपिता परमात्मा की जो महती है, अथवा उसकी जो अनन्तता है, उसे मैं भी प्राप्त करता रहूँ। क्योंकि मानव अन्धकार में नही रहना चाहता। प्रत्येक मानव प्रकाश में रहना चाहता है उसमें गमन करना चाहता है। क्योंकि वह अन्धकार को त्यागता रहता है और प्रकाश को ग्रहण करता रहता है तो आज का हमारा वेदमन्त्र, एक बड़ी अनुपम एक उड़ाने उड़ रहा है। हमारे यहां जिस भी काल में दार्शनिकों का समूह एक स्थली पर विद्यमान हुआ है, उसी काल में विज्ञान और मानव दर्शन और मुनिवरों! देखो, यह सृष्टि का जो क्रियाकलाप है, उसके ऊपर मानव ने अध्ययन किया और गम्भीरता से उसको विचारने लगे लगा हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में, एक आकांक्षा बनी हुई है, कि यह संसार क्या है? इसको अपने-अपने माध्यम से मानव मापता रहा है अपने-अपने दृष्टिकोण से इसको मापता रहा है। परन्तु उसके पश्चात भी दार्शनिकों के समूह में विचार आया कि यह संसार क्या है?

तो इस संसार के सम्बन्ध में नाना ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार दिये, परन्तु दार्शनिक तो अपनी आभा में निर्णय दे रहा है, कि यह संसार, जो प्रायः हमे दृष्टिपात आता है, एक प्रकार की विज्ञानशाला के रूप में है। मानो देखो, द्वितीय दार्शनिक कहता है कि नहीं, यह संसार तो यज्ञशाला के रूप में हैं परन्तु देखो, दो प्रसंग प्रायः हमारे अन्तर्हृदयों में बने रहते हैं। कि यह संसार विज्ञानशाला है, और यह संसार यज्ञशाला है। मानो देखो, शाला कहते हैं जहां मानव, अपना वास करता है स्थिर हो जाता है चाहे वह विज्ञानवेत्ता विज्ञानमयी तरंगों को चिन्तन करने वाला, विज्ञान में स्थिर हो जाता है। शाला में प्रवेश कर जाता है, परन्तु आध्यात्मिकवादी क्या वह जो यज्ञवेत्ता है वह याग के अपने महत्व को महान स्वीकार करते है और ये कहते हैं कि यह जो संसार है एक प्रकार की यज्ञशाला है, यहां प्रत्येक मानव याग में लगा हुआ है और याग उसका एक मौलिक और आत्मीयता एक मानो क्रियाकलाप माना गया है। क्योंकि आत्मा की जो प्रेरणा होती है, आत्मा की जो तरंगें होती हैं, मानो वे तरंगें ही मानव को तरंगित करती रहती हैं। मुनिवरों! देखो, याज्ञिक पुरूषों ने अग्नि को, देवताओं का मुख स्वीकार किया है। मानो उन्होंने देवताओं का मुख स्वीकार किया, कि अग्नि के मुखारबिन्दु में, जो भी हम समर्पित करते हैं मानो वह देवताओं का भोज्य बन जाता है वह देवताओं का भोज्य बन करके यह लोक-परलोक दोनों में भूः, भुवः स्वः यह अपनी आभा में मानो पवित्रतम् को प्राप्त होते रहते हैं।

तो हमारे आचार्यों ने सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक, नाना प्रकार के विचारों में यह कहा कि यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है यहां प्रत्येक मानव होता बना हुआ है प्रत्येक मानव यज्ञमान बना

हुआ है, परन्तु इसके सन्दर्भ में नाना प्रकार की विवेचनाएं आती रही हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने आचार्यों ने इसके ऊपर बड़ा अध्ययन किया किया है। मुझे बेटा! वह काल, अध्ययन करने से प्रतीत हुआ कि किस काल में सृष्टि के आदि में, आदि आचार्यों ने बेटा! देखो, एक याग की प्रतिभा का वर्णन किया। मानो देखो, ब्रह्मा के पुत्र जो अथर्वा थे, अथर्वा के यहां यज्ञ के ऊपर जब नाना प्रकार के मन्त्रार्थ, अथवा वेदमन्त्र जब स्मरण आए और अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया, वैदिक साहित्य में तो मानो देखो, ब्रह्मा ऋषि अथर्वा ने मानो जेठे पुत्र ने इसके ऊपर अध्ययन किया। और नाना ऋषियों ने इसके ऊपर अध्ययन किया है परन्तु उन्होंने यह कहा कि मैं संसार का जितना भी मानव का क्रियाकलाप है, जितनी भी मानव की चर्या है उस सर्वत्र का नाम एक प्रकार का याग माना गया हैं। और आत्मयीता है, यह आत्मप्रेरणा को प्राप्त करता हुआ मानव बाह्य जगत में क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। मानो देखो, हमारे यहां योगाचार्यों ने अपने-अपने विचार देते हुए कहा कि याग के जो प्रारब्ध होता है मानो देखो, जब मानव याग करता हैं तो याग से उसके परमाणुओं में उसके मानो सात्विक शब्द से वायुमण्डल पवित्र हो जाता और वायुमण्डल जितना पवित्र होता है, उतना ही मानव जो मानसिक योग में जा करके, वह अपने में आहार करता हैं, परमाणुवाद को अपने में सिंचन करता है, अपने में धारण करता है, तो मानो उतना उसका मनस्तव ऊर्ध्वा में गति करने लगता हैं, और जब मनस्तव ऊर्ध्वा में गति करता हैं, तो मानो देखो, उसके पश्चात यह वायुमण्डल से आन्तरिक जगत का जब दोनों का समन्वय होता हैं तो मानो देखो, वह भौतिक याग से परिवर्तित होता हुआ वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश कर जाता है।

तो विचार आता रहता है कि हमारे यहां नाना ऋषि-मुनियों का ऐसा चिन्तन और मनन रहा हैं जिन्होंने नाना प्रकार के अनुष्ठान किए हैं। अनुष्ठान का अभिप्रायः यह है कि मानव को ऊर्ध्वा में गति करना हैं, और ऊर्ध्वा में गति कौन करता है? जो अनुष्ठान करता है, अनुष्ठान का अभिप्रायः हैं संकल्प, और जब वह संकल्प करता है, किसी आत्मीय क्रियाकलाप के लिए, तो मानो वह देवतव को प्राप्त होता है, और वह देवतव मानो देखो, हमारे यहां जो जड़वत और चैतन्यवत् दोनो रूप में हमारे शरीरों में गमन कर रहा हैं तो मानो वह जो जड़वत, जिससे वह अग्नि रूप में जिन देवताओं का जिन देवतव का, यह अग्नि ही मुख कहा गया हैं। तो अग्नि मानो देखो, जब ब्रहे व्रतं जब अग्नि मुख बन जाता है। तो सर्वत्र देवता, उस आनन्द को प्राप्त करते हैं। वायु मण्डल का शोधन हो जाता है, मानो देखो, पृथ्वी से गर्भ से जो परमाणु जाता है स्वाहा का, वह पृथ्वी अपने में गृत्त और नृत्त करने लगती हैं। मानो देखो, वही आपोमयी ज्योति में प्रवेश होता है, उसी आपोमयी ज्योति से इस मानव का निर्माण होता रहा है। जैसे माता के गर्भस्थल में, हमारे आचार्यों ने दिव्या से कहा है कि तू याग में अनुष्ठानी बन। मानो देखो, तू याग करने का अनुष्ठान कर, जिससे अप्रतां वाचप्रह्वे मानो देखो, अनुष्ठान करना तेरा कर्तव्य हैं। क्योंकि माता के गर्भस्थल में देखो, ये जो आपोमयी ज्योति हैं उसके ऊपर इन्होंने कई कालों में अपने विचार दिए हैं। परन्तु वह उसका ओढ़न, वह उसका आसन, वह उसके पांशे बने हुए रहते हैं। माता के गर्भस्थल में मानो देखो, जब मानव का, हम जैसे शिशुओं का निर्माण हुआ, निर्माण होता है तो वही माता के गर्भस्थल में देखो, एक आपो ही ऐसा है, जो उसको अपने में धारण करता हुआ ज्योति प्रदान करता रहता हैं और वह ज्योतिवान, इसीलिए देखो, यज्ञशाला में, यज्ञमान मुनिवरों! देखो, तीन प्रकार से जल के आचमन करता है। वह आचमन का महत्व इसीलिए माना गया है, क्या, वह मानो देखो, वही जल उसका आपो ही ओढ़न है आपो ही उस मानो देखो, उसका आसन हैं, आपो ही उसके पांशे बने हुए हैं मानो उसी से देखो, वह इतना अमृत बन जाता है यशों में बन जाता है उतना ही मानो देखो, माता के गर्भस्थल में, शिशु पनपता रहता है, अभ्योदय होता रहता है, यज्ञमान मानो देखो, इसी से देखो, तीन आचमन करता रहता हैं, क्योंकि यह आपो ही तो इसका साथी हैं। आपो ही तो मानो देखो, उसके संरक्षण में

रहने वाला हैं। वही तो अमृत कहलाता हैं। तो मानो देखो, बेटा! यह हमारे यहां याग की प्रतिक्रियाएं देखो, ब्रह्मचारी अथर्वा ने ब्रह्मवेत्ता अथर्वा ने इसका निर्णय किया और यह कहा कि जितना भी हमारा संसार का याज्ञिक बाह्य जगत में क्रियाकलाप हैं, वह सब विज्ञान से कटिबद्ध रहता है। मानो देखो, वह आध्यात्मिकवाद से भी कटिबद्ध रहता है क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीन प्रकार की विद्या का अध्ययन करता हुआ वह वह संसार में अपनी प्रवृत्तियों को व्यापक बनाता है और वह व्यापकता में देखो, उसका मानो देखो, दर्शन निहित रहता है, जितना भी मानव में व्यापकवाद होता है, उतना ही वह मानो देखो, व्यापकता में रत्त होता हुआ, उतना ही वह देखो, अपने में अपनेपन, अपनी प्रतिभा और जो परमपिता परमात्मा के विज्ञान का वह अध्ययन करता है।

तो विचार-विनिमय क्या ज्ञान, कर्म, उपासना के सम्बन्ध में, मैंने बेटा! अपने विचार, बहुत पूर्व काल में प्रगट किये, आज तो केवल इतना उच्चारण कर रहा हूँ क्या, हमारे यहां मानो देखो, यह जो आपो है, यही तो अमृत है आपो ही तो हमारा जीवन है, मानो यही आपो बन करके बाह्य जगत में जिस काल में वैज्ञानिकों के मध्य में यह यह आपो ही मानो देखो, ज्योति बन करके आपो का परमाणुवाद बन करके, वह अशुद्ध और देखो, शुद्ध शब्दों की तरंगों को ले करके देखो, वह समर्पित हो जाता है। आज का हमारा वेदमन्त्र, अग्नि के ऊपर बड़ी विवेचना कर रहा था। अग्नि सूक्तों का हम वर्णन कर रहे थे। वह जो अग्नि देखो, एक अग्नि, जैसे एक अग्नि है जो देवताओं का मुख बन करके जब यज्ञशाला में यज्ञमान होतागण अपने में ऋतविज गण विद्यमान हो करके वह मानो याग करते हैं और यागां ब्रह्मां ब्रहे वृणस्तुतति वृद्धा वेदप्रवाणां ब्रहे मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार के विचार, जब वह आहुति देता हुआ, मानव अग्नि के मुख में साकल्य देता है साकल्य के साथ में, उस यज्ञमान की तरंगें होती हैं मानो होताजनों ऋत्विजों के विचार होते हैं, उन विचारों से यज्ञमान के मानो देखो, पुरोहित का उद्गाता का जो गान चलता है, वह उद्गीत से सनी हुई आहुति मानो देखो, यज्ञशाला में समर्पित की जाती हैं। वही देखो, आहुति मानो देखो, हूत बन करके, अग्नि उसका विभाजन करती रहती है, और अग्नि विभाजन करके मानो अपने-अपने स्वरूप में उस परमात्मा को परिणत कर देती है। मानो वही तो अग्नि है, जो विभाजन करने वाली हैं, विभक्त क्रिया में निहित रहने वाली हैं, तो हमें विचारना है कि हम अप्रहा दार्शनिकों ने इस संसार को, यज्ञशाला के रूप में परिणत किया क्योंकि यह जो अग्नि का, जो व्यापार चल रहा हैं या ये मानो आपो का जो व्यापार चल रहा हैं, गुरूतव का जो व्यापार चल रहा है मानो देखो, उनमें सने हुए जो ये शब्द हैं साकल्य के द्वारा, अनुष्ठान के द्वारा, उसी से तो वायुमण्डल बनता हैं और यज्ञमान का चित्र भी उसी आभा में मानो अन्तरिक्ष में रत, रमण करने लगता है। जब वह रमण करता है तो वही वायुमण्डल, उन शब्दों से उस आभा से वह निहित हो करके मानो देखो, यह जो यज्ञमान, जो तेरा शब्द यदि जितना तेरा अन्तःकरण पवित्र होगा, संकल्पोंमयी होगा, उतना ही वह चित्र बन करके, द्यौ लोक में जा करके समय-समय पर, तुझे तेरा ही शब्द प्राप्त होता रहेगा। तो मानो देखो, यह वेद का आज से, और वैज्ञानिकों ने इस प्रकार, विचार देते हुए कहा था, कि हम अपने में जब यज्ञशाला में विद्यमान हों, तो हमारे विचारों में इतनी माधुर्यता, इतना अन्तःकरण आत्मा से उसका समन्वय होना चाहिए, जिससे आत्मीयता अपने में वृत होता हो।

तो मानो देखो, एक समय मुझे स्मरण आ रहा है एक समय शिकामकेतु उद्दालक मुनि के यहां, एक याग हो रहा था याग होते हुए मानो कहीं से समुद्र के तट पर विद्यमान होने वाले शिव पुत्र देखो, महाराजा गणेश जी और देखो, व्रेती मुनि महाराज दोनों भ्रमण करते हुए, वह अप्रतं मानो देखो, शिकामकेतु उद्दालक के द्वार पर पंहुचे, और शिकामकेतु उद्दालक से कहा क्या हे भगवन! हम वेद का अध्ययन कर रहे थे, और वेद में यह मन्त्र आ रहे थे, शब्दं ब्रह्मा अग्नं ब्रहे वाचन्नमं ब्रह्मे द्यौतं द्यौ लोकाः हे-प्रभु! यह वेदमन्त्र है और द्वितीय मन्त्र कह रहा है उसी के

सन्दर्भ में, क्या विचारंग गन्तनं ब्रह्मे हृदयानि गच्छतं प्रहा वायु मंगलम ब्रहे वृतं अग्नि रूद्रो भागां वाचन्नमं प्रभो वृतो मानो वेद का ऋषि यह वर्णन कर रहा है, महाराजा गणेश जी यह वर्णन कर रहे हैं, कि हे भगवन! यह वेद का मन्त्र यह कह रह है क्या जैसे हमारे आन्तरिक विचार होते हैं, आन्तरिक जैसा हमारा संकलन होता है, वह आकार बन करके हमारे चित्र अन्तरिक्ष में, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाते हैं। हे-प्रभु! हमनें यह विचारा कि वेद के वांगमय में, जो वेद कहता है वह मिथ्या नही कह सकता। क्योंकि वेद नाम तो प्रकाश का है, और मिथ्या जो शब्द है वह अन्धकार है। इसीलिए वेद में जो शब्द आता है, वह अन्धकार नही हो सकता, वह मिथ्या नही हो सकता, वह प्रकाश वाला हैं इसीलिए हम चलें और कहीं प्रकाश वाले महामुनि के द्वारा, इन वेदमन्त्रों को प्रकाश में और साकार रूप में लाना चाहते हैं। बेटा! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा हैं कि शिकामकेतु उद्दालक मुनि महाराज उनकी पत्नी शकुन्तका दिव्यां ब्रह्मणां ब्रह्मणां ब्रहे उन्होनें कहा-देवी! तू स्नेह हो जैसे माधुर्य जल, आपो होता है इसी प्रकार तू स्नेह है। परन्तु तू अपने में शकुन्तका कहलाती है। हे शकुन्तका! ब्रहे है मानो देखो, देखो, ऋषि क्या प्रश्न कर रहे हैं यह महाराजा शिव के पुत्र गणेश जी क्या प्रश्न कर रहे हैं? तो मुनिवरों! देखो, उस समय देवी ने कहा-प्रभु! उसका उत्तर दीजिए, क्योंकि हम कार्यों को क्रियाकलापों को हम जानते है। इन क्रियाकलापों का वर्णन करना हमारा कर्तव्य है। तो मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा देखो, उद्दालक गोत्र में जन्म लेने वाले, शिकामकेतु उद्दालक ने मानो जन्मं ब्रीहि कृता उन्होंने कहा आओ, देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात किया जाएं तो इसीलिए उद्दालक गोत्र में बहुत से ऋषि वैज्ञानिक हुए हैं यन्त्रवेत्ता हुए हैं, तो मानो देखो, यन्त्रों में उनको दृष्टिपात कराए गये, उन्होंने याग का प्रारम्भ किया और याग का प्रारम्भ करके अपने में देखो, यन्त्रों में उनके परमाणु और देखो, पच्चीसवें के महापिता हुए थे मानो जिसका प्रीति भारद्वाज कहलाया उनकी प्रीति भारद्वाज के यहां अध्ययन करते थे और उद्दालक गोत्र में श्रीति का जन्म हुआ था और मानो देखो, वह प्रीति मुनि महाराज अपने में देखो, एक समय देखो, उन्होंने अपने में अनुष्ठान किया था। वह अनुष्ठान बड़ा विचित्र था और ऐसा हुआ कि अनुष्ठान देखो, करते-करते, उनकी मध्य से जो सूत्र होता है वह सूत्र मानो असूत्र बन गया। देखो, सूत्र अपने में असूत्र बन गया जब बन गया तो उन्होंने यज्ञमान यन्त्रों में मानो देखो, उन्होंने दृष्टिपात कराया कि महाराज! देखो, यह हमारे पच्चीसवें महापिता थे और वह अनुष्ठान उन्होंने किया और अनुष्ठान करते-करते तमोगुण आ गया। जो मानो सूत्र था वह सूत्र इतना अपने में कटिबद्ध न रहा, वह सूत्र अपने में असूत्र बन गया। तो मानो देखो, जो उन्होंने दृष्टिपात किया, तो पुनः उन्होंने पश्चात किया और पश्चाताप के लिए देखो, वेदमन्त्रों का अध्ययन करते हुए पश्चाताप करते थे, तो पश्चाताप करने वाले का भी, अग्नि की धाराओं में, विचारों में मानो तरंगों के द्वारा वह चित्र गमन कर रहा था। तो वह यन्त्रों में देखो, साक्षात्कार वह दृष्टिपात आने लगा। जब साक्षात्कार दृष्टिपात आने लगा। तो मुनिवरों! देखो, वह मेरे पुत्रों! भवा सम्भवा लोकां महाराजा गणेश ने यह कहा-धन्य है प्रभु! तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा-प्रभु! यह हमारे पच्चीसवें महापिता का क्रियाकलाप हैं उनके मानो देखो, यज्ञोमयी अनुष्ठान में क्रियाकलाप है। तो इसीलिए हमारे यहां यह कहा गया है कि हे यज्ञमान! जब तू यज्ञमान बने, तो तू अपने में यह धारणा कर कि तेरी अन्तरात्मा का मानो वह जो एक श्रृंखला बनी हैं, वह श्रृंखला तेरी बनी रहे और वह श्रृंखला का जो तारतम्य मानो दो भाग न हो जाएं, तो मानो देखो, यह दृष्टिपात कराया। यही विचार, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने भी दिये, देखो, विद्यालयों में इस प्रकार की शिक्षाएं प्रदान होती रही, क्योंकि विज्ञान से सूत्रित होती थी मानो देखो, इसी से बेटा! आचार्यों ने ब्रह्मवेत्ताओं ने अपने में वर्णन करते हुए कहा है, क्या यह जो हमारा अग्नि है यह विभाजन करती है और अग्नि की एक श्रृंखला चली जाती हैं और वह मानो देखो, उसमें सूत्रित होती हुई इसीलिए देखो, मन, कर्म, वचन उसी में रत्त रहने चाहिएं। मुझे बहुत-सा काल पुत्रों! स्मरण आता रहता

हैं, जब याग को यज्ञमान करता है, तो मानो देखो, वेद का पठन-पाठन करने वाले हैं उनका भी सूत्र मानो देखो, असूत्र न बन जाएं मानो देखो, उसके मनों की धाराएं, उसके मनों की प्रवृत्ति, वह द्वितीय रूप में यदि परिणत हो जाती हैं तो यज्ञ की जो श्रृंखला है वेदमन्त्रों की, देवताओं की जो श्रृंखला मानो आह्वान करने की वह असूत्रित बन जाती हैं। मुझे बहुत-सा काल स्मरण है पुत्रों! जब मानो देखो, यज्ञमान याग करता हैं तो वह आहार और व्यवहारों में मानो अपने में सबसे प्रथम संयम करता हैं, वेदपाठी जब वेद पाठ के लिए परिणत होता है, तो वह तपस्या करता है, वह तपस्वी कहलाते हैं। और वह जो तपों में जो वेद का गान गाते हैं तो जो यज्ञ एक ऐसा क्रियाकलाप हैं संसार में, जो प्रत्येक मानव की प्रबलता, प्रत्येक मानव की आन्तरिक इच्छाओं की मानव की पूर्ति करने वाला है। परन्तु पूर्ति जब वह करता है जबकि हम अपने को योग में ले जाते हैं मानो योग उसे कहते हैं कि जहां हमारा इन क्रियाकलापों को, प्रत्येक क्रिया में हमारा मन, कर्म और वचन रहना चाहिए जब यह हमारा मन, कर्म वचन नही रहता हैं तो मानो देखो, उस क्रियाकलाप में मानो उसकी जो श्रृंखला हैं, वह मानो देखो, भंग हो जाती है। अप्रियता में परिणत हो जाती हैं। तो इसीलिए हमारे यहां, आचार्यों ने बड़ी विचित्र विवेचना की हैं, आचार्यों ने बड़ा गम्भीर अध्ययन किया हैं मुझे स्मरण है, क्या मानो देखो, ब्रह्मचारी अथर्वा ने ब्रह्मा के पुत्र, जब ब्रह्मवेत्ता बने, तो उन्होने बारह-बाहर वर्षों के तीन अनुष्ठान किए और वह अनुष्ठान क्या थे, वह प्राण के ऊपर अपना अध्ययन करते रहते थे, तो मानो देखो, बारह वर्ष का तो उन्हेंने ऐसा अनुष्ठान किया, जब उन्हें मानो पिपासा होती, जैसा मैंने कल से पूर्व काल में वर्णन किया वह मानो शीतली प्राणायाम करते थे और शीतली प्राणायाम करके अपने मानो पिपासा शान्त कर लेते थे और उसके पश्चात वह मानो जब क्षुधा होती तो मानो देखो, वह संकल्पोमयी प्राणायाम करते देखो, चन्द्र और सूर्य दोनों का समन्वय करते हुए देखो, उसमें संकल्प मात्र से ही गतिवान हो करके और वह जो वायुमण्डल में जो पोषक तत्त्व रमण कर रहे हैं वह याग के द्वारा यज्ञमान ने आहुतियाँ दी हैं, जो अग्नि में मानो जिनका विभाजन कर दिया है इन परमाणुओं का अपने में ग्रहण करता हुआ वह मानो देखो, अपने में वह प्राणायाम करता हुआ, देखो, मन को उसमें परिणत कर देता हैं और जहां मन प्राण में परिणत हुआ, प्राण में संलग्न हुआ, तो एकाग्रता का एक सूत्र बन जाता हैं। जब एकाग्रता का सूत्र बनता है, तो मानो देखो, जितना भी ज्ञान, कर्म और उपासना यह सर्वत्र मानो देखो, योगेश्वर वह योगी के अन्तर्हृदय में प्रवेश हो जाती हैं तो मानो उनका ज्ञान हो जाता हैं वह उसके अन्तर्हृदय में जो संस्कार हैं, वह संस्कार मानो देखो, अशुद्ध संस्कारों का क्षय और शुद्ध संस्कारों का जन्म होता हैं और शुद्ध संस्कारों का उदय हो करके अशुद्ध समाप्त हो जाते है तो शुद्ध संस्कार बने रहते हैं वह संस्कार की भी आवागमन के मूल में निहित होते हैं। जब यह संस्कार अन्तःकरण में नही होगा तो मुनिवरों! देखो, हमारा जन्म नही हो सकता। संसार में नाना प्रकार के आवेशों में प्रवेश नही कर सकते। परन्तु देखो, आवागमन एको ब्रह्मणा परमात्मा के हृदय में प्रवेश करना हैं। हृदय का हृदय से प्रवेश करना है। अन्तःकरण को हृदयगामी बनाना हैं। तो गामी वह जब ही बनता हैं जबकि मानो देखो, हमारे संस्कार समाप्त हो जाएं, शुद्ध और पवित्र संस्कार रह जाएं, परन्तु योगी कहता है, कि वह भी हमारे लिए बन्धन का मूल बना हुआ हैं, वह अच्छाई के संस्कार भी मूल में हैं, वह सतोगुण में प्रायः हैं परन्तु अन्तःकरण में जो निहित रहते हैं, तो वह अपने शुद्ध संस्कार भी, जब मानो देखो, उनका भी उनका भी भोगवाद के द्वारा अप्रतियों के द्वारा उनका भी जब अक्षय हो जाता हैं जो परमात्मा के हृदय से मिलान हो जाता हैं। तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में, कोई विवेचना विशेष नही देने आया हूँ विचार केवल यह है कि यज्ञमान की प्रतिभा और अनुष्ठानों के सम्बन्ध में, याग के सम्बन्ध में अपने विवेचना देने आया हूँ। क्या हमारे यहां योग भी देखो, याग हैं और यह देखो, विज्ञान भी एक प्रकार का याग हैं याग का अभिप्रायः यह है कि उसके व्यापकवाद में अपने को बाह्य जगत को आन्तरिक जगत का दोनों का हमें

मिलान मिलाना हैं। और दोनों स्वरूपों में हमे याग को दृष्टिपात करना हैं तो इस प्रकार मानो यह जो प्रवृत्ति हैं मानवीय धारा है मानो यह जो परमात्मा का अनूठा जगत है, यह बड़ा अनुपम विचित्र माना गया है। तो मुनिवरों! देखो, विचार-विनिमय प्रारम्भ हो रहा था विचार हम यह देना चाह रहे थे क्या मुनिवरों! देखो, याग अपने में कितना अनूठा है यह अग्नि, देवताओं का मुख हैं ये देवताओं का मुख मानो देखो, देवता देवत्वं ब्रह्मा लोकां वाचन्न अप्रतं ब्रह्म लोकां वायु सम्भवा मेरे प्यारे! वह जो देवतओं का मुख है और देवताओं के मुख में जब अपने में देखो, स्वाहा उच्चारण कर रहा हैं यह मानो देखो, अग्नि भिन्न-भिन्न प्रकार की कहलाती हैं एक अग्नि पाण्डितव के अन्तःकरण में प्रदीप्त रहती हैं, और उसको ज्ञानाग्नि कहते हैं, और ज्ञानाग्नि में भी मानो अवान्तर भेदन माने गएं हैं, एक अग्नि वह है जो मानव की वाणी में समाहित रहती हैं, एक अग्नि वह है जो राष्ट्रों को भी अग्नि के काण्ड बना देती है वही शब्द, वही अग्नि मानो शब्द बन करके रहता है। गृह के गृह नष्ट हो जाते हैं और राष्ट्र के राष्ट्रों में विचारों की अग्नि द्वारा एक दूसरा प्राणी, प्राणी का पिपासी बन जाता हैं मानो एक वह अग्नि कहलाती हैं एक अग्नि वह कहलाती है जो मानो देखो, बुद्धिमान अपने विचार दे रहा है और वह विचार लौकिकतता के रूप में दे रहा हैं जैसे महर्षि विश्वामित्र की चर्चा हो रही थी। वह धनुर्याग कराते रहते थे नाना ऋषिवर धनुर्यागों में परिणत रहते जैसे एक शब्द है देखो, वह उसकी किसी वंशलज ने मानो देखो, हमारे यहां राजा सगर के यहां जब राजा सगर की सेना मानो साठ हजार सेना उनके पुत्र के तुल्य जब वह भ्रमण करते हुए कपिल मुनि के आश्रम में पंहुचे थे तो कपिल मुनि महाराज से उन्होने अपशब्द उच्चारण किया कि मानो देखो, जय और विजय दो ब्रह्मचारी थे, जो उनके यहां धनुर्यागी कहलाते थे, उन्होंने अपने धनुर्याग से अपने गुरु का अपमान स्वीकार न कर सके परन्तु उसकी साठ हजार सेना में से आधी सेना को समाप्त कर दिया। मानो देखो, यह भी एक शब्द हैं यदि वे अशुद्ध शब्द, महर्षि कपिल को न उच्चारण करते तो मानो देखो, वह जय और विजय जो धनुर्यागी थे, धनुर्याग का अभिप्रायः यह था क्या ऋषि के यहां धनुर्याग के अणु और परमाणुओं का मिलान मिलाना और मानो धनुर्विद्या का अध्ययन कराना, अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या को देना, यह जय और विजय मानो देखो, महर्षि सुनीत मुनि महाराज के दोनों पुत्र कहलाते थे। जब यह विचार आया कि तो जब इनका साहित्य स्मरण आने लगता हैं तो विचार आता है कि उन्होंने धनुर्याग में से देखो, एक विचार है जो मानो देखो, राष्ट्र सेना को समाप्त कर दिया और उसके सन्दर्भ में यह भी विचार बना क्या जब महाराज सगर ने देखो, अश्वमेध याग किया था। महाराजा सुखमंजस अपने पुत्र पत्नी की प्रेरणा से और अपने गुरु वशिष्ठ की प्रेरणा से जब याग किया, उस याग में देखो, महर्षि कपिल मुनि महाराज जो ब्रह्मा की चुनौती प्रदान की, वह भी एक विचार था वह भी एक शब्द हैं मानो एक शब्द तो वह है जो सेना नष्ट कर रहा है, एक शब्द है जो उसको ब्रह्मत्तव को प्राप्त करा रहा हैं उसको पूज्य बना रहा है उसमें नम्रता है उसमें विवेक हैं जब उसकी वाणी में विवेक हो जाता हैं तो व्यापक बन जाता है इसकी वाणी में जब देखो, संकीर्णवाद आ जाता हैं तो वाणी का संकीर्णवाद उसी को नष्ट कर देता हैं। उसकी अग्नं ब्रह्मे प्रवृत्ति बन जाती हैं वही अग्नि है, वेदमन्त्रों का उद्गाता उद्गीत गाता हैं तो वही शब्द हैं वही अग्नि बन करके देवताओं का भोज्य बन जाता हैं वही मानो देखो, साकल्य जब स्वाहा कह करके देवताओं का नामोकरण करके उच्चारण करके उद्गीत गाता है वही शब्द मानो देवताओं का भोज्य बन करके, वायुमण्डल को पवित्र बना देता है। वह भी एक शब्द है, परन्तु देखो, वह भी शब्द है जब माता अपने गर्भस्थल में, अपने आन्तरिक जगत में, जब वह माता प्रवेश करती है तो आत्मा से चर्चा करती है आत्मा से कहती है कि हे आत्मा! तू मेरे गर्भ में, विद्यमान है तुझे ब्रह्मवेत्ता बनना है मानो तुझे बुद्ध और शुद्ध का अपने में धारण करके तुझे मानो देखो, आत्मवेत्ता बन करके तुझे योगी बनना हैं प्राण और अपान को एक सूत्र में लाना हैं। देखो, व्यान और समान को भी एक सूत्र में ले ला करके और उदान में प्रवेश करके मानो देखो, जब

संसार से जाना है तो इन प्राणों के द्वारा एक मानो देखो, यौगिकवाद तेरे समीप जाना हैं। जब माता इस प्रकार के विचार, प्राण के द्वारा, मन के संकल्प से आत्मा के ज्ञान और प्रयत्न के द्वारा मानो देखो, बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में जब वह दृष्टिपात करती हैं तो माता अपने कर्तव्यवाद में निहित हो करके, अपने मानवीय दर्शन में निहित हो करके वही शब्द विवेक और ज्ञान और विज्ञान से सना हुआ देखो, गर्भ में बाल्य को ऊँचा बना रहा हैं जब मैं इन विचारों पर जाता हूँ तो बेटा! देखो, शब्द की बड़ी विचित्रता है, बड़ा महत्वपूर्ण हैं यही शब्द है मानो देखो, जब योगेश्वर अपनी वाणी से उदगार और आत्मचिन्तन करता हुआ, मनस्तव और प्राणतव का चिन्तन करता हुआ, देखो, परमात्मा को प्राप्त होने के लिए वह चिन्तन करता है अपनी मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता है। बेटा! बड़ा विचित्र मानो देखो, एक निरा है जिसके ऊपर मानव अपने में अनुसन्धान करता रहता हैं।

आज मैं बेटा! दूरी न जाता हुआ वही शब्द अग्नि से सना हुआ वही शब्द है जो देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने गणेश जी को और ऋषि को वर्णन कराया था और वर्णन कराते हुए उन्होंने कहा था कि यही शब्द है जिसका तारतम्य समाप्त हो जाता हैं अरे, जिसके शब्दों की श्रृंखला मानो मध्य से कटित हो गई हैं, उस मानव के जीवन का संकल्प मानो असंकल्प बन गया हैं। विचार आता रहता है मैंने बेटा! बहुत पुरातन काल में जब हम गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते थे तो पूज्यपाद गुरुओं ने मानो देखो, बारह-बारह वर्ष के अनष्ठान कराए, प्राण को जानने के लिए, सखा को जानने के लिए और देखो, यह जो शब्द है यह अन्तरिक्ष में जो गति करता है, विचारों की अग्नि के ऊपर, यही शब्द तो गमन करता हैं मानो देखो, यज्ञमान की अग्नि स्थूल है विचारों की अग्नि सूक्ष्म हैं, और जो आन्तरिक अन्तरात्मा की जो अग्नि है वह मानो देखो, व्यापक बना करके मानव को देखो, व्यष्टि से समष्टि में ले जाती है और वह जो समष्टिवाद है, वही ईश्वर की परमपिता परमात्मा की प्रतिभा को जानना है।

तो बेटा! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ विचार केवल यह कि यह जो विचार है, यह जो शब्द हैं यह कितना अनन्तमयी माना गया हैं, यही शब्द है देखो, योगी जब मानो देखो, शब्द विज्ञान को ले करके और वह मन की धारा को ले करके और प्राण को जब इसमें फूंक देता हैं, तो मानो त्रिवाद बन करके मानव के अन्तःकरण में, अन्तःकरण की अग्नि के ऊपर देखो, अश्वत हो करके देखो, आत्मा, उदान के द्वारा ही तो मानव चित्त के मण्डल में प्रवेश करता हैं। मेरे पुत्रों! यह तो बड़ा विशाल एक विचार हैं जब मैं इन विचारों के ऊपर हम प्रवेश करते हैं तो मानो एक अनुपमता दृष्टिपात आती है कि मैं उच्चारण कर रहा था, महर्षि कपिल मुनि की चर्चाएं, कपिल मुनि महाराज के यहां बेटा! जब देखो, महाराजा सगर ने अश्वमेध याग में देखो, ब्रह्मतव को देखो, निर्वाचित किया तो उस समय, महात्मा कपिल ने यह कहा क्या हे राजन! मैं तो तुम्हारे राष्ट्र को द्रोही है, हमारा विद्यालय, उन्होंने कहा नही, भगवन! आप पातालपुरी में रहते हैं, जय और विजय जो दो ब्रह्मचारी हैं, वह बड़े वैज्ञानिक हैं हमें यह प्रतीत नही था। तो मानो देखो, भगवन! ब्रह्मे व्रतं जब महाराजा सगर ने यह कहा, तो ऋषि ने यह कहा कपिल ब्रह्मणां ब्रह्मे ब्रह्मा असुते सम्भवा देखो, वह कपिल मुनि ने यह कहा कि सम्भूति ब्रह्मणां वाचप्रह्वे अश्वमेधा यागां ब्रह्मे कृतं तो ऋषि देखो, कपिल मुनि ने यह कहा कि महाराज! आपका यह याग की प्रेरणा किसने दी हैं? उन्होंने कहा कि यह जब मानो आधी सेना तुम्हारे विद्यालय में समाप्त हो गई थी, तो उस समय मेरे पुत्र जो सुखमंजस हैं उन्होंने यह प्रेरणा दी, पत्नी ने कहा ऋषि का स्वागत कीजिए, क्योंकि वह ऋषि है, अश्वमेध याग को जानते हैं, वह मानो देखो, जहां वह धनुर्याग के ज्ञाता हैं, जब वह धनुर्याग और अश्वमेध के ज्ञाता ऐसे महापुरूष को तुमको अपशब्द नही उच्चारण करना था। तो मानो देखो, उन शब्दों से हम आपका स्वागत करना चाहते हैं। मेरे पुत्रों! मुझे जब वह काल स्मरण आता है, तो मेरा हृदय गद्-गद् हो जाता हैं, और मैं यह कहता रहता हूँ हे भगवन! तेरे राष्ट्र में कैसे-कैसे महापुरूष मानो अपने में नृत्त करने वाले हुए हैं ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने वाले देखो, जो

राजा मानो द्रोही और राजा को वह द्रोही स्वीकार करता है, उसी शब्द, उसी शरीर से वह उन शब्दों के ऊपर अपने में शब्दं व्रता मानो उसमें ओत-प्रोत हो उसी याग को कर रहे हैं राष्ट्र के कल्याण की भावना भी ऋषि कर रहा हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा ने जब याग में ब्रह्मतव को प्राप्त किया, उसमें पुरोहित महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज बने, और देखो, यह वशिष्ठां ब्रह्मे हमारे यहां यह माना गया है कि जो भी अयोध्या में राजा हुए हैं, चाहे वह मानो देखो, मनु वंश में हुए है, उन सबका जो राज पुरोहित रहा हैं, उनका नाम वशिष्ठ रहा हैं। मानो देखो, मैंने कई वशिष्ठों को अध्ययन करने का सौभाग्य का प्राप्त हुआ, सबसे प्रथम जो ऋषि वशिष्ठ का निर्वाचन हुआ था उनका नाम रेणवृत्तिका मुनि कहलाते थे। रेणवृत्तिका वशिष्ठ कहलाते थे और द्वितीय जो वशिष्ठ हुआ उसका नाम शोभनी वशिष्ठ कहलाया गया मानो इस प्रकार यह वशिष्ठ इस वंशलज में एक उपाधि रूप में परिणत रही है। तो विचार आता रहता है क्या मानो बेटा! देखो, वह याग हुआ, तो विचार मुनिवरों! देखो, वह शब्द इतना विशाल होता है, वही शब्द है मानो देखो, एक समय मुझे स्मरण आता रहता है, बेटा! एक ऋषि अपने वेदमन्त्रों का उद्गीत गाता रहता था भयंकर वन हैं, कोई श्रवण करने वाला नही हैं मानो वह अपने में स्वरों में उद्गीत गा रहा है, जब स्वरों में गाता हैं। वही शब्द जो स्वरों में हैं वेदमन्त्रों से विचित्रता में शुद्ध और पवित्रता में थे, उन शब्दों को जब हम एक समय बेटा! देखो, वहां जब दृष्टिपात करने लगे तो बेटा! कोई मानव नही है, वहां सिंहराज हैं देखो, वह शान्त मुद्रा में विद्यमान है, और वह उन शब्दों को ग्रहण कर रहा है, शब्दों को अपने में ग्रहण कर रहा हैं। तो सर्पराज भी उसी पंक्ति में विद्यमान हैं, मृगराज भी उसी में विद्यमान हैं, तो जब उनसे यह प्रश्न किया गया कि महाराज! तो मानो देखो, यह हिंसक प्राणी तो, यह पान कर जाते हैं तुम इसमें निर्द्वन्द्व हो। उन्होंने कहा यह जो वैदिक परम्परा हैं। वेद का जो मन्त्र है, यह किसी की धरोहर नही हैं, यह किसी की निजी सम्पति नही कहलाती। यह प्रत्येक प्राणी मात्र के लिए होती है क्योंकि यह ईश्वरीय, ऋषि कृत ये विचार है मानो परमात्मा का ज्ञान इसे कहा जाता है। और जो पिता की वाणी है। या पिता का ज्ञान और विज्ञान भी इसमें हैं इसी प्रकार मृगराज के लिए भी, वह सिंहराज के लिए भी, इसी प्रकार हैं, मानव के लिए भी ऐसा बना हुआ हैं, तो मानो देखो, यह शब्द जितना अहिंसा में होगा, शब्द जितना क्रियाकलापों में भी अहिंसा हो और देखो, कर्म में भी अहिंसा हो और हृदय आन्तरिक जगत में भी अहिंसा हो और वह व्यापार में भी मानो देखो, अहिंसा मयी वेद का मन्त्र, जब उद्गीत रूप में गाया जाता है, तो मानो देखो, सिंह राज भी नतमस्तिष्क हो जाता है, तो यह शब्द सिंहराज की प्रतिभा कही गई है। मुझे स्मरण आता रहता हैं मानो देखो, चाक्राणी गार्गी, जब गान गाती थी, शब्दों के द्वारा साम गान जब स्वरों से गाया जाता हैं, तो वायुमण्डल का पक्षी गण भी शान्त हो जाता है। तो विचार आता रहता है बेटा! मैं इसके ऊपर कहां तक अपना उद्गीत गा सकूंगा। बहुत समय मानो दृष्टिपात किया गया है जब आचार्य कुल में अध्ययन कराते रहे। तो मानो ब्रह्मचारी मौन हो जाता है, वेदों का गान, श्रवण करता हुआ अपने में मौन हो जाता हैं। ब्रह्मचरिष्यामि, ब्रह्मचर्य की रक्षा हो जाती हैं। इसी वाणी से तो ब्रह्मचर्य की रक्षा होती हैं। जब वाणी में मन, कर्म, वचन जब एक ही सूत्र में होते हैं तो मैंने इससे पूर्व काल में कहा है मन, कर्म वचन जब अंहिसा में परिणत होता हुआ, ब्रह्मवर्चोसि बन करके ब्रह्म को अपने में धारण करना देखो, वह ब्रह्मचर्य क्या है? देखो, अपने को ब्रह्म में ब्रह्म में अपने को जब मानो निष्ठा से विवेक से स्वीकार कर लेता हैं, तो ब्रह्मचारी बन जाता हैं। जो ब्रह्म वृत्तियां है, वह यह क्या प्रत्येक मानो तरंग के द्वारा हम ब्रह्म को ही दृष्टिपात करते और ब्रह्म को ही अपने में क्योंकि जब तक ब्रह्म को अपने में स्वीकार नही करोगे, तब तक हमारा दोनों का सूत्र एक नही हो सकता। क्योंकि ब्रह्म तो पर्वत में भी है, ब्रह्म समुद्र की तरंगों में भी है, परन्तु जहां हम नही होते परमपिता परमात्मा है परन्तु जहां हम नही होते वहां मानो परमात्मा को हम सिद्ध नही कर सकते। जहां हम भी हैं, हम उसमें हैं, वह हमारे में विद्यमान हैं।

तो मानो देखो, अपनेपन में ही ब्रह्म का दर्शन ब्रह्म का अपने में ग्रहण करना, ब्रह्म को अपने में उज्ज्वलता में मानो देखो, यही उसकी उपासना। उपासना का अभिप्रायः क्या है क्या हम एक-एक कण में, ब्रह्म को स्वीकार करें, अपने विचारों को इतना तपायमान बना दें कि अहिंसा में परिणत हो जाएं। हमारे ऋषि-मुनि ऐसा मुझे स्मरण आता रहता हैं ऋषि-मुनि जिस भी काल में अपनी स्थलियों से वेद का गान गाते थे, गायत्राणि छन्दों का पठन-पाठन करते प्राणायाम किया करते थे, विशुद्ध रूप से मानो देखो, कोई मानव नही हैं, माता नही पिता नही परन्तु देखो, यह कौन सिंहराज ही उनकी रक्षा करने वाले बन जाते हैं। अरे, सिंह राज भी रक्षा करता है जब तुम उसकी रक्षा करोगे तो सिंहराज तुम्हारी रक्षा करेगा। तो विचार बड़ा विचित्र हैं वेद का वाक्, बहुत ऊँची ऊर्ध्वा ऊँची उड़ाने उड़ता हैं इस सम्बन्ध में, परन्तु योग तो जब ही सिद्ध होता है जबकि इस प्रकार हमारे अहिंसा में विचार बन जाते हैं। ब्रह्मचर्य जब ही सिद्ध होता है, जब ब्रह्म में हमारी निष्ठा हो जाएं, ब्रह्म के जो कौतुक है उनकी जो क्रियाकलापता है हम दोनों का एक सूत्र बन जाएं तो मानो देखो, उसको हम अपने में स्वीकार करते हैं। तो विचार-विनिमय मैं बेटा! विशेष देना नही चाहता हूँ, मैं कोई व्याख्याता भी नही हूँ केवल परिचय देने के लिए आता हूँ, व्याख्या तो वह दिया करते हैं, जिनको व्याख्यां ब्रह्म व्रते जो ब्रह्म में सदैव ब्रह्म में ही अपने को दृष्टिपात करते वही तो ब्रह्म की व्याख्या करते हैं। जब मानव तपस्वी होता है, वेद का अध्ययन करने के लिए, वेद का जो देवतव में देखो, उसका भाष्य करता है, उसके ऊपर टिप्पणी करता हैं वेद का मानो वह तपस्वी भाष्य करता है, विवेकी होता हैं। जो मानो देखो, प्रभु में जिसकी निष्ठा होती हैं, परमात्मा में निष्ठा, परमात्मा के विज्ञान में भौतिकवाद में निष्ठा, क्योंकि आध्यात्मिकवाद में निष्ठा, आध्यात्मिकवेत्ता जो होता हैं जो आत्मा, परमात्मा देखो, आत्मा को परमात्मा में, दृष्टिपात करता है परमात्मा को आत्मा में इसी प्रकार दोनों का समन्वय करने वाले और परमात्मा की वाणी को जो अपने में स्वीकार करता है, तो मानो वह वेद के ऊपर टिप्पणी कर सकता हैं, वह वेद के ऊपर मानो देखो, भाष्य कर सकता हैं, क्योंकि वह भौतिक विज्ञान को जानता हैं और बाह्य और आन्तरिक दोनों व्यापारों को जानता हैं मानो जो उसका व्यवहार है और व्यवहार में भी विवेक हो और मानो प्राण अपान दोनों का समन्वय करने वाला हो तो मानो देखो, वह वेद के ऊपर टिप्पणी उसका भाष्य करता हैं। क्योंकि जिस भी काल में वेद के मन्त्र में जब कोई किसी प्रकार की भ्रान्ति होती है तो उसी काल में वह समाधिष्ट हो जाता है प्राण को अपान में, अपान को समान में और समान को व्यान में व्यान और समान को दोनों को उदान में जिसका समन्वय इतनी गति होती है वह वेद के भाष्य में मानो देखो, अपने में सफलता को प्राप्त होता रहता है।

तो आज का विचार बेटा! मैं विशेष न देता हुआ विचार केवल यह कि मुनिवरों! देखो, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने मानो देखो, याग के ऊपर बड़ी विचित्र अपनी टिप्पणियाँ दी हैं, और उन्होंने कहा कि याग अपने में बड़ा अनूठा है, याग कर्म करने वाला देखो, यज्ञमान अपने में याज्ञिक बन करके, याग में प्रवेश करता हैं। हे यज्ञमान! तेरा मानो देखो, गर्भ से ले करके और बाह्य जगत में यह जो जल है यह अमृत है, यही तेरे तीन रूपों में विद्यमान रहता हैं यही पिण्ड है, यही मानो देखो, अपने में तुझे प्रहा हैं। तो विचार केवल क्या, क्या अपने में बेटा! देखो, यह वाणी हमारी इतनी पवित्र हो, महानता में गति करने वाली हो, प्राण और अपान में देखो, वाणी ही तो ध्वनि ही तो क्रियाकलापों में परिणत होती रहती हैं। तो यह बेटा! आज का वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती, अनन्तता को जानते हुए, और मानो देखो, अपने में प्रवेश करके उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गान गाने वाले बनें, और इस संसार सागर से जो नाना प्रकार के अन्धकार में परिणत कराने वाला हैं, हम अन्धकार से दूरी हो जाएं प्रकाश में चले जाएं प्रकाश प्रत्येक प्राणी जाना चाहता हैं तो इसीलिए आज का वाक् अब समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा

६ याग और योग का समन्वय २६ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं मानो याग उसका आयतन है उसका गृह है उसका सदन हैं इसीलिए वे परमपिता परमात्मा प्रत्येक आभा में निहित रहने वाले हैं तरंगों का जन्म होता रहता हैं मानवीय धारा उससे परिपूर्ण रहती हैं परन्तु वह सर्वत्र रूपों में वह ब्रह्म जो एक चैतन्य देव हैं जो अकाय हैं हम उस परमपिता परमात्मा को अपने अन्तःकरण में और अपने में उसका दर्शन करते हैं परन्तु हमारे यहाँ दर्शनों की बड़ी विचित्र विवेचना होती रही हैं आज का हमारा वेदमन्त्र बड़ी ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ रहा हैं क्योंकि जब वेद के वांगमय में मानव प्रवेश करता है और उस परमपिता परमात्मा की महती में रत्त रहता हैं तो मानवतव अपने में महान अपने में मानो देखो, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा में गति करने वाला अपने में महानता का दर्शन होता रहता हैं।

यज्ञ से जागरुकता

आओ, मेरे पुत्रों! हमारा वेद का मन्त्र वेद का एक-एक मन्त्र हमें क्या-क्या प्रेरणा दे रहा हैं हम वास्तव में प्रेरणा के सूत्र बन करके और प्रेरणा को अपने को अपने में धारण करके इससे प्रेरित हो करके, हम मानवतव को अपने में धारण करने वाले, मानवीयता की प्रतिभा में सदैव निहित रहते हैं। आज का हमारा वेदमन्त्र नाना प्रकार की अग्नि की सम्बन्ध में विचार दे रहा हैं, परन्तु नाना प्रकार की आभा में वह रत्त हो रहा हैं, जो मुनिवरों! देखो, उसी अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके विचार और सत्ता मानो ज्ञान के रूप में मानव का दर्शन प्रायः अन्तरिक्ष में गमन कर रहा हैं, तो मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था कि प्रत्येक मानव को इस संसार रूपी याग का चिन्तन करना चाहिए, यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है और यहाँ प्रत्येक मानव यज्ञवेदी पर विद्यमान हो करके वेद का उद्गीत गा रहा हैं, और उद्गीत गाता हुआ वेदोक्त बन करके इस मानो संसार की प्रतिभा से ऊर्ध्वा गति में वह गमन करना चाहता हैं। तो हमारे यहाँ यागों का अपना विस्तृत विवेचना होती रही हैं, हमारे यहाँ यागों में भिन्न-भिन्न प्रकार के याग प्रायः हमारे यहाँ प्रतिभाषित रहे हैं, और विचारवेत्ता मानो याग के सम्बन्ध में प्रवेश कर जाते है। प्रवेशिका में वृत बन जाता हैं। यागां ब्रह्म ब्रहे देवाः हे मानव! तू याग के साथ जागरूक रह इस याग को जब तू ऊँचा बना सकता है, जब तू जागरूक रहेगा, क्योंकि मानव को जागरूक रहना चाहिए विचार आता रहता है कि जागरूक किसे कहते हैं? तो वेद का मन्त्र कहता है, जागां ब्रह्मणं ब्रहे स्वस्ति प्रहा वेद का एक मन्त्र कहता है, आख्यिका कहती हैं, क्या वह मानव जागरूक रहता हैं, जिस मानव के अन्तःकरण में सदैव ज्ञान और निसवृत्तियों की तरंगों का जन्म होता रहता हैं मानो देखो, वह मानव जागरूक रहता हैं। जागरूकता का अभिप्रायः यह क्या जो ज्ञान युक्त हो करके इस संसार का दर्शन करता हैं, मानो देखो, जागरूक वह रहता है जो व्यवहार में महान और योग में पारायण और महानता की ज्योति की मानो जो ज्योतिवान बन करके ज्योतियों को प्राप्त होता हैं।

याग विमर्श

तो मेरे प्यारे! विचार क्या कह रहा हैं विचार यह कहता है कि प्रत्येक मानव अपने में मानवीयता और

आभा में युक्त रहना चाहिए। आज का मैं कोई विशेष विवेचना या विशेष विचार देने नही आया हूँ, केवल परिचय कराना हमारा कर्तव्य परिचय कराना ही हमारा एक नृत्त रहता है याग के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचना और योग के सम्बन्ध में याग का और योग का क्या परस्पर समन्वय इसके ऊपर बेटा! आज हम अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं, मानो देखो, हमारे यहाँ बहुत पुरातन काल हुआ है, एक समय बेटा! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ एक सभा का आयोजन हुआ, और उसमें ऋषि-मुनि विद्यमान थे, हमारे यहाँ तीन प्रकार के ऋषि कहलाते हैं, एक ऋषि वह होता है जो श्रोत्रीय में मानो देखो, प्रवेश करता रहता हैं, एक योगी वह होता है, जो परमपिता परमात्मा के सूत्र में अपने को दृष्टिपात करता है, मानो एक वह प्राण ब्रह्मा कृतो देवाः जो एक ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करता रहता है, तो हमारे यहाँ याग के सम्बन्ध में जब विवेचना प्रारम्भ होती है, तो याग में जब वह क्रियाकलापों में परिणत होता हैं, तो बेटा! देखो, इस सम्बन्ध में विचार देने के लिए हम आए हैं, हमारे यहाँ गाडीवान रेवक मुनि महाराज के यहाँ, एक ऋषि-मुनियों का एक समूह उनके द्वार पर पंहुचा और गाड़ीवान रेवक से कहा कि महाराज! हम यह जानना चाहते हैं कि वह भौतिकयाग हैं, इस भौतिक याग का आध्यात्मिक याग से क्या समन्वय रहता हैं। अथवा योग से इसमें क्या संलग्नता रहती हैं।

यज्ञ के पांच प्रकार

तो मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उनके वाक् श्रवण किये, और उनकी टिप्पणीयाँ परिणत की हैं, विचार क्या उन्होंने यह विचारा ब्रह्मा कृत देवो ब्रह्मो सम्भवा वेद का ऋषि अपने में बेटा! बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ रहा हैं, वाक् कहता है वेद की आख्यिका कह रही है, वर्णनं ब्रह्मा वर्णनं मेरे प्यारे! देखो, एक अपने में याग का प्रश्न किया गया, तो गाड़ीवान रेवक मुनि महराज ने नाना ऋषियों की वार्त्ता पान करते हुए वह ब्रह्म श्रोत्रीय कहलाते थे। मानो वह देखो, जो ब्रह्म में श्रोत्रों को परिणत करना चाहता है, वह ब्रह्म श्रोत्रीय कहलाता हैं बेटा! यह जो श्रोत्र हैं इसमें सत्ता है, ज्ञान की तरंगें इसमें परिणत होती हुई, इसमें वह द्वितीय क्रियाकलापों में परिणत हो जाता हैं। तो आज का विचार क्या है बेटा! हमारा गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज से जब यह प्रश्न किया गया तो गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने उत्तर देना प्रारम्भ किया, उन्होंने कहा याग मानो देखो, याग पांच प्रकार के होते हैं, और वह पांचो प्रकार के यागों को क्रियात्मक में लाता हुआ ब्रह्म में लिप्त हो जाता है, तो वह भौतिक और आध्यात्मिक याग दोनों के स्वरूप को जान लेता हैं, मेरे प्यारे! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने अपना व्यक्तव्य दिया, परन्तु इस व्यक्तव्य से मानव को शान्ति नही आ जाती हैं।

हमारे यहाँ दो प्रसंग है एक आध्यात्मिकवाद है एक भौतिकवाद हैं मानो देखो, एक याग तो यागां ब्रह्मणा उसके गर्भ में जो आध्यात्मिकवाद विद्यमान होता है उसे जानना हैं, और उसे अपने में क्रिया में लाना है, जिससे क्रियावान बन करके हम उस आभा को प्राप्त कर सकें जिस आभा में हम मानो पनपे हैं। हमारा जन्म हुआ हैं, हम युवातव को विद्यालय तव को प्राप्त करते रहे हैं, तो मेरे प्यारे! गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने यह वाक् ले करके कि हम आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान दोनों के ऊपर हम समन्वय करें विचार-विनिमय करें जिससे मानवता हमारी साक्षात्कार हो करके सागर से ऊर्ध्वा में कल्पना हो अपना विचार-विनिमय कर सकें। तो मेरे पुत्रों! देखो, विशेष चर्चाएं न देता हुआ केवल वाक् यह उच्चारण किया जा रहा था यागाम् ब्रह्मणां ब्रहे मेरे पुत्रों! देखो, वह याग है जहाँ यज्ञमान विद्यमान होता हैं, और यज्ञमान अपनी देवी से कहता है, हे दिव्या! आओ, हम मानो देखो, देव पूजा में अपने को ले जाना चाहते हैं, माता अरूणधती की भांति प्रसन्न हो करके कहती हैं, प्रभु! बहुत प्रियतम हैं, मानो मुझे तो तुम्हारे पिछरले भाग में तुम्हारे क्रियाकलापों का अनुसरण करना हैं, जैसे विद्यालयों में आचार्यों का अनुसरण करने वाले ब्रह्मचारी होते हैं, इसी प्रकार जो गृह आँगन में अपने में मानो देखो, गृह स्वामी बन जाता हैं

आत्मा प्राण और योग

तो मेरे प्यारे! देखो, वह यज्ञमान कहता है देवी आओ, अब हम यागां ब्रह्मणां ब्रहे याग करते हैं मेरे प्यारे! देखो, याग में विद्यमान हो गएं हैं, निर्वाचन कर रहा है, जैसे मानो देखो, सृष्टि के पिता के जब यह संसार रचा तो यह आत्मा इस संसार रूपी यज्ञ का एक ब्रह्मा का निर्वाचन करना चाहता हैं, वह ब्रह्मा का आचार्य का निर्माण करना चाहता हैं, ब्रह्मा कौन है, जो ब्रह्म को जानता है, आचार्य कौन है, जो अपनी आचार संहिता के आधार पर अपने जीवन को और विद्यालय की पवित्र भूमि को ऊर्ध्वा में ले जाता हैं, वह मानो देखो, यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञा वायु सम्भव लोकां मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार के विचार आत्मीयता में स्मरण आते हैं। तो हमारा अन्तर्हृदय गद्-गद् हो जाता हैं, परन्तु विचार केवल इतना उच्चारण करना है कि हमारा जीवन मानो याग में होना चाहिए, और जिस प्रकार देखो, यज्ञमान आत्मा, यह परमपिता परमात्मा का निर्वाचन करता है, इस संसार को संचालन करने के लिए इसी प्रकार यज्ञशाला में यज्ञमान का निर्वाचन होता हैं क्योंकि वह उसकी गतियों में गमन करने वाला, अपने में रत्त रहने वाला हो, परन्तु देखो, उसकी विशुद्धता ऊर्ध्वा में गति करने लगती हैं।

याग में जल सिंचन

तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार क्या कह रहा है, आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ केवल यह कि यागां ब्रह्मे यज्ञमान जब मानो देखो, अग्न्याध्यान करता है, अग्न्याध्यान के पश्चात वह मानो देखो, यज्ञ में अपनी देखो, जल का प्रोक्षण करता हैं, जल को मानो देखो, प्रोक्षण में परिणत करता हैं। तो एक समय महर्षि गाड़ीवान रेवक मुनि से यह प्रश्न किया गया कि महाराज! आपने हमें वर्णन कराया था कि यागां दर्शनं ब्रह्मे याग के चिन्तन करने वालों को दर्शन का ज्ञान होता हैं, तो हम आपसे दर्शनों का ज्ञान चाहते हैं। दर्शनों में रत्त रहना चाहते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान अपने में प्रसन्न हो करके बेटा! वह देखो, याग का अग्न्याध्यान करने के पश्चात जल का प्रोक्षण करता है। वह जब जल का प्रोक्षण करता है, तो याग में अपने बड़ा विचित्र और आभावादी बन करके रहता हैं, तो मानो ब्रह्मणां ब्रहे दर्शनों ब्रहे वाचप्रवा ब्रीहि वर्णा मेरे पुत्रों! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था विचार देते हुए कहा था कि हम मानो याग में जब वह जब प्रोक्षण करने लगता हैं, जल का प्रोक्षण करके चतुर्मुखी बना करके याग का प्रारम्भ करता है। याग की प्रतिक्रिया को वह क्रिया में लाना चाहता हैं। मेरे प्यारे! यह बड़ा विचित्र एक नृत्त आज हमारे अन्तर्हृदय में हो रहा है, जिस हृदय से यह बाह्य जगत अपने में शोषण कर लेता है, अपने में धारयामि बना लेता है तो मुनिवरों! देखो, जब गाड़ीवान रेवक इत्यादियों ने ऋषि से यह प्रश्न किया कि महाराज! व्राति सम्भवा मानो देखो, आपने अभी-अभी कुछ वर्णन किया और विचारों में नही आया। मेरे पुत्रों! मुझे स्मरण आता रहता है वह काल जिस काल में ऋषि-मुनि एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके ब्रह्मवर्चोसि वह ब्रह्म का चिन्तन करके वह अपनी आभा में संसार को दृष्टिपात करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान जब अपना प्रोक्षण करता है, तो वह तीन दिशाओं में वह जल का प्रोक्षण करता है और अन्तिम मानो वह अपनी परिक्रमा करके जल को अपनी स्थली पर परिणत कर देता हैं। तो वह जलं ब्रह्मा जलं रूद्रो भागा तो मानो देखो, एक ऋषि से कहते हैं स्नेहमय राजा से क्या महाराज! तुम यह जो याग कर रहे हो मानो देखो, नाना प्रकार के विषधर, मक्खियां होती हैं और वह देखो, वह अप्रतं ब्रह्मे कृतं ब्रह्मा वाचन्नं ब्रह्मे कृतं देवाः दिव्यां रक्षणां मेरे प्यारे! देखो, जब वह प्रोक्षण करता है तो तीन दिशाओं में प्रोक्षण करता है चतुर्थ दिशा में परिक्रमा करता हैं वह क्यों कर रहा है, क्योंकि यह जो जगत है यह सब क्रियावान हैं, मानो कोई समुद्रों की परिक्रमा छः-छः माह के पश्चात करता हैं, कोई मानो देखो, परिक्रमा शब्दों के रूप में परिणत कर देता हैं, परन्तु कोई ऐसी मानो श्रृंखला कृतं होती हैं क्या जो मानो देखो, यज्ञमान अपने जीवन में प्रसन्न होता है आभावादी बनता है तो जब ऋषि से यह प्रश्न किया कि महाराज! यह क्या कर रहे हो? तो वह उस प्रोक्षण का उत्तर देते हैं क्या याग को मानव के शरीर

से कटिबद्ध किया है, जो उसमें क्रियाकलाप होते हुए दृष्टिपात आ रहे हैं वह क्रियाकलाप प्रायः देखो, सर्वत्रता में निहित रहने वाले हैं। मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ यह विवेचना तो बड़ी विचित्र मानी गई है, और गम्भीर भी हैं परन्तु विचार यह कि प्रोक्षण रूपों में दो प्रकार के ही क्या माता के गर्भस्थल में जब यह शिशु हम सब विद्यमान थे, तो देवताजन जब इनका परीक्षण करते थे, तो इनके आँगन में वृत्ति हो जाती मानो वह उस स्थली को त्यागने का प्रयास में रहते। तो मेरे पुत्रों! विचार क्या मानो देखो, समाधान इसका यह कि वह तीन स्थलियों पर जल होता हैं, एक स्थली पृथ्वी की होती है, द्वितीय समाधान आचार्य बलवेतु ऋषि ने किया था, बलवेतु ऋषि ने कहा कि आओ, हम मानो देखो, इसको अपने में धारण करते चले जाएं। धारयामि बना करके रूद्रो भागं ब्रह्म व्रतं देवाः मेरे प्यारे! देखो, यह जो प्रोक्षण की प्रतिभा है, माता के गर्भ में भी तीन ही स्थलियों मैं मानव जलाशय में शिशु कटिबद्ध रहता हैं, कटिबद्ध होने से मानो देखो, वह शिशु के आँगन में परिणत हो जाता है, एक मानो देखो, उसका समाधान यह क्या जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया, तो सृष्टि के सृजन करने से मानो पूर्व की संसार की रचना की वह भी एक प्रोक्षण के रूप में हैं, जब वह रचना हुई तो रचना के प्रारम्भ होते ही मानो देखो, अपने में अपनेपन और दृष्टिता वाचन्नं ब्रह्मे कृत लोकाः मेरे प्यारे! देखो, वही प्रोक्षण जब माता के गर्भस्थल में शिशु होता है, तो वही प्रोक्षण मानो देखो, उस गर्भस्थल में माता के द्वार पर होता है, तो मानो देखो, जब माता के गर्भस्थल में शिशु हैं, तो तीन समय तीन दिशाओं में देखो, पांशे, ओढ़न और आसन एक पांशा नही होता, तो मानो देखो, वह एक विचित्र याग बन गया, और वह विचित्र याग का अभिप्रायः यह कि यागां ब्रह्मणां व्रत्यं यागा मेरे प्यारे! देखो, वही तो प्राणी जागरूक रहते हैं, जो मानव इस संसार की प्रतिभा में लगे रहते हैं, जो मानवीयता का दर्शन करते हैं और अपने में रत्त रहने वाले।

याग में मानसिक भाव

तो मेरे प्यारे! देखो, एक इसका उत्तर यह बना क्या माता के गर्भस्थल में भी वह विद्यमान है, परन्तु देखो, तृतीय रूप इसका यह बन जाता हैं सम्भवितां सम्भवे वाचन्नममा सम वस्तुतं मेरे प्यारे! देखो, प्रत्येक आभा में वह तन्मय हो करके तो विचार करता है मानो देखो, वृत्तियाँ भी तीन प्रकार के रूप में रत्त रहती हैं, उन्हीं प्रवृत्तियों में पुनः उसका उत्थान किया जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह विचार, केवल यागां ब्रह्मे वह अग्निहोत्र करता है, अग्नि की धाराओं पर विचार करने लगता है। तो उसमें शब्द मानो उसका हृदय का उदगार, वह उन तरंगों में निहित हो करके अन्तरिक्ष में गति करता हैं। तो मानो यह भी एक रूप बना परन्तु जब हम योगां ब्रह्मणां यागां रूद्र भागा जब हम याग में प्रवेश होते हैं तो याग अपने में अनूठा हैं, मानो देखो, योग उसमें परिणत हो जाता हैं। जब यागां ब्रह्मणा यागां देवं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, जब हम यागां ब्रह्मा कृतं लोकां वाचन्नमाः मेरे प्यारे! देखो, वह उसमें योग में परिणत होना चाहता हैं, प्रबल इच्छा बनी रहती है, क्या मैं योग में जाना चाहता हूँ मानो देखो, याग जैसे यज्ञमान निर्वाचन करता हैं, होताजनों का इसी प्रकार मानव जगत में भी, मानसिक जगत में भी चिन्तन होना चाहिए। परन्तु द्वितीय उन्होंने एक वाक् कहा हैं सम्भवितां भवि कृणां ब्रह्मा वाचो देवाः मेरे प्यारे! देखो, एक वाक् यह आता रहता हैं प्रोक्षण जैसे समुद्र वृत्तियों में रत्त रहने वाला, अग्नि का ध्यान करता है देवी से कहता है दिव्या से। आओ, और अब हम अग्न्याध्यान करेंगें अग्नि को प्रदीप्त करना चाहते हैं क्योंकि यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है नाना प्रकार के साकल्य, समिधा के द्वारा और वेद के विचारों का तरंगें, उसमें प्रवेश कर गई हैं। तो मानो देखो, यह याग हैं, ऐसा जो याग है वह मानव को प्रियता में परिणत नही हुआ करता हैं, यागां ब्रह्मणे लोकां वायु सम्भव ब्रह्मे कृतो अस्ता मेरे प्यारे! मैं यह विचार दे रहा था, क्या जिस प्रकार याग है, यह मानव का शरीर भी, उसी प्रकार माना गया हैं। परन्तु जब यह मानव प्रोक्षण करता हैं आपो अग्नि में ज्योति आहुति प्रदान करता हैं तो

वही आहुति बन करके, स्वाहाः के साथ में अन्तरिक्ष में गमन करती हैं, उसको जिस भी काल में तुम अग्नि में प्रवेश करना चाहते हो, वह मानो देखो, उसमें, उसका दोनों का समन्वय हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, योगां ब्रह्मणां कृतं लोकां वाचन्नमाः तो मेरे पुत्रों! देखो, ये तो हमारा बाह्य याग हुआ, जिसमें ब्रह्मा, उद्गाता, अध्वर्यु जिसमें हिंसा नही होती, अहिंसक होता है याग, वह जो अहिंसक होता है, उसी को हमने ऊँचा बनाना हैं, जिससे हमारे मानसिक भाव का जन्म होता है, मानसिक चिन्तन में चिन्तनीय बन जाते हैं।

तो मेरे पुत्रों! देखो, मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, केवल यह कि आज मैं तुम्हें योग में भी प्रवेश कराना चाहता हूँ, जैसे एक मानव निर्वाचन प्रणाली में, विशुद्धता को प्राप्त नही होता है, इसी प्रकार यज्ञमान अपने में विशुद्ध प्रणाली को अपने में लाना चाहता है और विशुद्ध और पवित्र प्रणाली को, जब वह ऊँचा बनाने में तत्पर हो जाता हैं, तो उसको मानवीयता का प्रायः दर्शन होता रहता हैं, तो आओ, मेरे पुत्रों! विचार क्या यह बाह्य जगत है जहाँ परमपिता परमात्मा ब्रह्मा हैं आत्मा यज्ञमान है पंच महाभूत मानो देखो, याग की आत्मा हैं याग में या याज्ञां ब्रह्मणे वह यागों में परिणत रहता हैं जागरूक रहता हैं जिससे वह अपनी प्रवृत्तियों को ब्रह्म से मिलान मिलाता रहता। इसी प्रकार अब आईए आध्यात्मिकवाद में, आध्यात्मिकवाद हम किसे कहते हैं? आध्यात्मिकवाद उसे कहते हैं जहाँ मानव, नाना प्रकार की वस्तुओं को अपने में, अपने में कृत करने लगता हैं मानो देखो, योगां ब्रह्मणां ब्रहे जैसे हमारे यहाँ सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य की विवेचना आती रहती है, मानो हम दो स्वाध्याय ईश्वर प्राणीधान की चर्चा आती रहती है। तो यह विचार, मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट किए हैं। यह कहा है कि यह विचार सतोगुणीय और गम्भीरतव कहलाते हैं, जब इनका स्वरूप विशुद्ध रूप समष्टि रूप में आयेगा तो उसके ऊपर पुनः विचार-विनिमय किया जा सकता हैं।

परमात्मा का यौगिक क्षेत्र

तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार ये ऋषियों का विवाद ऋषियों की विवेचनाएं प्रारम्भ जब होने लगती हैं, तो उसमें एक नृतिका, नृत्त करने लगती है बेटा! वह ज्ञान रूपी जो पवित्र अग्नि है, या शोषण प्रणाली है, उस मानो देखो, प्रणाली को अपने में धारण करते हुए, इसी प्रकार मैंने प्राणों की चर्चाएं की हैं, प्राणों की बहुत समय से चर्चा करतै चले आ रहे हैं, यह प्राण क्या है, मानो देखो, यह प्राण दस कहलाते हैं, दस से आगे इस प्राण का कोई वैज्ञानिक विभाजन नही कर सका हैं, और न कर सकता है, क्योंकि वह इतना व्यापकतव माना गया हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, वह इतना व्यापकतव है, जिसके जानने में जिसकी धारयामि में मानव देखो, फिर से नृतिका अपने में नृत्त करने लगती है, तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या चल रहा है, मैं अपने विचारों की आज मानो पुनरूक्ति नही आज तो मेरे प्यारे महानन्द जी भी प्रेरणा दे रहे हैं। परन्तु आज का विचार तो केवल हमारा यह है क्या हम मानो देखो, जब योगाभ्यास यह प्राण क्या है? बेटा! देखो, सबसे प्रथम प्राणायाम प्रणव ब्रहे कृतं वह प्राण कहलाता हैं। जो मानव के दुखो हरण करता है अथवा पवित्रता का श्वास की गतियां प्रारम्भ हो जाती है। तो जानो की अपनी आभा में वह सफलता को प्राप्त हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि यही कहता है, वेद का आचार्य यही कहता हैं, क्या हे मानव! तू योगी बन और योगी कैसे बनेगा प्रत्येक मानव के पश्चात उनके विचारों में कोई न कोई इस प्रकार की रूढ़ि नियत होती है, जिस रूढ़ि के कारण वह अन्धकार में चला जाता हैं, और रूढ़ि बन करके ही नही मानो देखो, वह रूढ़िवान बन करके अपनी मानवीय प्रवृत्ति को समाप्त कर लेता हैं, तो मानो देखो, इस प्रकार हम योग में प्रवेश करना चाहते हैं। हमारे यहाँ योग की बड़ी विचित्र विवेचनाएं आती रही हैं, बड़ी विचित्र चर्चाएं आती रही हैं, जहाँ योगेश्वर योगां ब्रह्मणा योगां भविते मेरे प्यारे! देखो, योग में प्रवेश होना है, जैसे हम मृत्यु में प्रवेश कर रहे हैं। मेरे प्यारे! ऐसा क्यों कहा गया उन्होंने कहा कि एक आसन लगा हुआ हैं, यदि

उसमें क्रियाकलापों के युक्त कोई क्रीड़ा हो रही है, तो वह मानव के लिए महान हैं, और यदि विपरीत रूप से की जा रही है, तो वह विषधर बन जाती हैं। तो मेरे प्यारे! आज मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार देता हुआ दुरी न चला जाऊं, विचार केवल यह है कि आज हम योग में प्रवेश करना चाहते हैं, हम परमपिता परमात्मा का जो यौगिक के क्षेत्र रचित रूप में दृष्टिपात आ रहा है इसी प्रकार हम मानो देखो, उसका दर्शन करना चाहते हैं, उसको अपने में धारयामि बना करके धारण करते हुए, अपने में मानो देखो, अपने सूर्य देवतव में रत्त रहते हैं तो विचार आता रहता है, कि योग किसे कहते हैं, यह प्राण क्या हैं मेरे प्यारे! देखो, सबसे प्रथम प्राण का नामोकरण आता है, प्राण किसे कहते हैं बेटा! प्राण उसे कहते हैं, जो गति देने वाला हैं, प्राण केवल ज्ञान से शून्य है, परन्तु गति देता है, वह योगी कुछ हमें जो क्रियाकलाप कर रहे हैं वाणी के द्वारा शरीरों के द्वारा यह सब मानो देखो, उससे उपराम होने के हैं, यह प्राणां ब्रह्मा अकृत रूद्र शामं ब्रहे योगा मेरे पुत्रों! देखो, वह योग में परिणत होता है, योगेश्वर प्राण को जानता है।

मुझे स्मरण आता रहता हैं, त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ देखो, महाराजा बालि का एक पुत्र था, जिसका नाम अंगद कहलाता था, उसके हृदय में सदैव ये प्रेरणा रहती थी कि मैं एक योगी बनूं, प्राण को संचार रूप से जानूं, तो मानो देखो, वह ब्रीति ऋषि महाराज, एक हिमालय तो ब्रीति ऋषि के द्वार पर पंहुचे और ब्रीति ऋषि से यह प्रार्थना की कि महाराज! मुझे आप योगी रूप में निर्वाचन कीजिए। उन्होंने देखो, यह वाक् श्रवण कर लिया परन्तु सान्त्वना में परिणत हो करके ब्रह्मे कृतं वायु सम्भवं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, वह जब ऋषि के द्वारा अध्ययन करते थे, तो ऋषि ने प्राण को एकत्रित करने के लिए तत्पर हो गये, उन्होनें एक संकल्पोमयी प्राणायाम उन्हें उनका प्राण का प्रादुर्भाव उसकी रचना का उन्होंने वर्णन किया। परन्तु देखो, वह उसके अभ्यास में लग गये, तो वह ऐसे मानो देखो, बालि पुत्र थे, क्या वह सर्वत्र अंगों में वृत्तियों में जानने वाले बने, परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार की आभा, रूद्र शमं ब्रह्वा मुनिवरों! देखो, वह अपने में मानो देखो, जब प्राण को जानना चाहते थे, वहीं सिद्ध कर देते थे। इसीलिए जब राम और रावण दोनों का संग्राम हुआ तो राष्ट्रीय दूत अंगद को प्रवेश किया गया और बाध्य किया कि तुम जाओ, लंका के द्वार पर जाओ। तो मानो वह लंकेश के लिए गमन करते हैं। जब लंका में पंहुचे तो वह जब सीता के लिए उन्होंने कहा आपका यही कृत नृत्त हैं क्या दोनों एक मानवीय प्रतिष्ठा में लगे हुए हो, आज रावण क्या तुम इस प्रतिष्ठा में लगे हुए हो, क्या मैं इसे सम्मिलित नही करूंगा क्या यह तुम्हारी धृष्टता है, यह कोई विचार मुझे प्रतीत नही दे रहे परन्तु देखो, इतना उच्चारण करने के पश्चात, मानो अंगद ने अपने पग को भूमि पर स्थिर कर दिया, और शरीर का जितना प्राण था, वह एक ही पग में आ गया। पग में आने से जब राजा रावण के यहाँ सहपाठी नाना सहपाठी उनके उनके पग को समाप्त करने लगे, तो ब्रह्मणे देखो, उस समय देखो, राजा रावण रह गया, उसी से रावण का अपमान किया।

तो परिणाम क्या मानो देखो, यह प्राणायाम क्योंकि प्रक्रिया है जिसको हम अपने में धारयामि बनाना चाहते हैं, तो मेरे प्यारे! देखो, एक तो यह योग कहलाता हैं, योग वह है जो मनस्तव प्राणतव दोनों को एक सूत्र में लाने के लिए तत्पर होता है, और जो उसे लाना चाहता है, वह अपने में पवित्रता की आभा में निहित हैं तो मानो बेटा! देखो, मुझे ऐसा स्मरण हैं, क्या योगी अपनी आभा में मानो देखो, वह खेचरी मुद्रा में, परिणत रहता है, वह प्राण और अपान के मिलान में लगा रहता हैं मन और प्राण दोनों को एक सूत्र में लाने का नाम योग कहलाता हैं। वह जब योगेश्वर प्राण को जान लेता है, अपान को भी जान लेता हैं, दोनों की जानकारी से मानो उसे अवगत हो जाता है। तो परिणाम मानो देखो, योगेश्वर अपने में महानता का दर्शन करके, प्राण और मन को संकल्प रूपी प्राण में मानो ओत-प्रोत कर देता है, तो ऋषि रूप में उसका ब्रह उत्पन्न होता हैं उसकी कीर्ति मानो भिन्न-भिन्न रूपों

में हुआ करती हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या योग अपने में कितना नृत्त कर रहा हैं पांचो प्राणों को एक सूत्र में लाना, पांचों प्राणों को हम ब्रह्माण्ड से उसका समन्वय करना है, यह हमारा प्रिय कर्तव्यवाद माना गया है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, योग, आत्म चेतना से उसका समन्वय रहता हैं। परन्तु देखो, दोनों आत्म लोक योगां ब्रह्मणे देखो, भौतिक विश्वासम तो मानो देखो, एक सूत्र में रह करके ही क्रियाकलाप विचित्र बन सकते हैं। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है, क्या मानव योग में जैसे मन और प्राण नम्र हो करके शरीर का व्यवधान करते रहते हैं, इसी प्रकार बाह्य जगत में भी निर्णय होता रहता हैं, विचार आता रहता है, उसी आभा में मानो देखो, आभयित हो करके, सागर से पार होने के लिए वह कल्पना बद्ध रहता हैं। तो मेरे प्यारे! विचार देता हुआ, मैं दूरी नही जाना चाहता हूँ विचार केवल यह है कि जब महाराजा विश्वामित्र ने देखो, अपने में योगा आरूढ़ हो गये, गायत्रणी छन्दों का पठन-पाठन करते हुए वह जब उसमें आरूढ़ हो गये, और आरूढ़ होने के पश्चात, उसी से वह कल्पना करते रहते थे। और विचित्र-विचित्र कल्पनाओं में, वह अपने को ले जाने का सदैव प्रयत्न करते रहे, जब वह कल्पना मात्र से अपने आभा में निहित हो गये, तो मानो देखो, वह योगां ब्रह्मणे बृहे व्रतं मुनिवरों! देखो, मनस्तव, प्राणतव को मिलान करते हुए, गायत्री छन्दों का मिलान करते हुए, एक-एक शब्द में ब्रह्माण्ड का दर्शन करते हुए, मेरे पुत्रों! मुझे ऐसा स्मरण है, क्या जब वह तपश्चर हो करके, योगाभ्यास हो गया, तो मानो देखो, उसे अभिमान हो गया। प्रकृति के आवेशों में जा करके उसे अभिमान हुआ, जब अभिमान हो गया तो उसी अभिमान को ले करके महाराज वशिष्ठ मुनि महाराज के द्वार पर पंहुचे, और वशिष्ठ से कहा सम्भो ब्रह्मा मानो देखो, वशिष्ठ से कहा कि ब्रह्मे वृतं उन्होंने कहा तुम तो ब्रह्मवेत्ता नही, राजर्षि हो मानो देखो, राजर्षि उच्चारण करते हुए उनका तपस्या का प्रहा बड़ा ऊर्ध्वा में रहता, परन्तु देखो, ऊर्ध्वा में रहने के नाते, वह कोई विवेचना नही दे सके, न कर सके। परन्तु विचार आता रहता है बेटा! उसी विवेचना में, विवेचनित हो करके, मानव अपनी उड़ाने उड़ता रहा, तो महर्षि विश्वामित्र ने, अपनी उड़ाने उड़ी, वह नम्रता जब तक उसमें नही आई, तो जब तक योग सिद्धता प्राप्त नही हुई। तो उन्हें नम्रता आई, तो विचार क्या, कि वेद का अध्ययन करना, वेदों का मन्त्र उच्चारण करना, परन्तु देखो, उसके पश्चात, अध्ययन करने करने के पश्चात प्राण और अपान को मिलान मिलाना मानो देखो, मानो देखो, यह प्रियता नही विचार केवल यह है कि जब तक उमसें नम्रता सहिष्णुता नही आती विचार और प्रभु का वह प्रियतम नही होता। तब तक मुनिवरों! देखो, वह योगेश्वर या ब्रह्मवेत्ता नही बन पाता।

तो विचार आता रहता है कि हम अपने में योगाभ्यास करें और योग में परिणत हो जाएं, परन्तु हमारे यहाँ ऋषि-मुनि भंयकर वनों में रह करके, यही तो क्रियात्मक कराते रहे हैं, यह उसी विज्ञान में, जो आध्यात्मिक मानो देखो, याग में, जिसे हमारे यहाँ विष्णु याग कहते हैं, वाजपेयी याग और इष्टोम याग भी कहते हैं मानो देखो, उन यागों के क्रियाकलापों को यज्ञमान के द्वारा हे यज्ञमान! तू अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके, तू मानो जल का प्रोक्षण कर रहा है, जैसे परमपिता परमात्मा ने यह मानो देखो, समुद्र को रचा हैं पृथ्वी को देखो, उसकी पृथ्वी के ऊपर समुद्र हैं और वह समुद्र के उग्र रूप में मानो यह पृथ्वी है, जैसे मेखला में यज्ञमान, जल का सिंचन कर रहा है, मानो देखो, समुद्र एक मेखला बन करके रहती हैं। विचार आता रहता है, परमात्मा का अनूठा जगत हैं, मानो देखो, यदि वह जल आपो नही होगा, तो यह मानो प्राणी मात्र भी नही रहेगा, इसीलिए जल आपो हैं और वह समुद्र के रूप में विद्यमान हैं वही सूक्ष्म रूप बना करके मानो देखो, इसका प्रसारण कर देता हैं। अग्नं ब्रह्मा यज्ञमानाः हे यज्ञमान! तू अपनी अग्नि को जागरूक करके, मानो तू विराजामान हो और यज्ञमान अपनी मानो देखो, देवी! से कहता है आओ, देवी अब हम याग में परिणत हो जाएं तो मानो देखो, याग में प्रोक्षण करता हैं देखो,

प्राणों की आहुति देता है। मेरे प्राणों में बाह्य जगत और आन्तरिक जगत दोनों में प्राणसत्ता क्रियाकलाप में आती रहती हैं। ऐसा भाव दे करके वह मानो देखो, वेद का प्रारम्भ करता है, प्रत्येक शब्द उसका प्रत्येक क्रियाकलाप वह मानो देखो, अन्तरिक्ष में प्रवेश कर रहा हैं, वह द्यौ में प्रवेश कर रहा है, इसी प्रकार योग और देखो, याग जो हैं देखो, वह याग करता हुआ देखो, सुगन्धि कर रहा हैं, अग्रणीय बन करके, वह योग में जा रहा हैं, प्राण सत्ता को ले करके देखो, विज्ञान में प्रवेश कर रहा है। तो मानो देखो, वह आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता बनना चाहता है, आध्यात्मिक विवेचना में रत्त हो करके अपने को महान बनाना चाहता हैं। हे यज्ञमान! मेरा अन्तर्हृदय तो केवल यही कहता रहता है यज्ञमान अपने जीवन में यज्ञमान ही बन करके रहे यज्ञमान! कहते हैं जो याग का संरक्षण करने वाला हैं मानो वही उद्गाता को निर्वाचित करता हैं वही होता का निर्वाचित करता है, वही मानो देखो, अध्वर्यु उद्गाता का निर्माण करता है, उद्गाता से जब यह प्रसन्न किया जाता है, हे उद्गाता! तू उद्गीत गा रहा हैं, मानो तू उद्गीत तेरे जीवन से इसका क्या समन्वय हैं? मेरे प्यारे! देखो, उद्गाता उत्तर देता है, क्या मेरा समन्वय मानो देखो, मेरा तो उदगार है, यह प्रत्येक यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाना है। होताजन जब स्वाहा कह करके अग्नि में देखो, ऊर्ध्वा उद्गीत गाते हैं, ऊर्ध्वायुक्त ब्रहे मानो देखो, वही तो शब्द अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह मानो देखो, द्यौ लोक में प्रवेश करता रहता है। वह द्यौ लोक वाले शब्द को जब विचारता है तो यज्ञमान कहता है कि महाराज! यह अध्वर्यु क्या है? वह कहता है अध्वर्यु मानो देखो, पहले उद्गाता के सम्बन्ध में कहा जाएं उद्गाता अध्वर्यु दोनों अध्वर्यु कहते हैं, जो हिंसा से रहित हैं, जो क्रियाकलाप हिंसा से रहित है, मानो देखो, अहिंसा से युक्त है, उसी का नाम याग कहलाता हैं। मानो देखो, इस प्रकार की विवेचना परम्परागतों के ऋषि-मुनियों में प्रायः होती रही हैं, याग में देखो, अध्वर्यु उद्गाता जो उद्गीत गाते वाला उदगान गा रहा हैं, उदगान के गाने वाले से प्रश्न कर रहा है, हे उद्गाता! हे उद्गीत गाने वाले! तू कैसे उद्गीत गा रहा है? वह उदगम ब्रह्मा उदगनमं ब्रह्मे मानो देखो, वह उद्गाता क्योंकि वह उद्गीत गा रहा है देखो, वेदमन्त्र का समन्वय अग्नि से हैं, देवताओं से है, और देवताओं का सम्बन्ध द्यौ से हैं, और द्यौ का समन्वय मानो देखो, सूर्य से हैं, और सूर्य से देखो, समन्वय होता हुआ मानो देखो, त्रिकोण बन करके मेरी वाणी अन्तरिक्ष में सूर्य की किरणों के साथ अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके वह द्यौ लोक में प्रवेश कर जाती है।

तो मानो देखो, इस प्रकार जब वेद का ऋषि उद्गीत गाता हैं, यज्ञमान को कहता है, यज्ञमान की पत्नी कहती है, हे उद्गीत गाने वाले! हे उद्गाता! तुझे उद्गाता क्यों कहते हैं! उन्होंने कहा इसीलिए उद्गाता क्योंकि मेरी वाणी में पवित्रता आ जाएं और वेद के मन्त्रों से मेरी वाणी मेरा शब्द सजातीय हो जाएं जिससे वह शब्द अनुशासन में दोनों में देखो, उस वायुमण्डल को पवित्र बना सकेगा मेरे प्यारे! देखो, जैसे किसी गृह में याग और देखो, दर्शनों का अध्ययन होता हैं एक ही गृह में देखो, प्रवेश और देखो, एक दूसरे विचारों में सम्भृत बना हुआ हैं तो दोनों गृह में मानो देखो, दोनों का स्वरूप भिन्न हो जाता हैं वही गृह है वही स्थली हैं तो मेरे प्यारे! देखो, उग्र रूप बन जाता हैं तो विचार आता है, वह कहता है, अध्वर्यु कहता है, उद्गाता के रूप में अध्वर्यु से कहता है, हे अध्वर्यु! तू मानो देखो, अहिंसावादी हैं, और वह भी अहिंसावादी देखो, देवताओं के सम्बन्ध में उसी देवता की आहुति यज्ञ में परिणत कराना चाहता हूँ। जिससे वह वायुमण्डल में छायामान हो जाएं, और उसी से मानो देखो, विचित्रता बन जाएं। तो मुनिवरों! देखो, वह कहता है कि हे उद्गाता! देखो, यज्ञमान कहता है कि उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उद्गाता का समन्वय सूर्य से होता है, सूर्य की किरणें जब मानो ऊर्ज्वा को ले करके आती हैं तो वह उद्गीत गाने वाला देखो, उद्गाता हैं वह उद्गीत गाता है, सूर्य की किरणों के साथ जैसे सूर्य की किरणें उद्गाता बन करके दिवस की रचना करती है। दिवस को भिन्न-भिन्न देखो, ज्योतियां दे करके और दिवस को विज्ञान के रूप में

परिणत करा देती हैं, तो मानो देखो, वेद का ऋषि और यह ऋषि उड़ाने उड़ रहा हैं, और वह कहता है देखो, पुनः यह प्रश्न किया गया हे उद्गाता! तेरा मानो देखो, उद्गाता का देवता कौन हैं? उन्होंने कहा उद्गाता का देवता वायु हैं, वायु ही शब्दों को गमन कराने वाला हैं और गमन करा करके वह देवताओं की प्रतिभा बन करके रहती हैं और वही वायु का जो स्वरूप गति हैं, गतिवान बन करके प्राण को गति आत्म देखो, मनस्तव को गति और देखो, ज्ञान को ले करके आत्मा का हो करके ही मानो देखो, सब गतियां मिल करके एक मानो देखो, उद्गाता के रूप में वह उद्गाता बन करके वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाती हैं।

परमात्मा की वाणी वेद

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान की पत्नी कहती हैं। हे ऋषिवर! हे उद्गातां उदगं ब्रह्मे उदगत्यं मानो देखो, तू उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा उद्गाता कहते हैं यज्ञशाला को जहाँ उद्गीत गाया जा रहा है, जहाँ उद्गाता के अन्तिम चरण मानो देखो, उस यज्ञशाला में युक्त हो जाते हैं कैसे लुप्त होते हैं, एक स्वाहा उच्चारण किया, तो उसकी जो आन्तरिक जो भावना हैं, वह साकल्य में लुप्त हो गई हैं, साकल्य का अग्नि ने विभाजन कर दिया हैं, और वही अग्नि स्वरूप बन करके वह वही परमाणु बन करके सूक्ष्म रूप बन करके मानो देखो, उद्गाता का जो अन्तिम चरण हैं, वह विभाजन में और विभाजन मानो अन्तरिक्ष में, और अन्तरिक्ष देखो, वह क्रिया परमाणु में विभाजनवाद आ गया हैं। उसी विभाजनवाद में मानो देखो, उसकी लुप्त होती क्रिया का स्वरूप एक लिप्त रूपों में परिणत हो जाती हैं वह व्यापत हो जाता हैं। मेरे प्यारे! देखो, देवी बड़ी प्रसन्न हुई इतने में यज्ञमान ने कहा कि हे उद्गाता! तू उद्गीत गा रहा है यह किस लिए गा रहा हैं, उन्होंने कहा मैं उद्गीत इसीलिए गा रहा हूँ, क्या वेदमन्त्र परमपिता परमात्मा की वाणी हैं? और यह परमपिता परमात्मा ने यह मानो शरीर का निर्माण माता के गर्भस्थल में किया हैं देखो, जब माता के गर्भस्थल में से माता मानो उद्गीत गा रही थी और देखो, जब वेद के मन्त्र का समन्वय होता हैं, तो मैं वेदमन्त्र का जब उच्चारण करता हूँ, तो माता के गर्भाशय का और मेरी वाणी का दोनों का समन्वय हो करके मानो देखो, उसमें जो परमपिता परमात्मा का जो हिरण्यमयी गर्भ हैं, शब्द है और शब्द इसकी जितना यह ब्रह्माण्ड है, जितना यह जगत है यह हिरण्यमयी गर्भ में परमपिता परमात्मा के गर्भ में वास कर रहा हैं, इसीलिए मैं हिरण्यगर्भ का उद्गीत गा रहा हूँ इसीलिए मुझे उद्गाता कहते हैं मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार उत्तर दिया तो मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि विश्वामित्र इस प्रकार की विवेचना करते रहते थे।

तो पुनः बेटा! देखो, यज्ञमान देवी ने कहा-प्रभु! आपको उद्गाता किसलिए कहते हैं? उद्गाता का अन्तिम चरण क्या हैं? मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा कि उद्गाता का चरण प्राप्त होता है, उद्गीत से तालु से, जहाँ तालु और रसना का दोनों का समन्वय होता है, दोनों का मिलान होता है, तो शब्द बन जाता है, वही शब्द बन करके मानो अन्तरिक्ष में जाता हैं और अन्तरिक्ष में द्यौ लोक में प्रवेश करता है। वही शब्द मानो देखो, गति करता है, वही शब्द श्रोत्रों का विषय बन जाता हैं, तो दिशाओं में परिणत हो जाता हैं। जिससे मैं दिशाओं का गान गा रहा हूँ, उद्गीत गा रहा हूँ, क्या यह देखो, जो आठों दिशाएं हैं, यही मेरे श्रोत्र का मानो देखो, श्रोत्रीय नृत्त बने हुए हैं, जिससे मैं मानो देखो, इसे धारयामि बना करके, मैं इसको जान करके, मैं योग के क्षेत्र में जा सकूं, मेरे प्यारे! देखो, देवी प्रसन्न हो गई। उन्होंने कहा कि श्रोत्रों का वृत रहता है, उन्होंने कहा श्रोत्रों में शब्द भी हैं, चित्र भी है, और चित्र में विभाजनवाद भी है, सर्वत्र मानो देखो, विज्ञान की प्रतिक्रिया उसमें निहित रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, आज मैं याग के सम्बन्ध में क्या-क्या उच्चारण कर सकता हूँ, बेटा! यह तो ऋषि-मुनियों का एक विचित्र क्रियाकलाप हैं, तो सृष्टि के प्रारम्भ में आदि ऋषियों ने बेटा! वेद के मन्त्रार्थ अपने को जान करके मानो उसको निर्माणित किया था, यह याग मानो देखो, हिंसा से रहित हैं, यह याग अपने में यागां रूप बना हुआ हैं। मेरे पुत्रों देखो, एक-एक वाक्

को लिया जाएं अध्वर्यु है, जो हिंसा से रहित है, अध्वर्यु यह दृष्टिपात करता है, कि मेरे याग में हिंसा तो नही हो रही है। यदि याग में हिंसा हो रही है। साकल्य के द्वारा तो मानो देखो, वह साकल्य मानो देखो, वह साकल्य अव्रुत बन जाता हैं, तो मानो देखो, वही अध्वर्यु है वही अध्वर्यु हैं, जो मानो देखो, साकल्य विभाजन अग्नि के द्वारा कराता हैं वही अध्वर्यु है, जो हिंसा से रहित हो करके राजा बनता है। राजा को भी अध्वर्यु कहते हैं, जो राजा अपने राष्ट्र में यह विचार रहा है, क्या मेरे राष्ट्र में किसी प्रकार की हिंसा तो नही हो रही हैं, हिंसा कई प्रकार की होती हैं, एक हिंसा मानो प्राणी की होती है। एक हिंसा वह होती है जो एक दूसरे के विचारों में वृद्धपन आ जाता हैं। एक दूसरे के विचारों में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। तो वह भी मानो हिंसा प्रारम्भ हो जाती हैं, मेरे पुत्रों! ब्रह्मे देखो, शब्द की हिंसा मानव के हृदय को विदीर्ण करती है, और देखो, शब्दं ब्रह्मे कृतं उसे देखो, हृदय, हृदय नही हो पाता उससे विभाजनवाद बलवती हो जाता हैं। तो इसीलिए हे अध्वर्यु! तू मानो देखो, अध्वर्यु है, और तू अपने को मानो देखो, हिंसा से रहित इस राष्ट्र और समाज यज्ञशाला की वेदी को तू ऊँचा बनाना चाहता हैं, यह संसारवाद है, देखो, बड़ा विचित्र हैं, यह तो राष्ट्रवाद है, यह एक प्रकार की यज्ञमयी ज्योति मानी गई हैं, मैं राष्ट्र और विचारों की वेदी एक दूसरे का एक दूसरे के मानो देखो, अहिंसावादी बन करके अध्वर्यु बन करके वह उसका निर्माण उसकी पद्धति को ऊर्ध्वा में लाने के लिए सदैव तत्पर रहता हैं। और उसमें अपने को हूत कर देता हैं तो मानो देखो, विचार आता रहता हैं, वेद का ऋषि बड़ी-बड़ी विचित्र वाक् यह प्रगट कर रहा है, क्या राष्ट्र देखो, अपने में राजा नही होता राष्ट्र में जब प्रजा अपने-अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाती है, तो राष्ट्र की भी आवश्यकता नही रहती, एक दूसरा अहिंसा में प्राणी बन गया हैं। अहिंसा में परमोधर्म को अपनाता रहता है, और कर्तव्य का पालन करता है, एक दूसरा मानो द्रव्य के विभाग बनाना जानता हैं, अपने विचारों के विभाग बनाना जानता हैं, जो मानो देखो, जब प्रजा इस प्रकार की बन जाती हैं, उस प्रजा के लिए शासक की आवश्यकता नही होती अरे, शासक तो इसीलिए होता है। केवल जो मानो देखो, शासक अप्रहा कृतं वेद का वाक् कहता है शासक तो इसीलिए होता है क्या वह प्रजा को अनुशासन में ला सके और जब प्रजा स्वतः ज्ञान और विवेक के माध्यम से प्रजा अपने में अनुशासित हो जाती हैं, अपने कर्तव्य में रत्त हो जाती हैं, तो उसे मानो देखो, अनुशासन की आवश्यकता एक प्राणी मात्र के लिए नही हुआ करती हैं। मानो देखो, वह तो अपने में अनुशासित हैं, वह तो अपने में क्रियात्मक योगाभ्यास करने वाले देखो, वर्तमान से ले करके सृष्टि के प्रारम्भ तक मानो देखो, जितने महापुरूष हुए है, प्राण के आत्मवेत्ता हुए है, उनका कोई शासक नही रहा है, उनमें देखो, किसी प्रकार का प्रतिबन्धन नही रहा है। अपने अन्तःकरण को ले करके दोषो रहित हो जाता हैं। जो राजा इस शरीर के आत्म तत्त्व को जान लेता हैं, तो उसके लिए राष्ट्र कोई राष्ट्र नही होता, वह राष्ट्र को ऊँचा बनाता हैं, वह दूसरे राजा को भी ऊँचा बना देता है। क्योंकि उसके लिए कोई शासक नही होता।

तो विचार केवल यह है कि आज हम अपने जीवन को एक महानता में ले जाना चाहते हैं विचित्रता में ले जाना चाहते हैं, प्रत्येक वेद मन्त्र। तो बेटा! याग की चर्चा, तो मैं केवल कल भी करूंगा, क्योंकि याग का एक बड़ा अनूठा विषय हमारे यहाँ बना रहता हैं याग बड़ा विचित्र हैं क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ में नाना ऋषि-मुनियों के विचारों में वेद के मन्त्रों से सजा हुआ, यह एक क्रियाकलाप रहा है वेद के मन्त्रों से जो भी सजायी हुई वेदी होती हैं जो क्रियाकलाप रहा है। वेद के मन्त्रों से जो भी सजायी हुई वेदी होती हैं जो क्रियाकलाप होता हैं वह अपने में पवित्र होता हैं अपने में महान होता हैं, और वह आत्मप्रेरणा के साथ प्रेरित हो करके क्रियाकलापों में रत्त हो जाता हैं बेटा! देखो, ये चर्चाएं मैं कल पंगट करूंगा। आज का विचार तो केवल यह कि हम अपने जीवन को अध्वर्यु, उद्गाता, के रूप में स्वीकार करें। उद्गाता जब उद्गीत गाता हैं तो देवताजनों से उसका समन्वय होता हैं, वह दिशाओं

को विजय कर लेता है, वह पृथ्वी को अपने में धारयामि वसुन्धरा स्वीकार करके इस सागर से पार होने का प्रयास करता हैं, आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, केवल परिचय देने के लिए आया हूँ, कि जैसे योगां ब्रह्माः यागाम् जो मानव जागरूक रहता है याग में रमण करता रहता है, और याग को जानता रहता है, वह अध्वर्यु बन करके उद्गाता बन करके अपने जीवन को महान बना देता हैं। पवित्र बना देता हैं, आत्मीयत्व में परिणत हो जाता हैं, और वही आत्मीयत्व मानव को मानवीय क्षेत्रों में दर्शनों में रत्त करा करके द्यौ लोक को प्राप्त हो करके और परमात्मा के रचाई हुए आनन्दमयी जगत को अपने में धारण कर लेता है। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा तो मैं इसकी शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा।

७ आत्मा का भोजन यज्ञ २७ ०२ १९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता हैं जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जा रहा था। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करता रहता हैं, अथवा उसके गुणों का वर्णन करता रहता हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, और उस परमपिता परमात्मा की जो अनन्तता है, वह मानो उस ब्रह्माण्ड और मानवता में सदैव निहित रहती हैं। तो आज का हमारा वेदमन्त्र, ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ रहा हैं, और भिन्न-भिन्न प्रकार के वाक् और उन वाक्यों की जो रचना हैं, वह बड़ी अनुपम मानी गई हैं। जिससे हमारा मानवीयतव उस आभा से मानो घिरा हुआ रहता है। हमारा यह वाक् प्रारम्भ हो रहा था याग के सम्बन्ध में, आज के हमारे वेदमन्त्रों में भी, याग के सम्बन्ध में कुछ विवेचना हो रही थी, हमारे यहाँ याग के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न, प्रकार का विचार-विनिमय होता रहा है। मानो इन विचारों को ले करके, जब हम अपने वाक्यों को प्रारम्भ करने लगते हैं तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात आता है, कि जो यह संसार है, यह एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में ही दृष्टिपात आ रहा हैं इन वाक्यों कि प्रायः मैं पुनरूक्तियां भी करता रहता हूँ, और विचारों में प्रायः यज्ञशाला का रूप, हमें दृष्टिपात आता रहता है। आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा आ रही है, क्या याग के सम्बन्ध में अपना कुछ विचार-विनिमय दिया जाएं। मानो देखो, पुरातन काल और याग के द्वारा ही मानो देखो, योगी जन, अपने में देखो, योगसिद्ध आत्मायें बना करती थी, प्रायः बनती रहती है, वह बनती ही नही प्रायः बनती रहती हैं। क्योंकि इस याग का नामोकरण एक प्रकार का मानो अनुष्ठान है, हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुष्ठान, प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आते रहते हैं। यागों का नामकरण भी भिन्न-भिन्न प्रकार का हैं उसी प्रकार हमारे यहाँ यज्ञशाला में यज्ञमान के विचारों से मानो देखो, मानो देखो, उनकी वृत्तियों का रूपान्तर होता रहता हैं जिस प्रकार का भी वह अनुष्ठान करना चाहता हैं, क्योंकि वेद का एक-एक जो मन्त्र है उस मन्त्र का जो देवता है, मानो वह उसके विचारों को जैसे विचारों का प्रादुर्भाव होता है, देवता वही, देवता विचारों को अपने में समन्वय करता हुआ मानो उसका विचारों का प्रसारण होता रहता हैं।

यज्ञशाला में अग्न्याधान

तो इसीलिए हमारे यहाँ जैसे इससे पूर्व काल में निर्णय देते हुए कहा कि यज्ञशाला में जब श्रोत्रीय यज्ञों की विवेचनाएं होती हैं, याग में अग्निष्टोम याग और यागों की चर्चाएं होती हैं। तो प्रायः ऐसा प्रतीत है, कि राष्ट्रं ब्रह्मे मानो देखो, जिसको हम अश्वमेध याग कहते हैं वह राष्ट्रीय आधार और उसकी एक मनोनीतता प्रायः दृष्टिपात आती रही हैं। मानो विचारने से ऋषि-मुनियों के ये प्रतीत हुआ है कि ऐसा हमें भी स्मरण आता रहा है, क्या हमारे यहाँ यह जो याग कर्म हैं, यह मानो देखो, सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा जाता हैं, इसको हमारे यहाँ देव पूजा कहते हैं देवपूजा का अभिप्रायः यह है कि जहाँ सर्वत्र देवताओं की पूजा होती हो, पूजा का अभिप्रायः यह है क्योंकि पूजन ब्रह्मे कृतं लोकां वायु सम्भवा पूजा वेद का आचार्य कहता है, वेद का मन्त्र कहता है कि पूजा का अभिप्रायः यह है कि जिसका सदुपयोग किया जाएं, तो और उस सत्यता को अपने को धारण किया जाएं मानो उसका नाम पूजा कहा जाता है। पूजा का द्वितीय के जो रूप है मानो देखो, यज्ञशाला में अग्नि का अग्न्याध्यान हो रहा है, अग्न्याध्यान हुआ और अग्नि से यज्ञमान यह प्रार्थना करता हैं होताजन जितने भी ऋत्विज विद्यमान हैं वे मानो देखो, करबद्ध हो करके, यह प्रार्थना करते हैं हे अग्नि! तू मानो भिन्न-भिन्न प्रकार के रूप में, तेरा प्रदर्शन होता रहता हैं, भिन्न-भिन्न

रूपों में तेरा अनुसरण किया जाता है। मानो देखो, जैसे अग्नि का अनुसरण करने वाला, मेरे प्यारे! मैंने इससे पूर्व काल में भी वर्णन किया, अग्नि का जब भान किया जाता है। तो अग्नि की पूजा मानो क्योंकि अग्नि सर्वत्र देवताओं का मुख कहा जाता हैं, तो इसीलिए वह अग्नि भिन्न-भिन्न रूपों में रहती हैं, मानो प्रायः शब्द के रूप में भी अग्नि हैं, मुनिवरों! वह तरंगों के रूप में भी अग्नि है, विद्युत के रूप में भी अग्नि हैं मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा का यह जो अनूठा जगत हैं यह अग्नि से मानो प्रभावित हो रहा हैं अग्न्या रूपम हो रहा है तो मानो देखो, यज्ञशाला में अग्नि प्रदीप्त हो रही है वह यज्ञमान जब प्रदीप्त करता है, तो वह अग्नि का सबसे प्रथम पूजन करता हैं, अब अग्नि कैसे सतौ में बनती है यह जो काष्ठों में रहने वाली अग्नि है, जैसे मानो परमपिता परमात्मा ने पृथ्वी रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया है, और यज्ञशाला के निर्माण में मुनिवरों! देखो, यह पृथ्वी अव्रतं देखो, यह उसके अन्तर्गत समुद्रों की रचना हुई हैं, आपोमयी ज्योति की रचना हो गई हैं मानो वह उसमें निर्धारित हो रहा हैं, देखो, पृथ्वी जो भी विष उगलती हैं, मानो जो भी इस संसार में अपने विचारों से विष उगल रहा हैं, पृथ्वी भी विष उगल रही है, उसको वह जो आपोमयी जो ज्योति है, समुद्रतव के रूप में हैं वही मानो देखो, उसका वह कृतियों में उसके विष को अपने में धारण करता रहता है, इसीलिए हमारे यहाँ देखो, यज्ञशाला में सबसे प्रथम अग्नि भी काष्ठों के द्वारा, उसका प्रदीप्त करना उसके पश्चात कलश का आहोरण होता हैं वह कलशं ब्रह्मे वृतं देखो, निराशचं ब्रह्मी वह जल का अवधान होता है, उसके पश्चात मेखला का जब निर्माण होता है, तो यज्ञमान सपत्नी देवी से कहता हैं दिव्या से, आओ, हम यज्ञशाला में, इस आपोमयी ज्योति की पूजा करना चाहते हैं। आओ, देखो, यह अन्नं ब्रह्मा देखो, बेटा! यही आपो है बेटा! देखो, पूर्व दिशा में यह मानो देखो, प्रकाश का द्यौतक है, और पश्चिम दिशा में यही मानो देखो, अन्न का द्यौतक हैं, और देखो, उत्तरायण में यही मानो देखो, सरस्वती विज्ञान का द्यौतक कहलाया गया हैं। हम जल का सिंचन करें, क्योंकि यह आपो ज्योति हैं, इसी आपो ज्योति में मानो हम सब विद्यमान रहते हैं, माता के गर्भस्थल में भी मानो देखो, इस अग्नि का व्यवधान हो रहा हैं, शिशु पनप रहा है मानो आसन और औढ़न बना हुआ हैं वाह रे मेर प्रभु तू कितना विज्ञानवेत्ता है जब मैं तेरे विज्ञान की विवेचना करने लगता हूँ तो तेरा कैसा अनूठा विज्ञान है माता के गर्भ में हम जैसा शिशु पनप रहा है परन्तु देखो, आसन कौन है औढ़न कौन है पांशे क्या बने हुए हैं बेटा! देखो, वही तो आपोमयी जल कहलाता हैं, आपोमयी कहलाता है, कितना उसका पूजन हो रहा हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, बाल के शिशु के आँगनं ब्रह्मा वही तो अमृत को पान कर रहा हैं मेरे प्यारे! माता जब विज्ञान के माध्यम से योगाभ्यास प्राण के माध्यम से, जब बालक को शिशु को अपने गर्भस्थल में मानो धारयामि बना करके उसको स्वीकार करती हैं या ध्यानावस्थित हो करके उस शिशु की प्रतिक्रिया के ऊपर मानो विचार-विनिमय करती है माता! तू अपने गर्भ से एक महान पुत्र को जन्म दे सकती हैं, मानो देखो, योगां ब्रह्मणां ब्रहे व्रत्यं योगी मेरे पुत्रों! देखो, वह योग में परिणत हो जाती है। मुझे स्मरण आता रहता है, मैं विशेष विवेचना तो देने नही जा रहा हूँ, परन्तु विचार आता रहता है, माता कौशल्या देखो, ऋषि की आज्ञा के अनुसार वह अपने क्रियाकलापों में सदैव परिणत रहती थी, और देखो, कला कौशल करके राष्ट्र के अन्न को ग्रहण न करना मानो देखो, ब्रह्मा प्रभा माता मानो देखो, योगाभ्यास प्राण के ऊपर वह संकल्पोमयी प्राण का अभ्यस्त, उसे बाल्यकाल से था। जब आचार्य कुल में अध्ययन किया जाता परन्तु देखो, बालक गर्भ में हैं माता अनुसन्धान कर रही है प्राण संकल्पोमयी प्राणायाम कर रही हैं। शीतली प्राणायाम कर रही है। मानो देखो, खेचरी मुद्रा में परिणत हो रही है, हे माता! तेरे गर्भस्थल में वह शिशु पनप रहा हैं, मानो तेरे विचारों को पान करता हुआ तेरे ही विचारों से उसकी निर्माण वृत्तियाँ बन रही हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, वह अप्रतं देखो, माता ही तो देखो, उसका व्यवधान कर सकती है, तो विचार

आता रहता है बेटा! मैं विशेष विचार न देता हुआ, इस सम्बन्ध में यह वाक् पुरातन काल में भी वर्णन किये।

त्रिवाद

तो मुनिवरों! देखो, यज्ञमान यह अपने विचारों में देखो, अपने में धारयामि बन करके उसका पूजन कर रहा हैं, और वह मानो देखो, जल का सिंचन कर रहा हैं, और परिक्रमा के साथ में भी उसका सिंचन किया जाता हैं। मानो देखो, प्रायः वास्तव में कर्म काण्ड की पद्धतियों में कर्मकाण्ड की आभाओं में मानो देखो, पृथ्वी के आँगन में सर्वत्रता में देखो, जल का संचय और जल का वृत किया जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह समुद्र की क्रिया है, यह समुद्र का वृत कहा जाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञमान जब इसके पश्चात देखो, जब वह जल का सिंचन करता हुआ, उसके पश्चात वह मानो देखो, प्राणं ब्रह्मा कृतं ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रहे वह अपने में देखो, आज्याहुति देता हैं। पवमानाया आहुति देता रहता हैं। और कहता है, कि हम अपने प्रभु को अपने में धारण करते हुए जैसे एक योगेश्वर अपने में पवमान बन जाता हैं, वह कैसे बनता है, कि भूः भुवः स्वः इन तीन व्याहृतियां को जान करके वह व्याहृति उच्चारण करके देखो, भू र्भुवः और स्वः ये तीन प्रकार के मानो देखो, त्रिवाद कहलाता हैं। इस त्रिवाद में यह तीन लोक बन गएं हैं सबसे प्रथम भु जितने पार्थिव तत्त्व वादी लोक-लोकान्तर हैं, उनका वर्णन आता रहता हैं भुवः मध्य में मानो जो परमाणुवाद गति कर रहा है, स्वः जो मानो देखो, स्वः जहाँ सबकी स्थिति लय हो जाती हैं, जैसे मानव के शरीर में जितनी भी इन्द्रियं है उन सर्वत्र इन्द्रियों का जो विषय है, वह हृदय में प्रवेश कर जाता हैं। तो मानो देखो, इस प्रकार जब वह अकृत होने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेषता देना नही चाहता हूँ, विचार केवल यह है कि प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय हैं वह मानो देखो, हृदय में समाहित होता हैं, इसी प्रकार हृदयं ब्रह्म रूद्र भागां ब्रह्मे वाचन्नं ब्रह्मा हृदय मेरे प्यारे! इसी प्रकार परमात्मा के हृदय में, यह मानो तीनों मण्डल, तीनों लोक-लोकान्तर अपने में परमाणुवाद की प्रतिभा में रत्त हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, इसी को विज्ञानवेत्ताओं ने वर्णन करते हुए आगे कहा है विज्ञानवेत्ता कहता है सम्भव ब्रहे ये तीन इस प्रकार के परमाणु होते हैं और तीनों प्रकार के परमाणुओं को ले करके हम संसार में गति करते हैं, नाना प्रकार के अणु और परमाणु मानो देखो, नाना प्रकार की वृत्तियों में रत्त हो करके विज्ञानेवता बन जाते हैं। इसी त्रिवाद को ले करके महर्षियों ने मानो तीन पदार्थों का वर्णन किया है आत्मा परमात्मा और प्रकृति मानो देखो, यह अनादि हैं यह त्रिवाद कहलाता है। ये तीन विचारों में तीन मात्रा मानो देखो, ओ३म् की कही गई है। अ, ऊ और म् यह तीन मात्रा वाला है। मेरे प्यारे! देखो, तीनं ब्रह्मा तीन प्रकार की विद्या है, ज्ञान, कर्म और उपासना यह त्रिवाद का यह ब्रह्माण्ड मुनिवरों! हमें यह दृष्टिपात आता रहता हैं यह त्रिवाद कहलाता है।

हिंसा से रहित याग

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, यज्ञमान यज्ञशाला में जाना चाहता हूँ मेरा सदैव अन्तरात्मा यह चाहता रहता है, यज्ञमान के सम्बन्ध में, अपना विचार व्यक्त किया जाएं, यज्ञशाला के रूप में मानो जो अध्वर्यु बनता है, मैं अध्वर्यु की चर्चा कर रहा था, अध्वर्यु उसे कहते है, जो हिंसा से रहित हो जो हिंसा से रहित होता है वही अध्वर्यु है जितना भी यज्ञशाला में द्रव्य है, साकल्य है, उस साकल्य का स्वामीतव करने वाला अध्वर्यु कहलाता हैं, वह मानो देखो, उसमें दृष्टिपात करता हैं, क्या साकल्य में किसी प्रकार की हिंसा तो नही हो रही हैं। मानो देखो, द्रव्य को, उस साकल्य को, चरु को ले करके वह मुनिवरों! देखो, यज्ञवेदी पर स्थित कर देता है, मानो उसके पश्चात जो होतागण हैं, होतागणों का ऋत्विजों को जो क्रियाकलाप बन जाता है, क्या जैसे अध्वर्यु हिंसा से रहित है, ऐसे ही वेद के पठन-पाठन करने वाला उद्गाता है वह भी हिंसा से रहित हो, जो ब्रह्मा है, वह भी हिंसा से

रहित हो, और देखो, जो होतागण मानो सर्वत्र हिंसा से रहित होने चाहिएं। हिंसा का अभिप्रायः क्या है, वह याग के मध्य में या याग के क्रियाकलाप जब तक उसने अपना संकल्प किया हैं, मानो उसकी वाणी मन, कर्म वचन एक सूत्र में रहने चाहिएं, मन, कर्म वचनों की चर्चाएं तो इससे पूर्व काल में भी हमने वर्णन की हैं, मानो देखो, वर्णन करते आचार्यों ने कहा मन, कर्म वचन इसी वाक्यों को ले करके एकाग्रता का एक-एक सूतक कहलाता है, जैसे हमारे यहाँ मन को एकाग्र करना है, मन, कर्म वचन दोनों को एक सूत्र में हमें धारण करना है, क्योंकि एक ही सूत्र के यह तीनों मनके हैं, और वह माला के मनके कहलाते हैं। जिनको धारण करने के पश्चात मानव अपने में मानवीयता का प्रायः दर्शन करने लगता हैं।

अध्वर्यु

तो मुनिवरों! देखो, जब वह अध्वर्यु से यह प्रसन्न किया गया, हे अध्वर्यु! तुझे अध्वर्यु क्यों कहते हैं? उन्होंने अध्वर्यु इसीलिए कहते हैं, कि हिंसा से रहित होने को हमारे यहाँ अध्वर्यु कहा जाता है, उन्होंने पुनः कहा कि अध्वर्यु तुम क्यों हो? किसे अध्वर्यु कहते हैं अध्वर्यु कहता है कि मैं मानो देखो, हिंसा अपने में मन, कर्म वचन से भी जो हिंसा न करता हैं, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके वह अध्वर्यु कहलाता है उन्होंने कहा कि हे-प्रभु! तू अध्वर्यु है। उन्होंने कहा अध्याम् ब्रह्मे जो अध्ययन करने वाला हैं, मानो प्रत्येक वस्तु का अध्ययन कर लेता है, इसके गुणों में क्या हैं? यह अन्तरिक्ष में जा करके इसका साकल्य का मानो प्रतिस्रोत होगा, मानो वह प्रायः देखो, वह इसको दृष्टिपात करता है, इसीलिए वह अध्वर्यु कहते हैं। उन्होंने पुनः प्रसन्न किया यज्ञमान ने कहा हे अध्वर्यु! तुम्हे अध्वर्यु क्यों कहते हैं? जो मानो अपने जीवन का स्वतः अध्ययन करने वाला है मानो देखो, जीवन को अपने में देखो, अपनेपन का दर्शन करता है, और वह हिंसा से रहित होता है, उसका नाम अध्वर्यु कहलाता हैं।

सूर्य का अध्वर्यु रूप

मेरे प्यारे! देखो, पुनः यज्ञमान ने यह प्रसन्न किया क्या हे भगवन! तुम्हें अध्वर्यु क्यों कहते है? उन्होंने कहा अध्वर्यु कहते हैं, प्राण को और जो पिण्ड का निर्माण करता हैं, जिसके कारण यह पिण्ड का निर्माण हो रहा है, चाहे वह पृथ्वी के रूप में हो चाहे वह लोक-लोकान्तरों के रूप में हो मानो देखो, वह जो पिण्ड का निर्माण करने वाला प्राणतव कहलाता हैं। उसमें गुरूतव उसमें तरलतव उसमें तेजोमयी मानो देखो, उसमें देखो, आगे गति और गति के पश्चात आगे स्थिरता जहाँ विराजामन होती है, उसका नाम अध्वर्यु कहलाता हैं जो पिण्ड का निर्माण करने वाला है, मेरे प्यारे! देखो, उस समय यज्ञमान तो मौन हो गया। यज्ञमान की पत्नी उपस्थित हो करके कहती है, हे अध्वर्यु! मैंने तो यह श्रवण किया है, कि अध्वर्यु नाम सूर्य का है, और तुम यहाँ प्राण का वर्णन कर रहे हो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा दिव्या से यह जो अध्वर्यु है, यह सूर्य भी कहलाता है, मानो देखो, सूर्य इसीलिए अध्वर्यु है, वह तेजोमयी के देने वाला है, एक पिण्ड है। मानो देखो, उसके लिए सत्ता प्रदान की गई हैं, क्या वह ऊर्ज्वा दे रहा है, मानो देखो, वह प्रकाश दे रहा है, वह अपने में देखो, वृत प्रदान करता हुआ, उसे हमारे वैदिक साहित्य वालों ने यज्ञशाला में उसका नाम अध्वर्यु कहलाया गया है। जो मानो देखो, किरणों वाला हैं, इसी प्रकार, जो नाना प्रकार की प्रतिभा वाला है, तेजोमयी है, ब्रह्मचारी है, मानो देखो, जो अपनी आत्मा को जानने वाला है, और आत्मा का समन्वय जो सूर्य के प्रकाश से करने वाला हैं, और प्रकाश सूर्य के प्रकाश में भी उसे रत्त करके परमात्मा से जो मिलन करने वाला हैं, वह अध्वर्यु कहलाता है। क्योंकि वह आध्यात्मिक याग कहलाता हैं।

चन्द्रमा का नाम अध्वर्यु

आत्मा प्राण और योग

मेरे प्यारे! देखो, अध्वर्यु के वाक् श्रवण करके यज्ञमान-देवी मौन हो गई उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि-प्रभु! मैने तो यह श्रवण किया, कि यह चन्द्रमा अध्वर्यु है क्योंकि यह चन्द्रमा अमृत देता हैं, शीतलता देता है, आपोमयी को अपने में धारण करने वाला है, यही मानो देखो, अप्रतो में देखो, जलाशय का पिण्ड बना देता हैं। मेरे प्यारे! देखो, अध्वर्यु कहता है, भगवन! दिव्या से मैं स्वीकार करता हूँ परन्तु देखो, अध्वर्यु हमारे यहाँ सूर्य को माना गया है, क्योंकि चन्द्रमा उसी से सुन्दर-सुन्दर किरणों को, कान्तियों को ने करके और उसका समुद्रों से समन्वय हो करके और वह सूर्य के देखो, वह ओझल होने पर मानो देखो, चन्द्रमा देखो, अमृत को ले करके बिखरने वाला है, वह माता के गर्भ में पिण्ड का निर्माण करने वाला है वही पिण्डेश्वर कहलाता है। मानो देखो, उसका समन्वय सूर्य से होता है सूर्य की ऊर्ज्वा शीतल हो जाती हैं, मानो देखो, दूसरे के मानो प्रति अस्तुतों वह दूसरे की प्रतिभा के आश्रित होती हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह उत्तर दिया देखो, वह अपने में मौन हो करके, विचार-विनिमय होने लगा परन्तु वह भी मौन हो गई और मौन हो करके अध्वर्यु ब्रह्मणे व्रतं। मेरे प्यारे! यज्ञशाला में निर्वाचन हो रहा हैं अध्वर्यु का निर्वाचन हो रहा है, मानो देखो, वह जैसे उद्गाता का उद्गीत गाने वाले का निर्वाचन होता है, इसी प्रकार वह ब्रह्मा के द्वार पर जाते हैं और वह कहते हैं हे ब्रह्मण! हे वेद के मर्म को जानने वाले! आपको ब्रह्मा क्यों कहते हैं? तो वह ब्रह्मा कहता है, सम्भो ब्रह्मा कृतं लोकां मुझे ब्रह्मा इसीलिए कहते हैं, क्योंकि मैं इस यज्ञशाला का अधिपति हूँ, उद्गीत मानो देखो, मेरे आश्रित हो करके गमन करता है, मेरे द्वारा ही मानो देखो, मैं अपने में इसको गमन कराता रहता हूँ, यज्ञशाला में अग्नि के समक्ष हो करके मैं प्रसिद्ध होता हूँ, और मैं मेरा निर्वाचन आ ब्रहे व्रतं मेरा निर्वाचन हुआ है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् स्वीकार कर लिया, पुनः पति और पत्नी यज्ञशाला में विद्यमान हुए, वह पुनः प्रश्न करते हैं हे ब्रह्मणे! तुम इसके ब्रह्मा क्यों कहलाते हों? उन्होंने कहा यह जो याग हो रहा हैं, मानो इसमें जो विचारों का प्रसारण हो रहा हैं, वे प्रत्येक साकल्य आहुति बन करके, हूत बन करके, अन्तरिक्ष में गमन कर रहा है, अन्तरिक्ष में रमण करने वाला हैं तो मानो देखो, वह अन्तरिक्ष से पुनः इस पृथ्वी पर आता है, शोधन करता हैं, अन्नाद का स्वामी है, मानो वृत्तियों का स्वामी है खनिजों का स्वामी हैं, स्वामीतव होने से मानो प्रत्येक आभा से मानो मेरा संरक्षण इसी के माध्यम से प्रति स्रोत हो रहा है।

ब्रह्मा

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो मानो देखो, यज्ञमान सपत्नी कहते हैं हे ब्राह्मण! हे ब्रह्मणं ब्रहे ब्रह्मा कौन होता हैं? उन्होंने कहा ब्रह्मा वह होता है जो अपनी आत्मा को ब्रह्म में देखो, वेदमन्त्रों में जो सदैव संलग्न करा देता हैं। देखो, ब्रह्मा वह होता हैं जिसको रात्रि काल में रात्रि में क्या जब वह निन्द्रा की गोद में जाते हैं तो जब स्वप्न भी आता है तो वह उन वेदमन्त्रों का स्वप्न आता हैं। जैसे महर्षि वैशम्पायन ऋषि महाराज बेटा! वृष्टि याग के बड़े विशेषज्ञ थे, मानो देखो, जब वह निन्द्रा काल से निवृत्त होते, तो वह स्वप्न वत में मानो उसको वेदमन्त्रों की ध्वनि, उस वेदमन्त्रों के गर्भ में क्या-क्या ज्ञान और विज्ञान हैं वह प्रायः देखो, उसको स्वप्न में दृष्टिपात आता रहता हैं। अरे, इस संसार का विषय स्वप्न भी नही आता, वह मानव देखो, ब्रह्मा कहलाता हैं। वह ब्रह्मवर्चोसि कहलाता हैं।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया, परन्तु देखो, राजम् ब्रह्मे देखो, जब राज लक्ष्मी उपस्थित हुई, उन्होंने कहा हे ब्राह्मण! हे ब्रह्मा! तुम्हें ब्रह्मा क्यों कहते हैं? उन्होने कहा मुझे ब्रह्मा इसीलिए कहते हैं, मैं ब्रह्म ज्ञान को जानता हूँ, मैं ब्रह्म ज्ञानी हूँ। मानो देखो, उसी को ब्रह्मा कहते हैं जो ब्रह्म ज्ञानी हैं, ब्रह्म ज्ञानी कौन होता हैं, जो कण-कण में ब्रह्म का दर्शन करता हैं। जो कण-कण में अपने को ब्रह्म में, ब्रह्म को अपने में, दृष्टिपात करने

वाला है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी ने कहा हे ब्रह्मे एक समय मैं पवमानाया सूत्रों का पठन-पाठन किया करती थी मानो मेरे गर्भस्थल में एक शिशु पनप रहा था, परन्तु देखो, एक समय मुझे रात्रि काल में उस शिशु ने मुझे यह प्रेरणा दई, यह प्रेरणा मेरे अन्तरात्मा से आई थी कि मैनें जब पवमानाय वर्णनं ब्रह्मे तो मुझे यह प्रेरणा आई कि ब्रह्मा का सम्भूति होता है। देखो, ब्रह्म नाम तो प्राणों का कहलाता हैं। आप मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान है, तो एक समय मानो देखो, वह ब्राह्मण वह आचार्य कहता हैं, वैशम्पायन जैसे ऋषियों का यह कथन है, बेटा! मानो देखो, वेद का मन्त्र यह कहता हैं, क्या यज्ञं ब्रह्मा देखो, वह कहता है कि प्राणों का नाम ही तो ब्रह्मा कहलाता हैं। वह ब्रह्म है, मानो देखो, प्राण किसे कहते हैं, जहाँ एक सूत्र में जब प्राण आ जाते हैं, तो प्राणों का जब निरोध करने वाला निरोध करता है, तो कुम्भक प्राणायाम करता है, कुम्भक प्राणायाम करके वह अपनी ऊर्ध्वा गति बनाता है। ऊर्ध्वा गति बना करके वह मानो देखो, ब्रह्म की सृष्टि को निहारता रहता हैं, वह ब्रह्मा कहते हैं।

गो रस का ओषध

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंनें पुनः यह प्रश्न किया क्या महाराज! प्राणों को कहते हैं, आप प्राणों में ही ब्रह्म कहलाते हैं तो ब्रह्मा कहता है दिव्या से, मैंने तुम्हारे वाक्यों को स्वीकार कर लिया हैं परन्तु देखो, गो सम्भवं ब्रह्मे वाचन्नमा देखो, मध्य काल में देखो, सात्विक आहार के सम्बन्ध में, बड़ी एक विवेचना चली आ रही है, बड़ा एक विचार चला आ रहा हैं, परन्तु देखो, मैं जब अपने गौ की आभा में रत्त होता हूँ, तो मानो देखो, यज्ञमान को, जब यज्ञशाला में विद्यमान हो, तो हमारे यहाँ गो नाम की औषधियां होती हैं गो नाम की औषध होती है जो पर्वतों में प्रायः प्राप्त होती हैं उनको तपा करके, उनके रस का स्वादन पान करना चाहिए, क्योंकि हमारे यहाँ, उससे मानव की बुद्धि पवित्रतव होती हैं, उससे शरीर की शोधनता हो जाती हैं। तो मानो देखो, जो गो जो वृत्तियाँ उस औषध के रसों का पान करना, यह यज्ञमान अपने में वृत्ति बन करके, अनुष्ठान करता हुआ उनका पान करता है, मध्य काल में, जब महाभारत काल के पश्चात या कुछ मानो देखो, उद्दयनां ब्रह्मे कृतं जैसा महानन्द जी से प्रतीत हुआ हैं क्या उन्होंने यह स्वीकार कर लिया, क्या गो नाम पशु का उसका दुग्ध आहार करना चाहिए, मानो देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में अपनी पद्धति में निर्माणित करते हुए कहा था, वह वैशम्पायन मुनि महाराज ने भी अपनी पद्धति वर्णन करते हुए कहा था क्या देखो, गो नाम की औषधियां होती है उन औषधियों के रस का पान करना चाहिए, क्योंकि ये जो गो जो पशु हैं अरे, पशु में ज्ञान नही होता, वास्तव में पशु में ज्ञान की आभा नही होती हैं, शक्ति की आभा तो होती हैं। परन्तु ज्ञान तो मानव के संस्कारों का होता हैं, ज्ञान तो मानव के आत्मा के ज्ञान और प्रयत्न मानो उसके माध्यम से होता है, न कि दुग्ध से होता हैं, क्योंकि दुग्ध शक्ति देता हैं, और वह शक्ति जो पशु की शक्ति हैं, मानो देखो, उसमें पुशुता आए बिना कदापि रह नही पाती इसीलिए मैंने पुनः काल में देखो, अपनी पद्धतियों में निर्माणित करते हुए कहा है, क्या ऐसे मानो देखो, वृक्षों के फल हैं, और वृक्षों के देखो, पत्र है, पंचांग है, उनको पान करने से मानव की बुद्धि में देखो, प्रबलता आती है। मानो देखो, उसमें एक प्रसंग आता है, इसमें यह प्रसंग आता है कि यह जो जड़वत सृष्टि है, अप्रतम वृक्ष इनमें भी इनमें जड़वतता है, तो मानो देखो, यह वायु का शोधन करते है, मानव को वायु प्राप्त होती है, उस वायु से मानव की बुद्धि प्रखर होती हैं। तो मानो देखो, पशु के जो श्वास है पशु का जो क्रियाकलाप हैं, मानो उससे इतना मानव का शोधन नही होता, जितना देखो, स्थावर सृष्टि के फलों से या देखो, उसका जो पत्र है, पंचांग हैं, मानो उससे देखो, मानव की प्रवृत्तियों का शोधन हुआ करता हैं। तो मेरे यह वाक् बहुत पुरातन काल में कहा, यदि मानव रूग्ण है, तो वह गो दुग्ध का आहार कर सकता हैं परन्तु यज्ञमान के लिए मानव ने यह पद्धति बनाई हैं कि वह गो रस का पान करना चाहिए, गो दुग्ध का आहार करना चाहिए, मानो एक गोदन्ती औषध होती है गो निधि होती है, गो रसिका होती हैं देखो, उनमें किसी में

वायु प्रधान हैं, किसी में जल प्रधान है, किसी में अग्नि प्रधान है, किसी में मानो देखो, वायु के तत्त्व होते हैं, मानो देखो, उनमें सबका खरल बना करके और उनका चूर्ण अकृत बना करके, मानो उसको तपाए हुए जलों से पान करते हैं। वह उतनी शक्ति हमें प्रदान करता रहता हैं।

तो विचार आता रहता है मैं इसका खण्डन नही कर रहा हूँ, मैं महानन्द जी के विचारों में यह उद्गीत गाना चाहता हूँ, उच्चारण करने के लिए आया हूँ क्या प्रायः वास्तव में ऐसा नही। हमारे यहाँ कामधेनु गो होनी चाहिए, कामधेनु गो जैसे वशिष्ठ मुनि महाराज को महाराजा इन्द्र के यहाँ याग में गएं और याग उन्होंने देखो, वह अश्वेमध याग कराया उन्होंने कामधेनु गऊ उन्हें प्रदान की। कामधेनु गऊं का अभिप्रायः क्या है? हमारे यहाँ कामना की पूर्ति करने वाली हो, उसका नाम गो कहा जाता है। तो मानो देखो, वह गो क्या हैं? विचार आता रहता है कि गो नाम पशु है, उसके दुग्ध को भी कहा जा सकता हैं, परन्तु गो नाम मानो देखो, नाना कुछ औषधियों को भी होता हैं, गो नाम महाराजा इन्द्र के यहाँ से प्राप्त हुई, वह गो नाम, जो प्रजा की इच्छा पूर्ण करने वाली हैं, गो नाम के जो ब्रह्मचारी है, गो नाम के ब्रह्मचारी भी प्राप्त हुए, जिन ब्रह्मचारियों के द्वारा देखो, आचार्य की विशेषता का ज्ञान होता है, और वह वशिष्ठ बन जाता है। मानो देखो, गो नाम ब्रह्मचारियों को भी कहा जाता हैं, जो अज्ञान में है और ज्ञान उनको प्रवेश कराने से ज्ञान में वह पारायण होते हैं, उसके आचार्यों का नामोकरण मानो वशिष्ठ बना करता है। यह भी कामधेनु कहा जाता है। परन्तु अश्वेमध याग में जो दक्षिणा में मानो जो उन्हैं प्राप्त हुआ उसका नाम गो कहा जाता हैं। वह गो के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, उसे मानो देखो, इन्द्र के यहाँ से एक मेधावी मानो वृक्ष प्राप्त हुआ, जो उनके आश्रम में गमन करता रहता था, उस वृक्ष का नाम भी मानो देखो, मेघावी कहा जाता है, गो वृणित कहा जाता हैं, और गो कृणी मानो देखो, एक वृत्तियाँ होती हैं, वे उन्हें प्राप्त होने से मानो देखो, वह अपने में वशिष्ठ बनते रहते हैं। परन्तु यह भी न आने से गो नाम का पशु होता हैं, जो पशु मानो अपने में मानो देखो, आश्रमों में रहता था। दुग्ध का आहार करना दुग्ध को पान करना और अपने में पठन-पाठन करना, क्योंकि वह शक्ति उन्हें प्राप्त होती हैं। तो यहाँ बहुत से पर्यायवाची शब्द वेद की परिभाषा में बहुत से शब्द आते रहते हैं, तो हमारा अभिप्रायः यह है कि हमारे यहाँ जब भी याग होते हैं, श्रोत्रीय याग हैं, अश्वमेध याग है, गो मेध याग है, नाना प्रकार के यागों का यहाँ वर्णन आता है।

तो उस वर्णन शैली में महर्षि वैशम्पायन ने यह कहा महाराज! अश्वपति के यहाँ राजा का एक नियम था, वह किसी पशु के दुग्ध का आहार नही करते थे, वह केवल देखो, हमारे यहाँ गो नाम मुनिवरों! देखो, पृथ्वी का हैं, और वह गो नाम पृथ्वी से जो इसके गर्भ से अन्न को उत्पन्न करता है, इसी से फलों का उत्पन्न करने वाला हैं। उसका पंचांग और मानो देखो, अन्न का भी पान करना अन्न का पंचांग बना करके पान करना उसका नाम गो रस कहा जाता है। तो हमारे यहाँ गो नाम पृथ्वी का है और उसके गर्भ से जो उत्पन्न होने वाला, नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ है उसको अग्नि में तपा करके ही मानव शक्तिशाली बन जाता हैं जैसे नाना प्रकार के खनिज है जैसे स्वर्ण है मानो देखो, पारेत्वर है, इसी प्रकार गो वृत्तिका हैं, मानो देखो, पर्वतों में देखो, शलावृत्तिका हैं इनका मानो देखो, अग्नि में तपा करके, अग्नि में तपा करके इनको खरल किया जाता है, और उसका जब यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके उनके रसों का पान करता है। अग्नि में तपा करके नाना धातुओं के द्वारा तो मानो देखो, उसकी और भी शक्ति प्रबल हो जाती हैं। तो उसको हमारे यहाँ कामधेनु कहा जाता हैं। जो कामेत्वं ब्रह्मे वृतं जो कामनाओं की पूर्ति करने वाला हो, तो विचार बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, मैं मानो देखो, आयुर्वेद में जाना नही चाहता हूँ। परन्तु विचार केवल यह है, क्या हमारे यहाँ यह जो स्थावर सृष्टि है, जिसको सूर्य तपाता हैं, मानो देखो, उसी का परमाणु वाच पशुओं में भी आता रहता हैं तो इसीलिए देखो, हमारे यहां विचार आता है क्या

वास्तव में माता का नाम ही कामधेनु हैं, माता का नाम कामधेनु हैं, क्योंकि वह बालक की कामनाओं की पूर्ति करती है। जब माता के गर्भस्थल में बेटा! हम जैसे शिशु तो माता बुद्धिमान होती है, तो माता उसे आयुर्वेद के माध्यम से उसे पनपाती हैं, स्थावर सृष्टि के द्वारा उसका खरल बना करके पात बना करके उसको पान करके उसको पनपाती है।

माता मलदाल्सा का जीवन

एक समय मुनिवरों! देखो, माता मलदाल्सा से यह कहा एक श्वेतकेतु ऋषि ने उसके गर्भ में जब प्रवाहण गर्भ में थे, और वह याग कर रही थी, याग करते समय देखो, ऋषि भी उस याग में सम्मिलत हो गएं मानो याग करने के पश्चात ऋषि ने कहा-देवी! तुम यह जो याग कर रही हो, क्यों कर रही हो? उन्होंने कहा मैं अपने गर्भ के याग को पूर्ण करना चाहती हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा मैं अपने गर्भ के याग को पूर्ण कराना चाहती हूँ, क्योंकि दिव्यां ब्रह्मे वाचन्नमं ब्रह्मा देवो लोकां पितस्तं ब्रह्मा पितरों गणां ब्रह्मा पति लोकां यागां लोकां मेरे प्यारे! देखो, माता मलदाल्सा ने वेद की परिभाषा में अपना वाक् प्रगट करते हुए कहा, क्या मैं अपने याग को पूर्ण कराना चाहती हूँ, वैदिक साहित्य मे आता है, कि देवता लोकां पितरों लोकां पति लोकाय यागां ब्रह्मे कृतां ब्रीहि मेरे प्यारे! देखो, वेद की विदुषी कहती है भगवन! मैं इसीलिए याग कर रही हूँ, मैं अपने देखो, आन्तरिक याग को ऊँचा बनाना चाहती हूँ। जिससे संसार में याग होता रहे, मानो देखो, यह देव लोक मेरा प्रथम लोक चला गया, देव लोक उसके पश्चात मेरा लोक पितर लोक चला गया हैं, वहाँ भी मुझे याग नही करना था। परन्तु देखो, जब मैं ब्रह्मे गतप्रह्वा जब मैं पति लोक को प्राप्त हो गई, तो याग करने की अधिकारी बन गई हूँ। मैं याग कर रही हूँ, यह जो मेरे गर्भ में यह जो शिशु पनप रहा है, यह मानो पति लोक को प्राप्त हो करके मुझे प्राप्त होता हैं। मानो देखो, मैं अपने को जो मेरे गर्भ में एक परमपिता परमात्मा की अनुपम उसकी उसके संरक्षण में मानो जो निर्माण करने वाला है, निर्माणवेत्ता है, निर्माण प्रभु ने किया हैं, न इतना विचार दे रही हूँ, क्या जिससे संसार में निर्माणवेत्ता का धन्यवाद करने वाला मेरे गर्भ से बालक का जन्म हो जाएं।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह आभा ऋषि ने अप्रतं ब्रह्मे वेद का वाक् कहता है, यह क्या रसतम ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, माता जब इस प्रकार का याग करती हैं, वास्तव में यह याग और उस याग में दोनों में भिन्नता है, ब्रह्मचर्य काल में देव और पितर लोकों में यह सर्वत्र देखो, अग्न्याध्यान किया जाता है। परन्तु यह जो आन्तरिक याग है, जो माता कर रही है जो परमात्मा की सहायता ले करके उसका धन्यवाद करती, माता के यह विचार देती रहती है कि मैं अपने गर्भ में एक शिशु को जन्म देना चाहती हूँ। एक शिशु को ब्रह्मवेत्ता बनाना चाहती हूँ, एक शिशु को मानो प्रभु जिसने निर्माण किया हैं, ऐसे विचार दे करके वह जन्म दे रही है। वह माता महा याग कर रही है। विचित्र याग हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, मातां ब्रह्मे लोकां मुनिवरों! देखो, ऋषि कहता है, क्या हे देवी! इसमें गो रस का पान करना चाहिए, अथवा नही। तो माता मलदाल्सा ने वैदिक साहित्य का अध्ययन किया था, बाल्य काल में तो माता ने उत्तर दिया, ऋषि प्रश्नों का क्या हे भगवन! गो नाम के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, मैं उन औषधियों का पान करती हूँ, जिसके बालक के हृदय में बालक के मस्तिष्क में, बाल्य के मस्तिष्क में देखो, गो ब्रह्मे धेनु का जन्म हो जाएं, और धेनु नाम बुद्धि का है, और बुद्धि का जन्म हो जाएं, जिससे बुद्धि, मेधावी मानो बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा मानो देखो, जो गो ब्रह्मे व्रतं देखो, गो नाम बुद्धि को भी कहा जाता है। जो बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं, उसका जन्म हो जाएं और मानो देखो, मेरे गर्भ से उत्पन्न होने वाला ब्रह्मचारी ब्रह्मवेत्ता हो ब्रह्मचारी हो ब्रह्मचारी उसे कहते हैं, जो ब्रह्म में सदैव संलग्न रहता है, कोई मानो देखो, अपने में ब्रह्मे वृतां मानो देखो, मैं आज विशेष चर्चा नही दे रहा हूँ। मेरे पुत्र महानन्द जी मुझे यह प्रेरणा दे रहे है। क्या इस प्रकार का विचार याग के

सम्बन्ध में होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार का जब याग माता करती हैं, तो यह समाज ऊँचा बन जाता हैं, राष्ट्र ऊँचा बन जाता है, समाज में कुरीतियां नही आ पाती है। हे माता! तू तो धेनु हैं, जब तू धेनु बन करके मानो देखो, अपनी लोरियों को देखो, धेनु वर्णनं ब्रह्मे जब बालका तुझे दूहने लगता है, तेरे विचार इतने महान पवित्र हौने चाहिए, जिससे वह दुग्ध बालक के हृदय में शरीर में प्रवेश हो करके, हे माता! यह सब माताएं परन्तु कोई बाल्यं ब्रह्मं ब्रहे गर्भ से उत्पन्न होने वाला किसी पुत्री के श्रृंगार को हनन करने वाला नही होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, मैंने पुरातन काल में कई कालों में वाक् प्रगट करते हुए कहा था, मैं यह विचार दे रहा हूँ कि माता मलदाल्सा के ऐसे विचार रहते थे। महर्षि वैशम्पायन के ऐसे विचार रहे हैं, ऋषि-मुनियों की यह पवित्र मानो एक देन रही हैं, संसार में क्या उन्होंने अपने जीवन में तपस्या की हैं, और तपस्या में जो भी उन्हें अनुभूति हुई हैं, उन अनुभूतियों की लेखनियांबद्ध की है, और लेखनियांबद्ध मानो देखो, राष्ट्र और समाज मानो देखो, याज्ञिक रूप में उनके जीवन की प्रतिभा का उन्हें निर्माण किया है।

तो मानो देखो, आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, विचार केवल यह कि हमारे यहाँ अनुभूति योग की भी आती रहती हैं। मानो योगी बनना चाहता है, प्रत्ये मानव के हृदय में यह आकांक्षा बनी रहती है कि मैं योगेश्वर बन जाऊं। मैं महान बन जाऊं परन्तु देखो, योगी वह कहलाता हैं, जो ब्रह्मवादी होता है, जो ब्रह्मनिष्ठ कहलाता है, राजा वह होता है, जो ब्रह्मनिष्ठ हो जाता है, राजा की प्रजा में मानो देखो, जब निष्क्रियता आती है। जानों कि राजा के विचारों में निष्क्रियता आ गई हैं, मानो देखो, जब बालक के हृदय में निष्क्रियता आती है। तो जानों कि माता के अन्तःकरण में देखो, वह निष्क्रियता आई, तो बाल्यों के हृदय में आ गई। इसी प्रकार निर्माण करने वाला मानो चैतन्य देव हैं। और देखो, वह सर्वत्र पिता हैं, मुनिवरों! देखो, द्वितीय माता है, तृतीय राजा हैं, मानो देखो, राजन्नं ब्रह्मे आचार्यं ब्रह्मे देखो, आचार्यों का निर्माण करने वाले राष्ट्रीय पद्धति हुआ करती है, इसीलिए जब आचार्यों की पद्धति का निर्माण राजा से होता है। तो इसीलिए आचार्य के गर्भ में भी राजा विद्यमान होता है, तो इसीलिए देखो, राजा को स्वीकार करना चाहिए राजा जितना ब्रह्मज्ञानी हो, ब्रह्मवेत्ता हो, जो देखो, राष्ट्र का निर्माण कर सके और राष्ट्र में देखो, चरित्र संहिता का निर्माण कर सके, तो विचार देने वाला अपना विचार देता रहता हैं, आज मैं विशेष चर्चा नही कल मेरे प्यारे महानन्द जी अपने उदगार प्रगट करेंगें। परन्तु वह क्या उद्गीत गायेंगें? वह तो प्रभु! ही जानता हैं।

परन्तु देखो, ब्रह्मणां ब्रह्मे देवाः आज का विचार यह चल रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुए मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, उसका वैज्ञानिक स्वरूप हमारे समीप होना चाहिए। आध्यात्मिक स्वरूप भी हमारे समीप होना चाहिए। परन्तु देखो, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उस परमपिता परमात्मा देवतव जो निर्माणवेत्ता है, मानो देखो, ब्रह्मज्ञान में रत्त होते हुए, मेरे प्यारे देखो, ब्राह्मण के समीप वह जो ब्रह्मा हैं, यज्ञशाला में जिस ब्रह्मा का निर्वाचन हुआ, उससे प्रश्न किया जा सकता हैं, मेरे प्यारे! देखो, पुरोहित रह गया है। यज्ञमान के साथ में एक पुरोहित विद्यमान होता है, और वह पुरोहित से यह कहा जाता है, हे पराविद्यं ब्रह्मे तुम्हें पुरोहित क्यों कहा जाता है? क्योंकि देखो, यह जो रघु वंशलज हुआ हैं, या राजा सगर से ले करके इनके यहाँ प्रत्येक राष्ट्रपद्धतियों में एक पुरोहित होता है गृहों में पुरोहित होता है परन्तु पुरोहित का यह अभिप्रायः है जो पराविद्या का अध्ययन करने वाला, जो पराविद्या को देने वाला हो, मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा था क्या महर्षि विश्वामित्र को प्रेरणा देने वाले वशिष्ठ मुनि महाराज थे, और वशिष्ठ मुनि महाराज की प्रेरणा को ले करके देखो, वह अप्रतं देखो, पुरोहित की

आत्मा प्राण और योग

आज्ञा पा करके, विश्वामित्र ने एक धनुर्याग का आयोजन किया था। धनुर्याग करने वाला भी पुरोहित होता है, क्योंकि धनुर्याग उसे कहते हैं, जो राष्ट्रीय राजकुमारों को या राष्ट्रीय पद्धति, अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या का अपना बड़ा रहस्य माना गया हैं। ब्रह्मचारियों का निर्माण विद्यालयों में देखो, जब किया जाता है, तो वह मानो देखो, वह ब्रह्मचारी ब्रह्मवेत्ता बन करके, ब्रह्मनिष्ठ बन करके, अस्त्रों-शस्त्रों में विज्ञानवेत्ता बन करके अपने में ऊर्ध्वा गति का गमन कराते रहते हैं। मुझे स्मरण आता रहता है मैंने यह चर्चाएं इससे पूर्व काल में भी प्रगट की हैं। महाराजा सगर के यहाँ जब मानो देखो, यह सेना समाप्त हो गई थी, तो महर्षि कपिल मुनि महाराज के यहाँ जय और विजय, मृची मुनि महाराज के दोनों राजकुमार थे। परन्तु वह इतने विज्ञानवेत्ता थे, जब अध्वर्यु का अपमान किया, तो उन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों क्योंकि वह महर्षि कपिल मुनि महाराज की मेरे प्यारे! देखो, वह धनुर्याग के बड़े विशेषज्ञ थे, जब देखो, धर्नुयाग में वह दूरी के यहाँ देखो, अन्तर्मुखी देखो, एक उनकी विज्ञानशाला थी, उस विज्ञानशाला से वह उड़ान उड़ते रहते थे। लोकों की उड़ान उड़ना लोकों में जाना अग्नि परमाणुओं के ऊपर अनुसन्धान करना यन्त्रों का निर्माण करना एक ही यन्त्र उसकी मानो देखो, तीस हजार सेना समाप्त हो गई, विचार आता रहता है देखो, राजा सगर उनके पुत्र थे। मानो सुखमंजस दोनों ने जा करके महर्षि कपिल मुनि महाराज के मानो चरणों की वन्दना की, यह नही कहा क्या यह कृतं हुआ हैं, यह मानो अनाकृति हुआ हैं, उन्होंने कहा अपमान किया देखो, अभिमान में आ करके और इनके यहाँ जो कला ब्रह्मे जो क्रियाकलाप होता हैं। ब्रह्मचारियों ने उनको अपमान के बदले नृत्त किया तो मानो देखो, ऋषि की वन्दना की, क्या जय और विजय जैसे वैज्ञानिकों को देखो, वह राजा सगर की सत्ता नही थी कि वह नष्ट कर सके, तो विचार क्या है मुनिवरों! विचार यह है कि मानव जब अपने में निर्माण मानो जो अपने में माधुर्य और देखो, पुरोहितों के विचारों का जब अनुकरण किया जाता हैं। तो राष्ट्र और समाज यह सर्वत्र मानो देखो, पवित्र वेदी पर निहित हो जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या आज का हमारा वाक् हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगन गाते हुए, हम प्रायः इस संसार सागर से पार हो जाएं, बेटा! जैसे कर्म प्रायः देखो, राष्ट्रीय पद्धति में होने चाहिए, समाजिक पद्धति में होने चाहिएं, ऋषि-मुनियों के विद्यालयों में होने चाहिए। जिससे मानो देखो, राष्ट्र में देखो, वेद की परम्परा वेद का जो विज्ञान है, मानो देखो, विज्ञान तो है ही वेद का विज्ञान कही दूसरी स्थलियों से नही आ रहा है, वेद नाम प्रकाश का हैं, प्रकाश का नाम विज्ञान हैं, ज्ञान है, विज्ञान है, और उसके जो क्रियाकलाप हो रहे है, उनमें जो मानो देखो, विज्ञान के परमाणुवाद में गति करने वाला वही एक प्रकाश है। और उसका दुरूपयोग करना ही मानो देखो, अज्ञान माना गया हैं। वह अन्धकार है देखो, विज्ञान का दुरूपयोग होना अज्ञान है, विज्ञान का सदुपयोग होना ज्ञान है, समाज का निर्माण है, इसके साथ आज का यह वाक् अब समाप्त हौने जा रहा हैं।

आत्मा का भोजन

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह यज्ञशाला में तो मानो देखो, पुरोहित यज्ञशाला में ब्रह्मा, उद्गाता, अध्वर्यु जो विराजमान होते हैं वह यज्ञमान मानो देखो, यज्ञमान की वाणी को, पवित्र बना देते हैं वास्तव में देखो, सर्वोपरि तो यज्ञमान मेरा प्यारा प्रभु हैं। परन्तु वही प्रभु की अनुपम कृपा और देखो, अनुपम महानजा का जब जन्म होता हैं, तो यज्ञमान के हृदय में देखो, याग की एक प्रेरणा कौन देता रहा है। आत्म तत्त्व आत्म का भोजन याग कर्म करना तो आत्मा का भोजन माना गया हैं, इसीलिए आत्मा को भोजन देना यह हमारा कर्तव्य हैं, यह है बेटा! आज का वाक् में शेष चर्चा तो कल ही प्रगट करूंगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

८ आत्मा प्राण और योग २८ ०२ १९८८

देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है और जितना भी यह जगत मानो एक यज्ञ के रूप में, प्रायः उसका वर्णन होता रहता है। और वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप मानो, यागों में वह रत्त रहने वाले हैं, यज्ञं रथं ब्रह्मणं ब्रह्रे कृति लोकाः मेरे प्यारे! वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं और यह संसार एक यज्ञमयी आभा मानी गई है। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, अनुसन्धान कर रहा है, ओर विचारता रहा है, कि वे परमपिता परमात्मा जो एक अनूठा है, मानो चेतना है, चेतनाबद्ध है तो उस महामना प्रभु की हम सदैव याचना करते चले जाएं, यज्ञोमयी स्वरूप होने से, याग उसका आयतन, अथवा उसका गृह है ओर सदन माना गया है। जिसके ऊपर मानव अपने जीवन में, भिन्न-भिन्न प्रकार की आभाओं में ओर परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करता रहा है।

तो आओ, मेरे प्यारे! नाना प्रकार के रूप में, देवतव माना गया है आज का हमारा वेदमन्त्र हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा प्रेरणा का एक अनुपम स्रोत माना गया है क्योंकि जब प्रेरणादायक प्रेरणा को प्राप्त करता हुआ, मानव अपने में अनुभव करता रहता है, उस प्रेरणा में रत्त हो करके, प्रेरणा के रूप में अपने को मानो हूत कर देता है, तो वह प्रेरक बन करके, वह संसार की प्रतिभा अथवा ज्ञान ओर विज्ञान को जानने में वह संलग्न हो जाता है। तो विचार क्या? कई समय से बेटा! हम आत्मा के ओर प्राण के सम्बन्ध में मानो योग के सम्बन्ध में बहुत-सी विवेचना दे रहे थे। योग हमारे यहाँ व्यापकवाद को कहा गया है, जिस भी मानव की प्रवृत्ति मानो आरूढ़ रहने वाली जो अनुपम प्रवृत्ति है, उसमें मानो अपने जीवन में एक महानता का प्रायः दर्शन करता रहता है। तो इसीलिए हम अपनी आत्म चेतना को जान करके, आत्म चेतना के साथ में मानो इस संसार का सर्वत्र दृष्टिपात करके इसका साकल्य बना करके हम अपने में हूत करना चाहते हैं मानो देखो, उसे हूत करते हुए बाह्य और आन्तरिक दोनों के लिए अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहता है तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना आज देने नही आया हूँ विचार केवल यह कि आज हम अपने में उस प्रभु की महिमा अथवा उसके यज्ञमयी स्वरूप को जानते चले जाएं, यज्ञं ब्रह्मणं ब्रहे परमपिता परमात्मा अनुपम वह यज्ञोमयी स्वरूप है, आनन्द का स्रोत है, और मानवीयता में मानो रत्त रहने वाला है, तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार यह क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की महती अथवा उसकी अनन्तता को जान करके ही ओर अपने को विचारों को अनन्तता का मानो देखो, अपने में क्रियात्मक बनाने का नाम ही व्यापकवाद और सार्थक रूप में हम रत्त हो जाएं। आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें। आज का विचार हम इतना ही परिणत करना चाहते है। कि मानव को व्यापकवाद और परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप हमें स्वीकार करना चाहिए। अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगें

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् यमा रथं यशचमं ब्रह्मणा हू वा याः मा गतं मणा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! भद्र समाज! मेरा अन्तरात्मा प्रायः पूज्यपाद गुरुदेव के सम्बन्ध में अपनी भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचनाएं देता रहा हैं, और उनका जो क्रियाकलाप रहा है, वह मानवीय दर्शन से गुथा हुआ है परन्तु आज का हमारा वाक् की हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और मेरा जो अन्तर्हृदय है, वह यज्ञमान के साथ रहता है। मैं सदैव यह उच्चारण करते रहे हैं कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, मानो यज्ञमान

का अभिप्रायः यह है, क्या वह पुरोहितों को प्रायः अपनी त्रुटियों को प्रदान करता चला जाएं। और अपने मानव जीवन को सार्थक बनाता चला जाएं। यह आज का मानो हमारा विवेचनामयी रत्त रहा है, जिसके ऊपर हमारे यहाँ आचार्यों ने हमें भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचनाएं दी हैं, और हमें पूज्यपाद गुरुदेव का जो जीवन रहा है, वह बड़ा विचित्र और एक अपने में मनोनीत रहा है, बहुत समय हो गया, विचार-विनिमय करते हुए, अपने सम्पर्क की नाना चर्चायें प्रायः हमारे समीप आती रही हैं परन्तु आज मैं विचार रहा था, बहुत समय से ही पूज्यपाद गुरुदेव को प्रेरणा भी समय-समय पर प्रायः देता रहता हूँ परन्तु आज मैं अपने जीवन और वृत्तियों में न जाता हुआ, केवल यह कि आज मैं यह उच्चारण करता चला जाऊं, कि मनुष्य अपने में क्या है? और क्या होना चाहता है? परन्तु देखो, यह जो पृथ्वी है यह अपने में महान वृत्तियों में रत्त रही हैं, जहाँ मैं यह विचारता रहता हूँ, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को मैं अपना एक निर्णय देना और जो मैं दृष्टिपात करता रहा हूँ आज हमारे एक मौलिक रूप क्या मैं यज्ञमान के सम्बन्ध मैं तो विशेष नही परन्तु देखो, जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है, यहाँ मानो चतुर्थ और वेदमन्त्रों के द्वारा याग सम्पन्नता के आँगन में प्रवेश हो रहा है। हमारे हृदयों में भी मानो प्रवेशिका रही है प्रत्येक मानव के हृदय में भी वह मानो देखो, उसकी सम्पन्नता की प्रायः प्रसन्नता रहती है, हमारे हृदयों में भी सम्पन्नता की प्रसन्नता रहती है। परन्तु देखो, मैं यह विचारता रहता हूँ, क्या देखो, भूमि का कैसा सर्वोद्धार होता है, उसका उत्थान होता है समय-समय पर मानो देखो, कालों के साथ-साथ उसका परिवर्तन होता रहता है। आज मैं मानो देखो, उस परिवर्तन के साथ यह कि आज जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहाँ मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो रहा है, और मैं यज्ञमानों को मानो जो अपनी अन्तरात्मा से श्रद्धामयी देहि ऐसा याग करते हैं परन्तु वह सदैव यह चाहता रहता हूँ कि त्रुटियों को भी मानो प्रायः त्यागते रहे तो बहुत ही प्रियतम रहेगा। मेरे प्यारे! जहाँ पूज्यपाद गुरुदेव के बड़े गम्भीर उदगार मानो हमारे समीप आते रहे हैं।

पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे एक समय वर्णन कराया था एक यज्ञमान के सम्बन्ध में मानो देखो, जो मगध राष्ट्र में एक याग हुआ था, उस राष्ट्र में यह कहा था कि वह यज्ञमान धर्म प्रजा, हे देवी! मानो तू अपनी त्रुटियों को त्यागने का प्रयास कर, जैसे परमपिता परमात्मा जैसे यज्ञमयी जो साकल्य तुम यज्ञशाला में अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत करते हो, जानों की अपने हृदय की वह आहुति और हृदय से उसका समन्वय करना चाहते हो, मानो देखो, उसके साथ हृदय में दूसरों के प्रति दूरिता और देखो, क्रोधाग्नि जो जागरूक होती है, उस क्रोधाग्नि को शान्त करने का प्रयास करना चाहिए। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने यह मगध राष्ट्र में पुत्रेष्टि याग क्या मानो वाजपेयी याग हुआ था, और उस पुत्रेष्टि याग में देखो, उन्होंने यह कहा कि अग्नि नही रहनी चाहिए। या तो बाह्य जगत की अग्नि रहेगी या आन्तरिक जगत की अग्नि रहेगी। दोनों का जो अग्नियों का समन्वय रहा है वह मानो देखो, दोनों प्रकार की अग्नियों को चेताते हुए हम अपनी अन्तरात्मा को अन्तर चेतना को मानो जो हमें दूरिता में दृष्टिपात आते हैं उसको जानना हमारा कर्तव्य कहा गया है, तो यह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत पुरातन काल में यह वाक् कहा था, आज मैं उन वाक्यों कि पुनरूक्ति इसीलिए दे रहा हूँ, क्या मेरे देव, मानो देखो, अन्तर्हृदयों में जो अग्नि सदैव प्रदीप्त रहती है। वह देखो, वह द्वेषाग्नि जो जागरूक होती है, सबसे प्रथम मानो उस द्वेष अग्नि को अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत कर देना है द्वेष अग्नि नही होनी चाहिए। यदि घृणा भी है तो उसका क्रोध नही रहना चाहिए। और यदि घृणा रहेगी तो उस अन्तरात्मा का विनाश होता है।

देखो, जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ यागों का व्यवधान होता रहा है, एक समय यहाँ इस स्थली पर महर्षि जैमिनी महाराज ने याग किया था महाराजा दोर्णाचार्य भी समय-समय पर यागों का आयोजन करते रहते थे मुझे वह काल स्मरण है, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करता हुए कहा भी था कि यह जो पावन

भूमि है, जहाँ दुर्योधन ने राष्ट्रीय दाह में घृणात्मक दाह में एक लाक्षागृह का निर्माण किया था। उसमें एक भव्य वैज्ञानिक यन्त्र, वैज्ञानिक वर्णित की गई जिसमें विशेष अग्नि होने पर प्रचण्ड हो जाएं और वह भस्म हो जाएगा। ऐसा दुर्योधन ने राष्ट्र की दाह में किया और हस्तिनापुर में विचारों की अग्नि प्रदीप्त हुई। विचारों की अग्नि प्रदीप्त हो करके यह अग्नि का काण्ड बना, समय-समय पर अग्नि काण्ड होता रहा है। देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार होते रहे, भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलाप होते रहे, उसके पश्चात यह खण्डहरात के रूप में दृष्टिपात आता रहा।

इसी प्रकार पूज्यपाद गुरुदेव को कई काल में मैंने यह वर्णित भी किया है कि अव्रतम व्रहे, कई अग्नि काण्ड होते रहे हैं, यहाँ जब हस्तिनापुर की दाह से अग्निकाण्ड बने, इसमें एक सुरंग जहान्ति कहलाती है, जिसमें प्रवेश होकर भीम का अपनी माता और भ्राताओं का ले करके गमन हुआ, और चन्द्रायण वन चले गये। उनके जाने के पश्चात स्नान व्रहे वाचं कृतं ब्रह्मे उन्होंने एक बाण को पृथ्वी में स्थापित किया था, उसमें से जल की धारा आई। उसमें माता कुन्ती और पांचों भ्राताओं ने स्नान करके वहाँ से गमन किया। यह मैं इसीलिए उच्चारण् कर रहा हूँ कि गमने प्रिय देवो, वह किनता प्रिय गमन था, जिससे प्राणों की रक्षा हो गयी। प्राणों की रक्षा होना बहुत अनिवार्य है। समय-समय पर यहाँ पर प्रायः ऐसा होता रहा है, उसके पश्चात यहाँ शमशान भूमि भी बन गयी। यहाँ शमशान भूमि मोहम्मद के मानने वालों ने बनाई। देखो, राष्ट्र में, राष्ट्रीयता में दुर्योधन ने नष्ट करने के लिए गृह का निर्माण किया था, परन्तु इस प्रकार का यहाँ अस्तित्व को हनन करके अपनी क्रियाओं में अपनी शमशान की प्रतिभा का निर्माण किया देखो,! अपनी कृतियों में यह एक मन्दिर, एक देवालय शिवालय का निर्माण भी हुआ, और उस निर्माण को खण्डरात के रूप में प्रायः देखा गया। मैं उसके विशेष गम्भीर रहस्यों में नही जा रहा हूँ।

मेरे गुरुदेव ही मेरे सूक्ष्म अंकित शब्दों के रूप को विस्तार का रूप धारण करा देते हैं, परन्तु मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ, कि मेरा हृदय उल्लास में रहता है, और मैं कहता रहता हूँ कि यह कैसी अनन्तमयी भूमि का का एक रूपान्तर स्वरूप हो गया है। वह याग के रूप में रूपान्तर हो गया है। यह शिक्षालयों के रूप में रूपान्तर हो गया है। मैं यह विचारता रहता हूँ कि यहाँ पर महाराजा दोणाचार्य आदि का विद्यालय रहा है, परन्तु विद्यालय समय-समय पर भूमि का कैसा रूपान्तर होता रहता है। यही राष्ट्रीय विचारों में परिपूर्ण रही है, यही हिंसा में परिपूर्ण रही है। आज अहिंसा के वेदी पर विचार-विनिमय किए जा रहे है। तो मेरी अन्तरात्मा प्रसन्न होती है, कि यहाँ वेदों के उद्गीत रूप में यन्त्रों का प्रायः जन्म होता रहा है, मैंने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय कराया था कि-प्रभु! समय-समय पर भूमि का प्रादुर्भाव और भूमि का उदय होता रहता है, उस उदय होने से ही मानव को प्रसन्न नही रहना चाहिए।

मैं अपने अन्तर्हृदय से सदैव यज्ञमान को स्वीकार करता हूँ, कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, उस अखण्डता में मेरा और तुम्हारा दोनों का एक प्रकाशमय जीवन बन जाता है, विचारम् ब्रह्मे प्रश्नम् आज का विचार क्या कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इससे पूर्व काल में यज्ञमान के सम्बन्ध में पुरोहितों के सम्बन्ध में अपने बड़े अनूठे विचार दिये। इन्होंने अपने में वृत्तियों में रत्त रहने के वाले विचार देते हुए कहा कि ब्रह्मणेः हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरा जीवन सदैव महानता में परिणत हो जाएं, जीवन की प्रतिभा एक महान बन जाएं। पवित्र बन जाएं। देखो, यज्ञमान यज्ञशाला में देवताओं का अधिपति कहलाता है। वह देवताओं का हूत करने वाला कहलाता है, यज्ञमान इसीलिए देवतव को प्राप्त होता है, कि वह अपनी देवी को कहता है, वेदमन्त्र ऐसा कहता है, कि हम अपने राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाने में लग जाएं और हम केवल नाना प्रकार के धर्मज्ञ यागों में परिणत हो जाएं।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने योग और याग के सम्बन्ध में नाना प्रकार के विचार दिये। कर्मकाण्ड के सम्बन्ध में

कि यज्ञमान कैसे जल को प्रोक्षण करता है। जल को कैसे सिंचन करता है? यह पूर्व दिशा में सिंचन कर रहा है, और पश्चिम दिशा में ज्ञान का भण्डार है, उत्तरायण में जहाँ ज्ञान की प्रतिभा है, उसकी परिक्रमा करके, जैसे माता के गर्भस्थल में शिशु रहता है। वह जल से ही ढ़का हुआ रहता है, जल से ओतप्रोत रहता है, इसी प्रकार यज्ञ भी परमपिता परमात्मा की प्रतिभा है। वह सभी आपों से ढ़की होने के कारण उसकी प्रतिभा उसकी सुगन्ध विज्ञान में रत्त रहती हुई, संसार सागर से मानव को पार करा देती है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से समय-समय पर वार्त्ता प्रगट करता रहता हूँ जिससे मानवीयतव अपने में रत्त होकर सागर से पार हो जाएं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यह कहते रहते हैं, आज तो समय नही हैं यह एक बड़ा दुःखवृत्ति काल कहा जाता है।

जब किसी काल में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव किसी यज्ञ के ब्रह्मत्व को प्राप्त करते थे तो मुझे वह दृष्टिपात आ रहा है कि वह यज्ञमान के त्रुटियों के रूप में उसकी दक्षिणा स्वीकार करते थें। आज का यज्ञमान तो यह चाहता है कि तो आहुति देते ही स्वर्ग को चला गया हूँ प्रायः ऐसा नही हैं जब तक मानव अपनी त्रुटियों को नहीं त्यागता, तब तक मानव मानव नहीं कहलाएगा। मैं कहता हूँ कि यज्ञमान अपने में महान बनता चला जाएं, द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। आज का मानव द्रव्य का दुरूपयोग कर रहा है, द्रव्य का जितना दुरूपयोग करते हो उतना ही द्रव्य मानव को नष्ट कर देता है। जैसे कि आज का राजा जो आधुनिक काल का राष्ट्रवेत्ता है, या राज्य स्वामी है, या राज्यवृत्तियाँ हैं, यह सब द्रव्य की लोलुपता में अपने जीवन को हूत कर रहे है। वह हूत क्यों कर रहे हैं? जब द्रव्य के ऊपर मानव की प्रवृत्तियां चली जाती हैं या राष्ट्रवेत्ता की प्रवृत्तियां चली जाती हैं, वह राजा शुद्ध आहार नही कर सकता, जब शुद्ध आहार नही होगा तो वह ज्ञानी भी नहीं होगा। वह समाज को अपने अन्तर्गत नही ला सकता, और उसमें रक्त भरी क्रान्तियों का संचार होता रहता है। यह मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कई कालों में वर्णन कराया।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद दोनों परसपर बड़े विचित्र कहलाए गएं हैं मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को रावण के काल की वार्त्तायें प्रगट की और भी नाना प्रकार की चर्चायें की और नाना प्रकार की चर्चायें प्रगट की हैं। आज मैं यह कहता रहता हूँ, कि हे राजन! तेरे अज्ञानी होने से धर्म और मानवीय दर्शन का ह्रस होता है, यदि राजा ब्रह्मज्ञानी हो उपनिषदों एवं वेदों को जानने वाला ज्ञान की प्रतिभा में हो तो राज्य से दर्शन का हनन नही हो सकता। मानवीय दर्शन का हनन उस काल में होता है, जब राजा दुष्वृत्तियों में रत्त हो जाता है, और वह अपने पद की लोलुपता में प्रिय एवं अप्रियों को दृष्टिपात नही करता, जन समूह के प्रति उसकी आस्था नही होती तो वह रसातल को चला जाता है जो संसार मैं दृष्टिपात कर रहा हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करा रहा हूँ।

राजा जनक के काल में अकाल

मुझे राजा जनक का काल स्मरण आता रहता है राजा जनक के काल में एक समय जब अकाल आ गय तो सब प्रजा राजा के समीप पंहुची और कहा कि-प्रभु! यह अकाल पड़ गया है इस अकाल का कोई निवारण किया जाएं तो राजा और प्रजा ने मिल करके अश्वमेध याग किया। अश्वमेध याग, मानो वृष्टि याग भी उसी में किया यागों की प्रतिष्ठा महान रही है परन्तु देखो, जब यह याग हुए तो महाराज जनक गौ के बछड़े को ले करके पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ा और उसी समय वृष्टि आरम्भ हुई। अभिप्रायः यह है कि जिस काल में राजा अपने जीवन को क्रियात्मक बनाता है तो वह राजा किसी काल में वैभव किसी के श्रृगार को, किसी के द्रव्य को अपने में ग्रहा नही कर पाता तो वह सदैव विश्वसनीय है प्रभु का विश्वासी ब्रह्म ज्ञानी जब अपने में महान बन करके, अपने में जीवन को बनाता है तो उस राजा की प्रजा भी महान बना करती है।

स्वार्थपरता से राष्ट्र हनन

मुझे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में वर्णन करते हुए कहा कि जहाँ राजा और प्रजा दोनों में स्वार्थपरता आ जाती है तो न तो वह राष्ट्र रहता है न वह समाज रहता है जिस राजा के राज्य में मेरी पुत्रियां का शृंगार हनन होता है जिस राष्ट्र में द्रव्य की लोलुपता के कारण राष्ट्र कलंकित होता हो, ऐसा राष्ट्र रसातल को चला जाता है। मैंने बहुत पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराते हुए कहा था वास्तव में प्रायः ऐसा नही होना चाहिए क्योंकि राजा धर्म को नही जानता तो समाज धर्म उसे कहते हैं जो धारण किया जाता है धर्म उसे कहते हैं जो प्रत्येक इन्द्रियों में समाहित रहता है क्या राजा यह कह सकता है कि आधुनिक काल में कहीं पर कुदृष्टिपात किया जाता है तो वह धर्म नहीं है वह तो अधर्म है और जब धर्म नही तो उसे कैसे पान किया जाएगा। वह कुदृष्टिपात करता है तो उसका अन्तरात्मा दुखित होता है अरे भोले मानव! ओ भोले राजन! यही तो धर्म है जैसे काष्ठ में से यदि अग्नि चली जाती है तो काष्ठ रूप चला जाता है तो केवल एक मेठिया का रूप रहता है इसी प्रकार राजा के राष्ट्र में यदि धर्म और मानवता नही रहेगी, दर्शन नही रहेगा तो चेतना राष्ट्र के गर्भ से चली जाएगी, इसके हृदय में चेतना चली जाएगी तो वह शव के रूप में बनता चला जाएगा।

पूज्यपाद गुरुदेव मैं इन वाक्यों को इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ कि द्रव्य व पद की लोलुपता में वह धर्म को निरपेक्ष कहता है अरे् धर्म कोई निरपेक्ष नही कहता, राजा जो रूढ़ियों को नष्ट करना चाहिए। मैंने कई कालों में यह कहा था कि हे राजन! यदि राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राज्य में ईश्वर और धर्म के नामों पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नही रहनी चाहिए। यदि मेरी पुत्रियों के शृगारों का हनन होता है और यह जो रूढ़ियाँ है इनमें दर्शन और मानवीयता का ह्रस होता है तो राष्ट्र रसातल को जा रहा है परन्तु राजा अपने को निरपेक्ष क्यों कहता है क्योंकि उसके गर्भ में स्वार्थ है यदि स्वार्थ नही होता तो निरपेक्ष नही कहता। निरपेक्षता का अर्थ व अभिप्राय यह नही हैं निरपेक्षता का अभिप्राय यह है कि धर्म की रक्षा की जाएं। रूढ़ियों की रक्षा नही। जो विशेष रूढ़ि है जो अति रूढ़ियाँ है उसका विनाश किया जाएं।

मैंने बहुत पुरातन काल में एक समय उच्चारण करते हुए कहा था कि त्रेता के काल में महाराज सुनीति नाम के राजा के यहाँ एक नृत्त हुआ था और अज्ञान आ गया था सुनीति ने बुद्धिमानों को एकत्र किया और वरतेन्तु ऋषि महाराज की अध्यक्षता में एक सभा हुई थी पूज्यपाद गुरुदेव जब उस सभा में पंहुचे तो हमें यह निर्णय हुआ, कि राष्ट्र को कैसे ऊँचा बनाया जाएं? राष्ट्र रूढ़ि हो गई है। ईश्वर के नामों पर धर्म की परम्परायें नष्ट हो रही हैं, अब राजा को क्या करना है? जब राजा ने ऋषियों से प्रार्थना की कि महाराज! यह राष्ट्र कैसे ऊँचा बनेगा तो उस समय जो विद्वान थे विवेकी थे, उन्होंने कहा कि राजन् तुम एक धर्म की सभा का निर्माण करो और वह धर्म सभा होती है जब भिन्न-भिन्न प्रकार के रूढ़िवाद, जिसको तुम नाना धर्म कहते हो, उसका चलन होता है, क्योंकि धर्म तो एक वचन है, वह बहुवचन नही है, वह इसीलिए एक वचन है, कि धर्म केवल उच्चारण न किया जाएं, धर्म को इन्द्रियों में धारण किया जाता है परन्तु रूढ़ियों में धर्म नही होता, उसमें स्वार्थपरता होती है, उसमें विवेक रहित अपनी विवेचनाएं हुआ करती हैं।

सुनीति राजा ने सभा में विद्यमान हो करके नाना प्रकार के रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करके यह प्रश्न किया कि धर्म क्या है, राजा का यह प्रश्न नाना धर्म एक सूत्र में सूत्रित हो जाएं जो वह ऋषि धर्म की विवेचना करने लगे। धर्म कहते हैं, जो आत्मा के अनूकुल होता है, और आत्मा जिन क्रियाकलापों से प्रसन्न होता है, वह धर्म है, यह वाक्य राजा ने स्वीकार कर लिया, परन्तु जब नाना प्रकार के रूढ़िवाद की चर्चा आयी, तो मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता है कि रूढ़ियों के ऊपर आचार्यों का शास्त्रार्थ हुआ तो सभा दर्शन, विज्ञान और मानवीयता में

निहित हो गई। राजा ने कहा तुम सभी यह स्वीकार करना बहुत अनिवार्य है कि धर्म एक वचन है जब राजा ने यह वाक्य वर्णन किया तो सब प्रजा सब रूढ़िवाद मौन हो गये, और उसे सबने स्वीकार किया उस जैसे राजा की आवश्यकता आधुनिक जगत में हैं, जितने रूढ़िवाद है, जितने नाना प्रकार के सम्प्रदाय हैं, ईश्वरवाद को दूरी करके केवल अपने ईश्वर को उच्चारण कर रहे हैं, मेरी तो यह इच्छा रहती है कि उन्हें समाप्त करने के लिऐ राज सभाएं होनी चाहिएं, और राज सभा में यह निर्णय होना चाहिए कि क्या धर्म को अपनाया जाएं, धर्म को एक सूत्र में लाया जाएं। धर्म क्या है? जो मानव की इन्द्रियों जो मानव की इन्द्रियों में समहित रहता है, जो मानव त्वचा में समाहित रहता है, इसी प्रकार श्रोत्रों में जो समाहित है, उसे जैसा है, वैसा स्वाकार कर उसके अनुसार धारयामि बनायें तो राष्ट्र में मानवीय दर्शन होने से मानव जागरूक हो जाता है, और राजा के राष्ट्र में जो नाना प्रकार की रूढ़ियाँ है वह नष्ट हो जाती हैं रूढ़ियों के नष्ट होने से मानव अपने जीवन को ऊर्ध्वा में प्रकाश में ला सकता है।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कर रहा हूँ कि हे प्रभु! यह बड़ा विचित्र काल चल रहा है, राजा यह सभा तक कर सकता है, जब राजा का आहार और व्यवहार पवित्र बन जाएं। आहारों और व्यवहारों की विवेचना करते हुए ऋषि-मुनियों ने बड़ी एक विचित्र एक विवेचना की है कि आहार वह होना चाहिए। जो स्थिर रहने वाला हो, आहार वह होना चाहिए जिससे मानवीयता की रक्षा हो जाएं। राजा के राष्ट्र में जब इस प्रकार का विचार इस प्रकार का औषध, इस प्रकार का अन्न उत्पन्न हो जाता है, तो राष्ट्र में विवेकी पुरूष होते हैं, राजा भी विवेकी बन जाता है। न्यायालय में न्यायधीश भी न्याय विवेक के द्वारा न्याय करता है। इस प्रकार की विचारधारा प्रायः हमें वैदिक साहित्य में प्राप्त होती है।

मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को इन वाक्यों का निर्णय देता हुआ, दूरी नही जाना चाहता हूँ, विचार केवल यह है कि पूज्यपाद गुरुदेव ने याग के सम्बन्ध में, राष्ट्र के सम्बन्ध में माताओं की प्रशंसा कीर है यह समाज इतना घृणित बन गया है कि जो जिस माता के गर्भ से जन्म लेता है उन्हीं माताओं के श्रृंगारों को हनन करने वाला बन गया है मैं कहता हूँ कि यह जो काल है वह राष्ट्र की दूरिता है। राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो राजा नाना प्रकार के रूढ़िवाद को नष्ट करता रहे, स्वयं बुद्धिमान हो, स्वयं प्रजावादी हो जो धर्म के मर्म को स्वतः जानने वाला हो, उससे राष्ट्र ऊँचा बनता है आज का मानव प्रायः धर्म के मर्म को स्वतः जानने वाला हो उससे राष्ट्र ऊँचा बनता है तो राजा नाना प्रकार रूढ़िवाद को नष्ट करता रहे, स्वयं बुद्धिमान, स्वयं प्रजावादी हो जो धर्म के मर्म को स्वतः जानने वाला हो उससे राष्ट्र ऊँचा बनता है, आज का मानव प्रायः धर्म-धर्म पुकार रहा है जब पूर्व काल में स्मरण आता है जो भगवान राम का काल था तो उस समय वे सभा में भी यही कहते रहते थे, कि माताओं का पूजन होना चाहिए, माता पूज्या कहलाती है जब वेद के वांगमय में वह शब्द आते हैं तो प्रायः मातायें स्वीकार करती कि हम पूज्या हैं और हमें स्वतः परमात्मा से अधिकार प्राप्त हुआ है जब इस प्रकार के विचार आरम्भ होता तो प्रत्येक गृह में याग हो रहा है प्रत्येक गृह में विचारों की सुगन्धि आ रही हैं। प्रत्येक मानव आभा में रह रहने वाला अपने में दृढ़ संकल्प करके संकल्पवादी बन रहा हैं। जिससे मानवीयता का ह्रस न हो विचार यह चल रहा है, कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानव जब प्रोरक्षण करता है तो अन्तरात्मा में प्रसन्न होता है तो हृदय हृदयग्राही बन जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे इतना समय प्रदान किया, अपने में जब मैं मौन होना चाहता हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बड़े भव्य विचार दिए जो समायिक जीवन में भौतिवाद को ऊँचा बनाता है और राष्ट्र के लिए पवित्र विचार हैं, प्रत्येक मानव सूक्ष्म राष्ट्र में और व्यापक राष्ट्र में अपने को धारयामि बना लेता है, तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है, आज का विचार क्या

कह रहा है कि हम अपने में प्रभु का दर्शन करते चले जाएं। प्रभु की प्रतिभा में रत्त होते चले जाएं, जिससे मानव जीवन अपने में महान बन करके इस संसार सागर से पार हो जाएं, आज इन्होंने अपने राष्ट्रीय विचार दिए हैं। राजा प्रायः ब्रह्म ज्ञानी होता है, मुझे कई राष्ट्रों में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है, और उन राष्ट्रों में मैं सदैव यह उच्चारण करने के लिए तत्पर रहता हूँ, कि विचारों में मधुरता, विचारों में ज्ञान हो और अज्ञान की प्रतिभा का जन्म न हो जाए। जिससे हे प्रभु! हम तेरे मार्ग से दूरी न हो जाएं। आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए वेद की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं। मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे प्रेरणा दे रहे हैं कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और महानता में रहे। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

९ सुविधा न होने पर याग कैसे करें २१ ०५ १९९१

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है और याग उसका आयतन है उसका गृह है उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें हैं और प्रत्येक मानव अपने में ही परमात्मा को धारयामि बनाना चाहता है उसके मन में एक ही इच्छा रहती है कि मैं निर्माणवेत्ता के समीप पंहुचू। क्योंकि उस परमपिता परमात्मा ने हमारे मानव जीवन का निर्माण किया है, वह निर्माणवेत्ता है, इसीलिए निर्माणवेत्ता के लिए मानव परम्परागतों से ही, अपने में उसका आह्वान करता रहा है। मननशील रहा है और प्रायः यह जब तक सृष्टि का वृत रहेगा तब तक मानव उसके ऊपर अन्वेषण करता रहेगा और करता रहा है।

आओ, मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र अभ्यम भविताम् नम ब्रह्वे यथा मुझे कहीं से यह प्रेरणा आ रही है कि याग के ऊपर कुछ विचार-विनिमय होना चाहिए। हमारे यहाँ याग के ऊपर परम्परागतों से ही, मानव अपने में विचार-विनिमय करता रहा है और यह संसार रूपी जो इस प्रकार की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में विराजमान हो करके मानव याग कर रहा है वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, ओर वह अपने में ही इस ब्रह्माण्ड को अपने में यज्ञशाला बना करे उसमें हूत कर रहा है। उसी में याग हो रहा ह इसीलिए प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, हमारा वेदमन्त्र अपने में उद्गीत गा रहा है अपने में ओजस्वी बन रहा है। इसीलिए हमे सदैव परमपिता परमात्मा की महती में रत्त रहें, और उसी के गुणगान गाना हमारा कर्तव्य है। क्योंकि यह परमात्मा का अनूठा जगत है। प्रत्येक पदार्थ मानो, एक दूसरे का साकल्य बना हुआ है एक दूसरे में ओत प्रोत होने वाला यह जगत है।

बेटा! मैं कई कालों में तुम्हें याग की चर्चा करता रहता हूँ और याग अपने में मानो अपनी आभा में सदैव रत्त रहा है। विचारवेत्ता कहते हैं कि हे मानव! तू याज्ञिक बन ओर परमात्मा के दिव्य याग को तू विचारने के लिए तत्पर हो। जब परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि का सृजन किया तो इस संसार रूपी यज्ञशाला का निर्माण किया जिस यज्ञशाला में आत्मा यज्ञमान है ओर परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है। इनमें कोई होता हुआ बना हुआ है, और कोई अध्वर्यु है, कोई पुरोहित, कोई उद्गाता बन करे वह याग हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, यह संसार रूपी यज्ञशाला का एक नृत्त हो रहा है, और वह मानो अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात कर रहा है। मानव जब इस प्रकार के यागों में परिणत होता है। इस याग को विचारता हे अपने मानवीय जीवन को विचारता है। तो वह देवतव को प्राप्त हो जाता है। अथवा देवतापन उसके अन्तर्हृदय से अन्तर्मानम् ब्रह्मा वह झरने लगता है। इस सन्दर्भ में मैं जाना नही चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को विचारने वाले बनें। मेरे प्यारे! यज्ञशाला का जो अध्वर्यु है, उद्गाता है, जो उद्गीत गा रहा है वह वायु बन करके उद्गीत गा रहा है। वही तो प्राणों का सखा है वही तो व्यान का सखा है, वही तालू का सखा माना गया है, जब मानव वेदमन्त्रों का उच्चारण करता है तो वह तालू से, वाणी से, प्राण से गान गाता रहता है। क्योंकि उसका वायु से समन्वय रहता है। देखो, अग्नि तत्त्व उसमें प्रधानता की आभा में रहता है। विचारने से यह प्रतीत होता है कि वह जो याग हो रहा है वेद का उद्गीत गाने वाला याज्ञिक बना हुआ है, अध्वर्यु जो द्रव्यों का कुबेर कहलाता है। स्वामित्व कहलाता है। वह यागों में यज्ञम् भू वर्णम, मानो याग में याज्ञिक बना हुआ है, सुगन्धि आ रही है, परमात्मा इसको संचालन कर रहा है,

इसलिए हम परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड रूपी याग के ऊपर विचार विनिमय करते रहे हैं।

बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में प्रगट किया, मुझे पुनः से वह वार्त्ता याग के ऊपर स्मरण आती रहती है, मैं उसकी पुनरूक्ति करता रहता हूँ और वह पुनरूक्ति क्या है, आओ, मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। जहाँ याग के ऊपर ऋषि ने अपने उदगार दिए हैं और वह नेतृक बन करके उदगारों की वृष्टियों की झड़ी लग जाती है। मेरे प्यारे! मैंने तुम्हें कई कालों में चर्चाएं की, आज भी मुझे स्मरण आ रही हैं क्योंकि ज्ञान सदैव नवीन बना रहता है, उसमें वृद्धपन नही आता है। ज्ञान अपनी आभा में सदैव नवीनता को प्राप्त होता रहा है आओ, बेटा! मैं आज तुम्हें पुनः याज्ञवल्क्य मुनि महाराज प्रातःकालीन ब्रह्मचारियों को नैतिक शिक्षा देते रहते। उनके हृदय में भावुकता की ज्योति जागृत हो जाती, ब्रह्मचारी प्रातःकालीन आचार्य के समीप याग में परिणत होते। प्रातःकालीन जब विद्यालय में याग हुआ तो याग के पश्चात ऋषि नैतिक शिक्षा देने लगे और वे याग के ऊपर अपने उदगार देते रहते। बेटा! याग अपने में कितना विशिष्टतम् है, याग कितना महत्वदायक है, वह याग के ऊपर विचार विनिमय देते रहे।

याज्ञवल्क्य मुनि महाराज कहते हैं कि हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें याज्ञिक बनना है, और तुम्हें अपने में आध्यात्मिक और भौतिक, दोनों याग को करते हुए परमात्मा के मिलन की पगडण्डी में प्रवेश होना है। इस प्रकार जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने वर्णन किया तो उन ब्रह्मचारियों की सभा में एक यज्ञदत नाम के ब्रह्मचारी उपस्थित हुए। यज्ञदत ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! मैं कुछ जानना चाहता हूँ, उन्होंने कहा जानो, तुम क्या जानना चाहते हो? उन्होंने कहा-प्रभु! हम याग करना चाहते हैं प्रभु हम याग कैसे करें? मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा यदि तुम याग करना है तो याग में साकल्य होना चाहिए, याग में चरु होना चाहिए। याग में यज्ञशाला भव्यता को प्राप्त हो जाएं। वह चतुष्ठ और नवम् कौनों वाली होनी चाहिए। उसमें खम्बे शुद्ध पवित्र वृत्तियों मं रत्त होने वाले हों और यज्ञमान ऊर्ध्वा मुख हो उद्गाता वृत्तियों में रत्त हो और द्रव्यों का कुबेर उसका अध्वर्यु हो इस प्रकार यज्ञमान उसका मुख कहलाता है जैसे यज्ञशाला में अग्नि ही यज्ञ का मुख माना गया है। उसके मुखारबिन्दु में ही साकल्य प्रदान किया जाता है। वह कहता है कि प्राणाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः, कह करके मैं हूत कर रहा हूँ। व्यान को कह करके वह प्राणी मात्र को अपने में अपना सखा बनाना चाहता है देखो, प्राण को वह जानना चाहता है, अपान की प्रतिक्रिया में रत्त रहना चाहता है उन्होंने कहा कि इस प्रकार का साकल्य अग्निहोत्र, मानो अग्नि को प्रचण्ड करके वह अग्नि में हूत करना चाहता है जिससे वह याग विष्णु बन सके और वह याग प्रदूषण प्रवृत्ति को समाप्त कर सके, वह मानवीय हृदयों में एक महानता की ज्योति को जगाता रहे। साकल्य, समिधा उसमें सर्वत्र द्रव्य होने चाहिएं। द्रव्य उसमें मधुपन, रोगनाशक, और कृतिवृधा अमृताम् भूः वर्णम मेरे पुत्रों! देखो, सुगन्धित है, पुष्टिकारक है, और वही चरु अन्तरिक्ष में अमृतियों को प्राप्त करने वाला है। साकल्य मधुपन, रोगनाशकता, सुगन्धि इस प्रकार की तीन भावकृतियों को ले कर चतुर्थ अपने में आत्मतत्व की भावना होनी चाहिए। इस प्रकार का याग महान कहलाता है, यज्ञशाला में अग्नि प्रचण्ड करके उसको प्राणाय, अपानाय, व्यानाय, उदानाय, समानाय, कह करके हूत करना है।

मेरे प्यारे देखो, यज्ञदत ने जब यह वाक्य श्रवण किया तो उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं यह जानना चाहता हूँ कि यदि हमें यह भी कहीं सुविधा प्राप्त न हो तो हम याग कैसे करे? उन्होंने कहा कि तुम एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके मंगलम ब्रहे, समिधा को ले करके अग्नि को प्रचण्ड करो। अग्नि को प्रचण्ड करके समिधा के द्वारा याग करो। और कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः, और उदानाय स्वाहाः कह करके तुम चित्त मण्डल में प्रवेश हो जाओ। मेरे प्यारे! इस प्रकार तुम अग्नि को देवताओं का मुख स्वीकार करो। इस मुखारबिन्दु में जो भी तुम पदार्थ दोगे उसका व्यापक रून बनता है। वह प्रदूषण को समाप्त करने वाला है। जब अग्नि में तीन-तीन

समिधा से हूत किया ओर वेदमन्त्रों का उद्गीत गाया जा रहा है, तो गाने मात्र से ही, वह अग्नि में समिधा के द्वारा यह आत्मा का ईंधन क्या है,? मानो समिधा है, अग्नि है, वही तो आत्मतत्व को ऊँचा बनाता है। बेटा! देखो,! वह आत्मा का भोजन इदन्न मम् कह करके यज्ञमान उसमें हूत कर रहा है। ओर उसे आत्मा का भोज्य स्वीकार किया जाता है ऋषि ने कहा कि हे ब्रह्मचारी! यज्ञदत! तुम्हें याग करना है तो तुम अग्नि को अपने देवताओं का मुख बना करके उस अग्नि में हूत करो क्योंकि वही उसको व्यापक बना देती है। सब देवता उससे प्रसन्न होते हैं क्योंकि अग्नि मे विभाजन की प्रतिक्रिया है वह प्रत्येक वस्तु को विभक्त कर रहा है।

मेरे पुत्रों! जब ऋषि ने ऐसा कहा तो यज्ञदत ब्रह्मचारी बोले कि-प्रभु! कहीं ऐसा है कि अग्नि भी न हो तो समिधा भी न हो तो हम याग कैसें करें? उन्होंने कहा कि तुम्हें यह भी कहीं प्राप्त न हो तो तुम जल को अंजलि में लों, और कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहाः उदानाय स्वाहाः कह करके हूत करना प्रारम्भ करो। तुम मन्त्रों का उद्गीत गाते रहो प्रत्येक आहुति के द्वारा जल का प्रदेता, क्योंकि जल अमृत है, देखो, जब हम माता के गर्भ स्थल में होते हैं तो जल ही इसका पासा बना हुआ है, ओर जल ही ओढ़न बना हुआ है। इसका बिछौना है जल की अमृतियों में रत्त रहने वाला, उसी में गमन कर रहा है हम जैसे शिशु उस जल की ही आभा में मानो यह जल ही हमारा अमृत है। विचार आता है कि माता के गर्भस्थल में जब शिशु का प्रवेश हुआ तो सर्वत्र देवता रक्षा के लिए तत्पर हो जाते हैं। वह देवतव कहलाता है। देवताजन उसी में देवतव को प्राप्त हो करके जल अंजलि में ले करके हूत करते हैं, जल ही हमारा अमृत है। चन्द्रमा समुद्रों से जल को ले करके अमृत बनाता है ओर उसी से यह संसार अपनी आभा में शीतलता को प्राप्त होता है, एक मानव जल का पिपासी बना हुआ है, मानो जल नही प्राप्त हो रहा है उसके प्राण जाने लगे हैं। तो उसे कहीं जल प्राप्त हो जाता है तो वह उसे अमृत जान करके प्राप्त करता है उसके प्राणों को रक्षा हो जाती है वह प्राणवर्धक कहलाता है। इसीलिए हमें आपो में ही रत्त रहना चाहिए। अरे, आपो ही तो हमारी ज्योति है। जल ही हमारा जीवन है देखो, कृषक यदि उसे जल नही प्राप्त हुआ है तो उसकी कृषि शून्य को जाएगी। यदि जल उसे प्राप्त हो जाता है तो वह अपने में हरित बन जाती है, अपने में अन्नाद को देने वाली बन जाती है।

जब ऋषि ने इस प्रकार का वर्णन किया तो ब्रह्मचारी यज्ञदत बोले कि-प्रभु! कहीं ऐसा हो कि जल भी हमें प्राप्त न हो और याग का समय हो गया तो हम याग कैसें करें? उन्होंने कहा कि यदि तुम्हें जल प्राप्त नही हुआ है तो तुम पृथ्वी के रज को लो और कहो प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहाः, समानाय स्वाहाः कह करके तुम हूत करना प्रारम्भ करो। वेदमन्त्रों का उद्गीत आते रहो। ओर इस प्रकार तुम याज्ञिक बनो, क्योंकि यह जो पृथ्वी की रज है, यही तो पिण्ड बनाती है। विचारों की गुरूतव इसमें विद्यमान है, रज में ही गुरूतव है। जब जल होता है, अग्नि भी होती है, यदि पार्थिव तत्त्व नही है तो पिण्ड नहीं बनेगा। पिण्ड तब बनता है जब पार्थिव तत्त्व होता है। जल में रज के रूप में रहता है, और अग्नि में तेजोमयी रूप में रहता है। वह पिण्ड जब बनता है। जब गुरूतव उसमें मिश्रित हो जाता है। इसी प्रकार जितना भी लोक-लोकान्तरवाद है, जो भी ब्रह्माण्ड में तुम्हें दृष्टिपात आ रहा है। उसमें गुरूतव अवश्य रहता है। यह पृथ्वी का गुण है। वह रज्ञतम ब्रह्वा कृतं वे रज्तव ब्रह्वेवागाह कृतपते, ऐसा वेद का मन्त्र कहता है कि गुरूतव ही संसार में पिण्ड का मूलक है। सूर्य का पिण्ड तुम्हें दृष्टिपात आ रहे हैं, चाहे वे लोक-लोकान्तरों के रूप में हो, चाहे वह प्राणी मात्र के रूप में हो, चाहे वह मानव समाज के रूप में हो, परन्तु देखो, जितने भी पिण्ड आकार बने हुए हैं, वे सर्वत्र गुरूतव परमाणु को ले करके ही यह पिण्डों के आकार बना करते हैं। पिण्डम् आकरहे व्रतम् देखो, जल मिश्रित होता है, अग्नि मिश्रित होती है और वह गुरूतव जब तक नही होता, तो उनके मिश्रित होने से कुछ नही बन पाता। इसीलिए यह गुरूतव, यह पृथ्वी

का जो रज है। इसके द्वारा तुम प्रारम्भ करो कि प्राणाय स्वाहाः, अपानाय स्वाहाः, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, ओर वृत्ति स्वाहाः कह करके बेटा! उसमें हूत करना प्रारम्भ करो। यह हूत करना ही तुम्हारा कर्तव्य है क्योंकि इससे वायुमण्डल, तुम्हारे मन की भावनायें पवित्र होती है। देखो, ऋषि कहता है कि तुम याज्ञिक बनो, पृथ्वी के रज को ले करके उद्गीत गाओ। यह पिण्डों का निर्माण करने वाली है इसमें अन्नाद की उत्पति होती है। इसी से नाना प्रकार के खनिजों का जन्म होता है और उन्हीं खाद्य ओर खनिज पदार्थों से ओजस्व बनता है, ओर तेजों में रमण करने लगता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब यह कहा तो उपस्थित ब्रह्मचिरयों ने कहा कि-प्रभु! कहीं ऐसा भी हो कि हमें कहीं पृथ्वी के रज भी न प्राप्त हो तो हम कैसे याग करें? उन्होंने कहा कि यदि कहीं तुम्हें पृथ्वी के रज भी प्राप्त न हो तो शान्त मुद्रा में विद्यमान हो जाओ और प्रथम कहो कि प्राणाय स्वाहाः, कह करके हूत का प्रारम्भ करो तुम वेदमन्त्रों का उद्गीत गाते रहो। मन, कर्म, वचन तुम्हारा एकाग्र होना चाहिए। जब मन, कर्म, वचन एकाग्र होता है। तो तुम कहोगे प्राणाय स्वाहाः हे प्राण! तू आवागमन है। तू व्यानाय स्वाहा ऊर्ध्वा में गति कराने वाला है, और जब यह कहता है। व्यानाय तू निरीक्षण वादी है, सामनाय स्वाहा तू सर्वत्र विद्यमान है मानो देखो, व्यानाय स्वाहा सर्वत्र चित्त के मण्डल तू स्वामी नेतृतव करने वाला है। जब इस प्रकार प्राण ही भोगत्व है ओर प्राण ही भोगता बना हुआ है। यह भोगम् ब्रह्माः वर्णम् वह संसार को निगल जाता है। प्राण के माध्यम से ही संसार अपने में गतिवान हो रहा है। इसीलिए तुम प्राणाय स्वाहाः, उदानाय स्वाहा, वाणी से उच्चारण करते हुए, मन वचन एकाग्र हो करके उससे यह वायुमण्डल पवित्र बन जाता है। उससे गृह पवित्र बन जाते हैं गृहों में महानता का जन्म हो जाता है। पति-पत्नी अपने प्रभु का गुणागान गाने लगते हैं। बाल्य उसी से महान बन जाते हैं वह अग्नि का स्रोत माना गया है।

विचार आता है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि हे यज्ञम्! हे ब्रह्मचारी! तुम याज्ञिक बनो, याग करते रहो, वाणी से करो, मन से करो, जितना भी यह प्रभु का जगत है। यह सर्वत्र याग हो रहा है। ओर यह यज्ञशाला है। जैसे माता अपने शिशु को शिक्षा देती रहती है, और गर्भस्थल में वह याग करती है, ओर यज्ञाम् भू वर्णम् ब्रहे, वह आत्मा से आत्मा का मिलान कराने लगती है। इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बन करके परमात्मा की सृष्टि को निहारता रहता है। विचारता रहता है इस प्रकार का बेटा! तुम याग करो। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इसका वर्णन किया, मैं संक्षिप्त परिचय दे रहा हूँ। विस्तार से उद्गीत नही गाना चाहता हूँ। विचार केवल यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को विचारते हुए उसी की आभा में हम सदैव रत्त रहें, उसी को जानते हुए हम इस सागर से पार हो जाएं, विशेष चर्चा नही अब मंगलम् ब्रहे व्रतम् तुम्हें देखो, याज्ञिक होना चाहिए। ब्रह्मचारी अपने में सन्तुष्ट हो गये। ओर उन्होंने कहा, प्रभु आपको धन्य है आप तो वह शिक्षा देते हैं जिससे हमारा हृदय विभोर हो जाता है हमारे हृदय में एक उद्गीत गाया जाता है हे प्रभु! आपको धन्य है।

मेरे प्यारे! देखो, आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि प्रत्येक मानव को अपने में याज्ञिक बनना चाहिए। और याग करना चाहिए। क्योंकि याग ही हमारा जीवन है, परमात्मा का यह ब्रह्माण्ड रूपी याग चल रहा है, और मानव का याग आत्मा को जानने के लिए, आत्म तत्त्व के अंग संग रहने वाले इसमें होता गण है। वे व्रतिगण है, उनके द्वारा जो हूत किया जा रहा है। उससे मानव का अन्तरात्मा पवित्र होता है। देवता प्रसन्न होते हैं। उसी से संसार की उत्पति, संसार की प्रतिभा कहीं मानी जाती हैं आज का विचार मैं विशेष नही दूंगा केवल यह कि मानव को याज्ञिक बनना चाहिए बेटा! देखो,! यज्ञम् ब्रहा अपने में मन से तुम मन की आभा को जाने कर्म को जानो कर्म की आभा को जानो, वाणी से उद्गीत गाने के लिए तत्पर हो जाओ। जब वेद का उद्गीत गाता है तो मानव का हृदय प्रसन्न हो जाता है अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

आत्मा प्राण और योग

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् देवाम् भद्रा मनुष्यमाहाः वरुणाश्च मम् ब्रह्माः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदे याग के सम्बन्ध में अपने बड़े गम्भीर उदगार दे रहे थे। इनके विचारों में माधुर्यता होती है और याग की एक महा श्रद्धांजलि और याग की श्रद्धा में ओत-प्रोत हो करके अपनी वार्त्ता प्रगट करते हैं। कई समय से मेरे पूज्यपाद गुरुदेव योग के ऊपर अपनी कृतियों का वर्णन कर रहे थे कि योग क्या है? उन्होंने अपना मन्तव्य दिया कि अनुशासन का नाम योग है। अनुशासन को उन्होंने चरम सीमा तक पंहुचाया जहाँ इन्द्रियाँ अपने विषयों को त्याग कर देती हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मानो नाना प्रकार की आभाओं को प्रगट कराया आज मेरी प्रेरणा के आधार पर ये याग के ऊपर अपा विचार दे रहे हैं। क्योंकि जिस स्थली पर हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग का आयोजन हुआ है। याग अपने में यागम् भूः वर्णम् ब्रह्मा देखो, याग एक भूवः है, वह भुवन है भुवन कहलाता है इसी प्रकार मेरे पूज्यपाद गुरुदेव याग के ऊपर याग के विचारों की पुनरूक्तियां भी कर रहे थे। मेरा अन्तरात्मा तो सदैव यज्ञमान के साथ होता है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे जीवन में मंगलमयी क्रियाकलाप होते रहें। ऐसी मेरी कामना रहती है। द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। क्योंकि देव हूत करना ही देवताओं के लिए सबसे उतम, सबसे महान एक क्रियाकलाप है। जिसमें कर्मकाण्ड की पद्धति में जब पूज्यपाद गुरुदेव अपने विचार देते हैं। तो हम विभोर हो जाते हैं। हमारा जो यह वाणी पिपाद बन करे पृथ्वी मण्डल पर जा रहा है। हमारा अन्तरात्मा सदैव प्रसन्न रहता है, और हम सदैव ही यह आभा परमात्मा से प्रगट करते रहते हैं कि अमृतम् यज्ञम ब्रहे, यह यज्ञ अमृत है, अमृत को देने वाला है। द्रव्य का सदुपयोग होने से द्रव्य की बलवती होती है।

मैं आधुनिक काल के राष्ट्र के ऊपर कोई विचार देना नही चाहता हूँ। क्योंकि आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है। वह मुझे बड़ा अशोभनीय दृष्टिपात आता आ रहा है। अग्नि प्रचण्ड हो रही है और अग्नि में एक मानव, मानव का भक्षक बनने के लिए तत्पर हो रहा है विचार-विनिमय क्या कि मैं अपने गुरुदेव को प्रगट करा रहा हूँ कि जब तक राष्ट्र में राजा ब्रह्मवेत्ता नही होता, ब्रह्म का ज्ञानी नही होता और वेदज्ञ नही होता, तो प्रकाश को चाहने वाला हो, तब तक यह समाज और राष्ट्र ऊँचा नही बनता राष्ट्र में जो नाना प्रकार के ईश्वरवाद पर समाज में जो विभाजन की प्रतिक्रिया है। उसे राजा को जानना चाहिए। क्योंकि ईश्वरवाद के ऊपर नाना प्रकार की धारा नही होनी चाहिए। राजा ब्रह्मवेत्ता बन करके सब रूढ़ियों के प्रवर्तकों को एकत्र कराके उनका शास्त्रार्थ हो, उनके विचार-विनिमय करने के माध्यम को राजा अपने में निर्णय देने वाला हो। जो विचार विज्ञान, आध्यात्मिकवाद और मानवता पर स्थिर हो जाएं, उसको स्वीकार करना और उसको ले करके उन्नति करना ही राष्ट्र का कर्तव्य है। जब राजा अपने पद की लोलुपता में प्राणी-प्राणी को नष्ट कर रहा है। तो यह राष्ट्र तो राष्ट्र नही कहलाता, वह अपने में बड़ा अशोभनीय करता हूँ।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब राजा अश्वपति के यहाँ राजा ब्रह्मवेत्ता है, देवी भी ब्रह्मवेत्ता है, और पुरूषार्थी है वह अपने में क्रियाकलाप करके, पुरूषार्थ करके अन्न को उत्पन्न करते थे मुझे अपने पूज्यपाद गुरुदेव के साथ कई समय महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। राजा अश्वपति के यहाँ समय-समय पर कहीं वृष्टि याग कहीं धनुर्याग, कहीं विष्णु याग कही अजामेध याग और गोमेध याग का चलन होता रहा है। देखो, जिस राजा के राष्ट्र में गऊओं की सेवा, दुग्ध देने वाले पशु की सेवा नही होंगे, वह राष्ट्र अधोगति को चला जाएगा। यदि राष्ट्र में राजा स्वयं चिन्तन नही करेगा तो ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ बनी रहेंगी। वे रूढ़ियाँ राष्ट्र को विनाश के मार्ग पर ले जाएगी। इसीलिए मेरा यह मन्तव्य रहा है कि ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ नही नही होनी चाहिए। ये रूढ़ि ही राष्ट्र और समाज के विनाश का एक मूल बन जाती है। इसी

में रक्त भरी क्रान्तियां आ जाती हैं।

बहुत समय हुआ जब मैंने अपने गुरुदेव को वर्णन किया, इन्हें प्रतीत भी है कि राजा रावण के राष्ट्र में ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बन गई थी। जब रूढ़ियाँ बनती हैं तो जो रूढ़ि से रहित होता है वह उसको नष्ट कर ही देता है। एक शैव्य मत चला था शैव्य रूढ़ि बनी। राजा रावण के यहाँ एक राक्षस रूढ़ि ईश्वर के नाम पर बनी। इसी प्रकार नाना प्रकार के मत मतान्तरों की आभा में राजा रावण का राष्ट्र चला गया था उसका परिणाम यह हुआ कि राम ने उन रूढ़ियों को नष्ट किया क्योंकि वह ब्रह्म को जानते थे, ब्रह्मवेत्ता थे, इसीलिए उन्होंने रूढ़ियों को नष्ट किया और वहाँ वेदज्ञ प्रकाश को लाने का प्रयास किया इस प्रकार देखो, कोई समय आयेगा जब ये रूढ़ियाँ ईश्वर के नाम पर नष्ट होंगी और महानता का जन्म होगा। मां अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह उच्चारण कराने आया हूँ कि राजा ब्रह्मवेत्ता बन करके समाज को नेतृत्व करने वाला हो। यह निर्वाचन प्रणाली जो वर्तमान में चल रही है, यह तो मूर्खों की प्रणाली कही जाती है। यह पामरों की प्रणाली मानी गई है। क्योंकि जहाँ एक महान वेद के मर्म को जानने वाला एक वेदज्ञ हो और एक पामर मूर्ख समाज का व्यक्ति हो उन दोनों का एक ही मत माना जाएं तो उस राष्ट्र को क्या कहोगे कि मूर्खों का निर्वाचन किया हुआ राष्ट्र ही निर्वाचित मूर्ख बन जाता है, और वह मूर्खों की प्रणाली बन करके उसमें रक्त भरी क्रान्तियां आ जाती हैं। क्योंकि कर्तव्यवाद न रह करके उसमें केवल अधिकार की पुकार होने लगती है और जब तक प्रत्येक प्राणी अपने अधिकार को चाहने लगता है तो सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक कोई भी मानव देखो, अधिकार की पूर्ति नही कर सका। परन्तु जब कर्तव्यवाद का पालन होता है तो उसे अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाता है। उसकी पुकार नही की जाती वह स्वतः प्राप्त हो जाता है। परन्तु जब राजा समाज में अधिकार देता रहता है। अन्त में चरम सीमा पर जा करके रक्त भरी क्रान्ति का संचार हो जाता है। मैं यह वर्तमान में दृष्टिपात कर रहा हूँ, मेरा वर्तमान में यह अनुभव हो रह है कि यह जो निर्वाचन प्रणाली है यह अशुद्ध है। यह मूर्खों का निर्वाचन करती है और मूर्ख समाज मूर्ख राजा बन करके राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति के अवशेष उत्पन्न हो जाते हैं।

विचार आता रहता है कि बुद्धिमानों को विवेकी पुरूषों को राजा का निर्वाचन करना चाहिए। ज्ञानियों को योगियों को, ब्रह्मवेत्ताओं को निर्वाचन करना चाहिए। मुझे कई समय पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा राज्यों में जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैं यह उच्चारण कर सकता हूँ कि यह जो प्रणाली है यह कोई विचित्र नही हैं। मैं इस प्रणाली को पामर प्रणाली कहता रहता हूँ। यह जो ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियाँ पनप रही हैं। ये रक्तभरी क्रान्ति का अवाशेष बन जाती हैं। मेरे हृदय में दाह बनी हुई है कि राजा पुरूषार्थी हो, ब्रह्मवेत्ता हो, अपने कर्तव्यवाद में रमण करने वाला हो ऐसा राजा राष्ट्र को उन्नत बना सकता है। जहाँ अपने पद की लोलुपता में प्राणियों को नष्ट कराने वाले राष्ट्रवेत्ता हों ऐसे राष्ट्र को देखो, अग्नि में भस्म कर देना चाहिए। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा करता हूँ कि हे भगवन! पद की लोलुपता में जो मानव से प्रीति नही कर रहा है। ऐसा राष्ट्र आज नही तो कल अवश्य अग्नि के मुख में चले जाएगा। हे प्रभु! मेरा यह व्यक्तव्य रहा है कि जिस भूमि पर हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग हुआ है और मैं याग के ऊपर बड़ा प्रसन्न युक्त हूँ। हे यज्ञमान! तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। ओर तेरे गृह में महानता बनी रहे। इसी के साथ मैं उदगार देता हुआ कि तुम्हारा जीवन चंचलता से रहित हो करके द्रव्य की आभा में परमपिता परमात्मा की महिमा को जानने वाले बनो। आज का वाक्। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपना उदगार किया। इन उदगारों में बड़ी कटुता हमें दृष्टिपात आ रही थी। प्रायः यह कटुता नही होनी चाहिए। मानव समाज में यह प्रिय है कि

रूढ़िवाद नही होना चाहिए। ब्रह्मज्ञानियों का समूह है, तो उनमें रूढ़ि नही बना करती और राष्ट्र का निर्वाचन करते हैं। तो राष्ट्र पवित्र होता रहता है। आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने उदगार दिए, इनके हृदय में राष्ट्र के प्रति और कर्तव्यवाद के ऊपर बड़ी वेदना रहती है। मानव अधिकार को पुकारता रहता है वह दिया नही जाता वह स्वतः प्राप्त हो जाता है। जब वह कर्तव्य का पालन करता है कर्तव्यवादी जो प्राणी होते हैं वे अधिकार को नही स्वीकार करते, वे अपना कर्तव्य करते रहते हैं। उसी कर्त्तव्य के आधार पर मानव के जीवन की प्रतिभा का अवृत जन्म होता रहता है। आज के विचारों का अभिप्रायः यह कि हम याज्ञिक बनें हम कर्म वचन से अपनी आभा से युक्त हो करके अपनी आभा से युक्त हो करके अपने क्रियाकलापों को करते रहें। जिससे परमात्मा के राष्ट्र में पवित्रता आती रहे और मानव का जीवन प्रसन्न रहे। आज का यह विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है समय मिलेगा तो शेष चर्चायें कल प्रगट करेंगें अब वेदों का पठन-पाठन होगा।